आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 मई, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 मई, 2022

वर्ष : 80 अंक : 05
वैशाख, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

मई, 2022

Website : www.jinwani.in

सभी जीवों को अपने समान समझकर उनकी हिंसा से बचें।
हिंसा का प्रतिफल कर्मबन्ध के साथ पर्यावरण एवं जीवजगत् का विनाश भी है।

श्री महावीराय नमः
श्री कुशलसत्वगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

||जय गुरु हीरा|| ||जय गुरु महेन्द्र|| ||जय गुरु मान||

अंक सौजन्य

देवभक्ति, गुरुसेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और दान
ये गृहस्थ के षट्कर्म बताये गये हैं। -आचार्यश्री हस्ती

दुर्लभ था व्यक्तित्व, सबल अनुकरणीय जिनका जीवन
स्वार्थरहित परहित में समर्पण, मानव सेवा जिनका दर्शन
समय-प्रबन्धन की साकार मूर्ति, समता प्रेम के दृढ़ आधार
रत्नों में कोहिनूर समान, संस्कारों के पालन हार

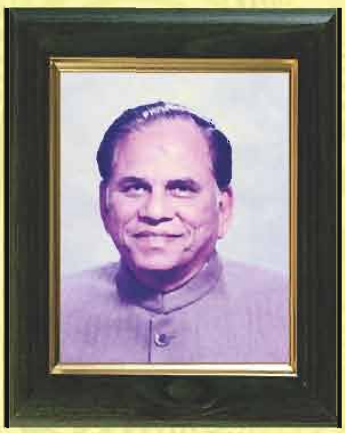

श्रावकरत्न, अनन्य गुरुभक्त, दृढ़धर्मी, श्रेष्ठिवर्य
स्व. श्री ज्ञानचन्दजी कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

श्राविकारत्न, श्रद्धानिष्ठ,
स्व. श्रीमती तेजबाईजी कोठारी

श्रद्धान्वित परिवारजन

सुपुत्र-सुपुत्रवधू	::	विनय-सुमन
सुपौत्र-सुपौत्रवधू	::	विवेक-प्रियंका
दामाद-सुपुत्री	::	श्री सुरेन्द्रजी-मंजूजी सेठ, श्री हरीशजी-सुनीलाजी डागा, श्री हीरासिंहजी-मधुजी बैद
बहनोई-बहिन	::	स्व. श्री सुमेरचन्दजी-सम्मतजी छाजेड़
सुपौत्री-दामाद	::	श्रीमती खुशबू-श्री परितोषजी मेहता, श्रीमती महक-श्री निपुणजी डागा
प्रपौत्री-प्रपौत्र	::	देवांशी, पारखी, विराज
पड़दोहती	::	अवयाना, शनाया

एवं समस्त कोठारी परिवार, जयपुर

श्री महावीराय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरेभ्यो नमः

|| जय गुरु हीरा || || जय गुरु महेन्द्र || || जय गुरु ज्ञान ||

अंक सौजन्य

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय-सुपट्ठिओ॥

-उत्तराध्ययनसूत्र, 20.37

आत्मा स्वयं अपने दुःख और सुख का कर्ता एवं भोक्ता है। सन्मार्ग में प्रस्थित आत्मा स्वयं अपना मित्र तथा असत् मार्ग में प्रस्थित आत्मा अपना शत्रु होता है।

स्व. श्री [illegible] लोढ़ा
(सुपुत्र स्व. श्री [illegible] लोढ़ा)
नागौर (राजस्थान)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

स्व. श्रीमती [illegible] लोढ़ा
(सुपुत्री स्व. श्री [illegible] पांचोलिया)
नागौर (राजस्थान)

आप नहीं हैं, पर आपकी स्मृतियाँ सभी के हृदय में आज भी हैं
आपकी असीम अनुकम्पा बनी रहे, बस यही अरमान है।

:: श्रद्धावनत ::

[illegible] पांचोलिया ([illegible])
नागौर, राजस्थान

सुपुत्र :: [illegible] लोढ़ा
सुपुत्रवधू :: श्रीमती [illegible] लोढ़ा
सुपुत्री :: श्रीमती [illegible] बोथरा
कोलकाता
[illegible]

सुपौत्र :: सुरेश लोढ़ा
सुपौत्रवधू :: श्रीमती [illegible] लोढ़ा
प्रपौत्र :: [illegible] लोढ़ा
हैदराबाद
[illegible]

सुपौत्र :: [illegible] लोढ़ा
सुपौत्रवधू :: श्रीमती [illegible] लोढ़ा
सुपौत्र :: [illegible] लोढ़ा
जयपुर
[illegible]

Sanmati Consultants (P) Ltd.
Kolkata, Hyderabad

Equity 4 Life
Jaipur, Hyderabad

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह-सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अकलेवरसेणिमुस्सिया,
सिद्धिं गोयम! लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं,
समयं गोयम! मा पमायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.35

तू सिद्धलोक को पाएगा,
शुभ क्षपकश्रेणि-आरोहण कर।
शिव क्षेम अनुत्तर पद को पा,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर।।

मई, 2022
वीर निर्वाण सम्वत्, 2548
वैशाख, 2079

वर्ष 80 अंक 5

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप्प नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	क्या सभी जीव समान हैं?	–डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	–डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	वीतराग का ध्यान	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	सामायिक से पुष्ट होता उदारता का गुण	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	आत्मविकास में पुण्य की भूमिका एवं धर्म से उसका सम्बन्ध	–तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	17
	सज्जनों की सङ्गति : एक अमृत फल	–श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	22
	भगवान महावीर का अवदान	–श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	25
	निर्दोष सामायिक की साधना	–श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.	28
शोधालेख-	जैन भक्ति काव्य एवं विनयचन्द चौबीसी	–डॉ. दिलीप धींग	33
संगोष्ठी-आलेख-	सामायिक और ध्यान	–श्री रणजीतसिंह कूमट	42
English-section	**Pratikramaṇa : Mirror of Introspection**	–*Sh. Jitendra Chaurdia*	48
प्रासङ्गिक-	श्रमण संस्कृति में अक्षय तृतीया	–प्रो. मंगलचन्द टाटिया	50
स्मृति-दिवस-	षड्द्रव्य समान उपयोगी थे गुरु हस्ती	–सौ. अनिता किशोर लुंकड़	52
पर्यावरण-संरक्षण-	पर्यावरण-चेतना एवं संरक्षण के लिए बनें विवेकी	–डॉ. एन. के. खींचा	54
32वाँ आचार्य पद-	आत्म-साधना में संलग्न प्रेरक व्यक्तित्व	–श्रीमती अंशु संजय सुराणा	56
युवा स्तम्भ-	न्यूनतम साधनों की जीवनशैली	–श्री हिमांशु जैन	58
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें	–श्री धर्मचन्द जैन	60
जीवन-व्यवहार-	अनमोल मोती (2)	–श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	62
48वाँ दीक्षा दिवस-	गुरु महेन्द्र चालीसा	–श्री डुग्गु 'ज्ञानार्थी'	63
संवाद-वाटिका-	संयम ही जीवन का बसन्त	–श्रीमती सुमन कोठारी	65
चालीसा-	नवकार चालीसा	–श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	68
गीत/कविता-	जैसी करणी-वैसा फैल	–श्री शिखरचन्द छाजेड़	24
	यश गाथा रहती अमर सदा	–श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	24
	दिव्य साधक तीर्थंकर महावीर	–डॉ. रमेश जैन 'बुढलाडा'	32
	जीने की राहें	–श्री मोहन कोठारी 'विनर'	47
	गुरु नाम से तन मन चेतन	–श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.	57
	सद्गुरो: प्रसादात्	–श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	68
	गुरु, अनुभव	–डॉ. रमेश 'मयंक'	86
विचार/चिन्तन-	मन की पवित्रता	–उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा.	11
	पर-प्रशंसा और स्व-प्रशंसा का भेद	–आचार्यश्री विजयराजजी म.सा.	16
	Some True Lines	–*Smt. Minakshi Jain*	27
	शिक्षा का महत्त्व	–श्रीमती विनय टाटिया	53
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–श्री गौत्तमचन्द जैन	69
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	71
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	90
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	–विभिन्न लेखक	91

10 मई 2022
जिनवाणी 7
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

क्या सभी जीव समान हैं?

डॉ. धर्मचन्द जैन

यह प्रश्न अनेक बार उठता है कि क्या सभी जीव समान हैं? इस सम्बन्ध में द्रव्य और पर्याय की दृष्टि से विचार करें तो द्रव्य की अपेक्षा से सभी जीव समान हैं, क्योंकि सभी जीव चेतना गुण से अथवा ज्ञान, दर्शन युक्त उपयोग गुण से सम्पन्न हैं। पर्याय की अपेक्षा से विचार करें तो जीवों में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। पर्याय की अभिव्यक्ति सब जीवों में भिन्न-भिन्न होती है।

जीव का लक्षण सभी जीवों में समान रूप से व्याप्त है, अत: वे समान हैं, किन्तु फिर भी उनकी योग्यता, पात्रता, भाव-भिन्नता आदि के आधार पर वे सब असमान भी हैं। उपयोग गुण की अभिव्यक्ति में तरतमता के आधार पर भी उनमें भेद होता है।

आगम साहित्य में सब जीवों को अपने समान समझने का उपदेश दिया गया है। दशवैकालिकसूत्र (10.5) में कहा गया है-'**अप्पसमे मन्निज्ज छप्पिकाए।**' अर्थात् षट्कायिक जीवों को अपने समान समझें। षट्कायिक जीवों में पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों का समावेश होता है। इनमें पृथ्वीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के जीव स्थावर एवं एकेन्द्रिय कहे जाते हैं तथा जो त्रसकायिक जीव हैं, वे चार प्रकार के होते हैं-द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय एवं पञ्चेन्द्रिय। सूत्रकृताङ्गसूत्र में भी कहा गया है-'**आयतुले पयासु**' अर्थात् अन्य जीवों को आत्मतुला पर रखकर देखें अर्थात् जिस प्रकार मुझे सुख-दु:ख का वेदन होता है उसी प्रकार अन्य जीवों को भी होता है, इसलिये अन्य जीवों के प्रति वैसा आचरण नहीं किया जाये जिससे उनको दु:ख हो, पीड़ा हो। आचाराङ्गसूत्र (1.2.3 सूत्र 45) कहता है कि सभी प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सबको सुख अनुकूल लगता है, दु:ख प्रतिकूल लगता है, सभी को वध अप्रिय है जीवन प्रिय है। सभी जीव जीना चाहते हैं। दशवैकालिकसूत्र (6.11) में भी आचाराङ्गसूत्र की यह बात दोहरायी गई है कि सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता है। आचाराङ्गसूत्र में वनस्पतिकायिक जीवों की मनुष्य से तुलना करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार मनुष्य जन्म ग्रहण करता है उसी प्रकार वनस्पति भी जन्म ग्रहण करती है, जिस प्रकार मनुष्य का शरीर वृद्धि को प्राप्त होता है वैसे ही वनस्पति भी वृद्धि को प्राप्त होती है, जैसे मनुष्य का शरीर चेतनायुक्त है, वैसे ही वनस्पति भी चेतना युक्त है। जैसे मनुष्य का छेदन करने पर वह म्लान होता है उसी प्रकार वनस्पति भी छेदन किये पर म्लान होती है, जिस प्रकार मनुष्य का शरीर अशाश्वत है वैसे ही वनस्पति का शरीर भी अशाश्वत है। इस प्रकार की गई तुलना वनस्पति के प्रति संवेदनशीलता को उत्पन्न करती है। अन्धे, बहरे, गूंगे व्यक्ति के हाथ-पैर काटने, छेदने से वेदना होती है, वैसे ही अन्य स्थावर एवं त्रस जीवों का छेदन-भेदन करने से उन्हें भी पीड़ा का अनुभव होता है। इस तरह आगम साहित्य में अन्य प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता जागृत की गई है। उनके प्रति अनुकम्पा और करुणा के भाव को पुष्ट किया गया है ताकि लोक के अन्य प्राणियों के प्रति मनुष्य का व्यवहार अत्यन्त शिष्ट हो और वह अनावश्यक हिंसा से पूर्णत: बच कर रहे।

साधु तो समस्त प्राणियों की हिंसा का मन-वचन-काय से त्याग करता है। वह न स्वयं उनकी हिंसा करता है, न दूसरों से कराता है और न ही हिंसा करने वालों का अनुमोदन करता है। गृहस्थ श्रावक निरपराध त्रस प्राणियों की हिंसा का त्यागी होता है। वह एकेन्द्रिय

प्राणियों की हिंसा का अल्पीकरण करता है।

इस प्रकार आगमों में लोक के सभी प्राणियों को अपने समान समझने का भाव जागृत कर हिंसा से बचने और उनके प्रति आदर का भाव रखने की भावना को पुष्ट किया गया है। किन्तु यहाँ पर यह समझने का प्रयास किया जाना चाहिए कि अन्य प्राणियों को अपने समान समझने का अभिप्राय यह नहीं है कि वे सभी प्राणी परस्पर समान हों। उनमें पर्यायगत एवं चेतना की अभिव्यक्ति में तरतमता का भेद विद्यमान है। यहाँ मात्र इस बात को रेखाङ्कित किया गया है कि हम अन्य प्राणियों को अपने समान समझेंगे तो उनकी रक्षा कर सकेंगे और उनकी व्यर्थ हिंसा से बच सकेंगे।

सबमें चेतना गुण विद्यमान होने से उन जीवों को स्वरूप की दृष्टि से समान कहा जा सकता है, किन्तु उन जीवों में पर्यायगत महान् भेद है। मूलत: जीव दो प्रकार के होते हैं-सिद्ध और सांसारिक। सिद्ध जीवों की हिंसा नहीं हो सकती और उनकी चेतना भी पूर्णत: विकसित एवं दोष रहित होती है। जबकि सांसारिक जीवों की चेतना मोह आदि दोषों से युक्त होने के कारण पूर्णत: अभिव्यक्त नहीं होती। उनकी चेतना की अभिव्यक्ति में अन्तर देखा जाता है। एकेन्द्रिय जीवों में जहाँ मात्र चार प्राण होते हैं-1. स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, 2. काय बलप्राण, 3. आयुष्य बलप्राण और 4. श्वासोच्छ्वास बलप्राण, वहाँ द्वीन्द्रिय जीवों में वचन बलप्राण, रसनेन्द्रिय बलप्राण सहित छह प्राण होते हैं। त्रीन्द्रिय जीवों में घ्राणेन्द्रिय बलप्राण सहित सात प्राण होते हैं। चतुरिन्द्रिय जीवों में चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण सहित आठ प्राण होते हैं। इसी प्रकार अमनस्क पञ्चेन्द्रिय जीवों में श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण सहित नौ प्राण होते हैं तथा समनस्क जीवों में मनोबल प्राण सहित दस प्राण पाये जाते हैं। प्राणों के भेद के आधार पर चेतना की अभिव्यक्ति न्यूनाधिक होती है। जीव की हिंसा के लिए आगमों में 'पाणाइवाओ' शब्द (प्राणातिपात) का प्रयोग हुआ है। जीव कभी मरता नहीं है, उसके समस्त प्राणों का अतिपात होने को ही मरना कहा जाता है। प्राणों का चले जाना ही मृत्यु का होना है।

आगमों में सब जीवों को अपने समान समझने के सन्देश के आधार पर हम पूरी तरह सब जीवों को परस्पर समान समझने लगे हैं, यह हमारा भ्रान्तिपूर्ण विश्लेषण है। **सब जीवों को अपने समान समझना और सब जीवों का पूरी तरह समान होना इन दोनों वाक्यों में अन्तर है।** आध्यात्मिक दृष्टि से यह भी कहा जाता है कि सभी जीव स्वरूप से अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अव्याबाध सुख, क्षायिक सम्यक्त्व आदि गुणों से युक्त हैं। अत: सभी स्वरूप से समान हैं। किन्तु आगम में ऐसा कहीं नहीं कहा गया है कि सभी जीव अनन्त ज्ञान आदि गुणों से युक्त हैं। हाँ, यह अवश्य कहा गया है कि उनमें श्रुतज्ञान के लब्ध्यक्षर का अनन्तवाँ भाग नित्य उद्घाटित रहता है और उस ज्ञान के माध्यम से वे अनन्त ज्ञानादि को प्रकट कर सकते हैं। प्रत्येक भवी जीव सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र की साधना कर इन्हें प्रकट कर सकता है, किन्तु वर्तमान में ऐसा अनुभव उनमें देखा नहीं जाता है। अत: उन्हें अनन्त ज्ञानी नहीं कहा जा सकता, केवलज्ञानी नहीं कहा जा सकता। सांख्यदर्शन का यह तर्क है कि मिट्टी में पहले से ही घड़ा विद्यमान होता है इसलिये मिट्टी घड़ा बनता है, किन्तु यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि उस मिट्टी में घड़ा बनने के अलावा तवा, दीपक, सकोरा आदि बनने की भी सम्भावना है। एक मुलायम पत्थर का उपयोग मूर्ति बनाने में भी हो सकता है तो उसका उपयोग मकान का फर्श बनाने में भी हो सकता है। इसी प्रकार जीवों में अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन आदि प्रकट करने की भी योग्यता होती है, किन्तु अभवी जीव अनन्त काल तक दु:खी एवं अशान्त रहकर निरन्तर कर्मबन्धन में लगे रहने की प्रवृत्ति से युक्त भी हो सकते हैं। क्योंकि यह भी प्रवृत्ति जीव में ही पायी जाती है और ऐसी प्रवृत्ति के आधार पर ही उनमें भेद देखा जाता है।

जीवों में भेदों का प्रतिपादन करने से सम्बद्ध कथनों से भी आगम भरे पड़े हैं। उदाहरण के लिए कुछ संसारी जीव अपर्याप्त होते हैं तो कुछ स्वयोग्य

पर्याप्तियों को पूर्ण कर पर्याप्त कहलाते हैं। अपर्याप्त की अपेक्षा पर्याप्त दशा का जीव अधिक विकसित होता है। छह प्रकार की पर्याप्तियाँ मानी गयी हैं–1. आहार, 2. शरीर, 3. इन्द्रिय, 4. श्वासोच्छ्वास, 5. भाषा और 6. मन:पर्याप्ति। इनमें एकेन्द्रिय जीव प्रारम्भिक चार पर्याप्तियों को पूर्ण कर पर्याप्त कहलाते हैं जबकि समनस्क पञ्चेन्द्रिय जीव छहों पर्याप्तियों को पूर्ण कर पर्याप्त कहे जाते हैं।

जीवों का भेद चार गतियों के आधार पर भी किया जाता है–1. नरकगति, 2. तिर्यञ्चगति, 3. मनुष्यगति और 4. देवगति। मनुष्यगति के अतिरिक्त अन्य जीव मोक्ष में नहीं जा सकता है, यह गति के आधार पर जीवों की पात्रता में भेद किया गया है। नरकगति के जीव असाता वेदनीय कर्म का घोर अनुभव करते हैं। नारक और देव भव में जहाँ जन्म से अवधि अथवा विभङ्ग ज्ञान होता है वहाँ मनुष्य एवं तिर्यञ्च जीवों में साधना के पश्चात् वह क्षयोपशम से प्रकट होता है। इन्द्रियगत जाति के आधार पर भी सब जीवों की चेतना में भेद दिखाई देता है।

जीवों की एक मिथ्यात्वदशा होती है और दूसरी सम्यक्त्व दशा। यह भी जीवों का पर्यायगत भेद है। मिथ्यात्वी और सम्यक्त्वी जीव समान नहीं हो सकते हैं। इन दोनों में महान् भेद होता है। इसी प्रकार प्रमत्त और अप्रमत्त जीव भिन्न–भिन्न होते हैं। इन दोनों को परस्पर समान मानकर व्यवहार करना उचित नहीं कहा जा सकता। क्या केवलियों एवं एकेन्द्रियों के साथ समान व्यवहार किया जा सकता है? दोनों को पूर्णत: समान समझना उचित नहीं कहा जायेगा। योग शक्ति के आधार पर भी जीवों में भेद पाया जाता है। एकेन्द्रिय जीवों में जहाँ मात्र काय योग होता है वहाँ द्वीन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों तक काय योग के साथ वचनयोग भी उपलब्ध होता है। संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों में मनोयोग सहित तीन योग पाये जाते हैं। 14वें गुणस्थानवर्ती एवं सिद्ध जीव अयोगी होते हैं अत: इन्हें समान नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार भावों के आधार पर भी जीवों में भिन्नता अनुभूत होती है। क्षायिक भाव वाला जीव औपशमिक भाव वाले से बेहतर होता है।

लेश्या, ध्यान आदि के आधार पर भी जीवों में भेद किया जाता है। एकेन्द्रिय जीवों में भी कुछ जीव सूक्ष्म और कुछ बादर होते हैं। सूक्ष्म जीव समस्त लोक में व्याप्त हैं जबकि बादर जीव लोक के एक देश में रहते हैं।

लक्षण की दृष्टि से सभी एक समान हैं। जीव का लक्षण है–उपयोग होना अर्थात् जीव ज्ञान–दर्शन गुण एवं उसके उपयोग से युक्त होता है। उत्तराध्ययनसूत्र में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य एवं उपयोग को जीव का लक्षण कहा गया है। यह समानता संसारी जीवों की अपेक्षा से कही गयी है। संसारी जीवों में भी ज्ञान–अज्ञान का, चारित्र–अचारित्र का, सकर्मवीर्य–अकर्मवीर्य का भेद पाया जाता है। **अत: यह नय दृष्टि है कि सभी जीव समान भी हैं और भिन्न भी। लक्षण की अपेक्षा से सभी जीव परस्पर समान हैं, लेकिन उनके अज्ञान, आचरण, गति, जाति, योग, कषाय की तरतमता, प्राण शक्ति, पर्याप्ति आदि के आधार पर उनमें भेद भी है।**

इतनी चर्चा करने का उद्देश्य यह है कि कुछ लोग ऐसा तर्क करते हैं कि सभी जीव समान हैं तो एकेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय जीव की हिंसा में कोई भेद नहीं हो सकता। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए यहाँ जीवों में भेद का प्रदर्शन किया गया है ताकि उन्हें ज्ञात हो सके कि जीवों में चेतना की अभिव्यक्ति के आधार पर भेद पाया जाता है। एकेन्द्रिय में सूक्ष्म जीवों की अपेक्षा बादर जीव अधिक विकसित होते हैं और समस्त एकेन्द्रियों की अपेक्षा द्वीन्द्रिय, समस्त द्वीन्द्रियों की अपेक्षा त्रीन्द्रिय, समस्त त्रीन्द्रियों की अपेक्षा चतुरिन्द्रिय जीव अधिक विकसित होते हैं। अनन्त पुण्य के पश्चात् कोई एकेन्द्रिय जीव द्वीन्द्रिय बनता है और इसी प्रकार पुण्यशालिता के आधार पर त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय बनता है। पञ्चेन्द्रियों में भी अमनस्क जीवों की अपेक्षा मन

शेषांश पृष्ठ 41 पर

10 मई 2022
जिनवाणी 10
ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणीणं।
जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करेंति ते।।

-सूत्रकृताङ्गसूत्र 1.11.20

अर्थ-जो साधु हिंसा युक्त दान की प्रशंसा करते हैं, वे प्राणियों के वध की इच्छा करते हैं तथा जो साधु दान का निषेध करते हैं वे प्राणियों की वृत्ति अर्थात् आजीविका का छेदन करते हैं।

विवेचन-यह प्रश्न अनेक बार उठता है कि जिस दान के कार्य में हिंसा समाहित होती है, साधु उसकी प्रेरणा करे या नहीं? इस प्रश्न का समाधान सूत्रकृताङ्गसूत्र के 11वें अध्ययन की उपर्युक्त गाथा में किया गया है।

दान के अनेक प्रकार हैं उनमें मुख्य हैं-ज्ञानदान, अभयदान, आहारदान एवं औषधदान। दान के इन भेदों में जहाँ हिंसा का कोई कार्य नहीं होता, उसकी प्रेरणा साधु-साध्वी निर्विवाद रूप से कर सकते हैं। ज्ञानदान उत्तम कार्य है। यह विवेकपूर्वक यतना के साथ किया जाए तो सर्वथा अनुमत है। साधु-साध्वी स्वयं प्रवचन आदि के माध्यम से ज्ञानदान करते हैं। वे इसकी निर्दोष प्रेरणा भी कर सकते हैं। इसी प्रकार अभयदान भी करणीय एवं अनुमोदनीय है। अन्य प्राणियों की रक्षा करते हुए गमनादि का व्यवहार करने से मार्गस्थ प्राणियों को अभयदान मिलता है। यह दान भी साधु-साध्वी अपनी चर्या में निरन्तर करते हैं और इसकी प्रेरणा भी वे बिना किसी बाधा के कर सकते हैं। **प्राणि-रक्षा या प्राणि-दया तो जैनधर्म का मुख्य अङ्ग है। यह अहिंसा का सकारात्मक पक्ष है।** यह विश्व में सभी प्राणियों के प्रति मैत्री का सञ्चार करता है और पर्यावरण की रक्षा में भी सहायक है। आज अनेक प्राणी एक-दूसरे से भयभीत हैं। उन्हें यदि निर्भयता प्राप्त हो जाये तो इससे उत्तम कार्य नहीं हो सकता।

आहारदान एवं औषधदान भी यदि यतना के साथ किया जाए तो इसमें भी कोई बाधा नहीं है। साधु-साध्वी स्वयं अपने निमित्त से न बने आहार एवं औषध का दान स्वीकार करते हैं। हाँ, यदि किन्हीं प्राणियों के निमित्त से आहार तैयार करने में हिंसा होती हो तो उस आहार दान की सीधी प्रेरणा साधु-साध्वी नहीं करते हैं।

गायों को चारा डालना, पक्षियों को चुग्गा डालना, प्याऊ बनवाना, चिकित्सालय बनवाना तथा इन्हें सञ्चालित करना आदि कार्यों में हिंसा का समावेश होता है, अतः साधु-साध्वी इन कार्यों की सीधी प्रेरणा नहीं करते हैं और इनका निषेध भी नहीं करते हैं। वे ऐसे दान के कार्यों की प्रशंसा भी नहीं करते हैं। यदि वे ऐसे कार्यों की प्रशंसा करें एवं प्रेरणा करें तो इसमें अनेक जीवों के वध की आशंका रहती है। उन कार्यों में साधु-साध्वी के वचन निमित्त होने पर उन्हें दोष का भागी होना पड़ता है। वे ऐसे कार्यों का निषेध भी नहीं करते हैं, क्योंकि निषेध करने लगें तो लाभार्थी पशु, पक्षी, प्यासे जीव, रोगी मनुष्य आदि को मिलने वाले लाभ में विघ्न पैदा होता है। अतः ऐसे कार्यों में वे निरवद्य भाषा का प्रयोग करते हैं, यथा-**जिस प्रकार आप मनुष्यों को भूख-प्यास का वेदन होता है उसी प्रकार अन्य प्राणियों को भी वेदन होता है, अतः वे भूखे-प्यासे न रहें इसका ध्यान रखना मनुष्य का कर्त्तव्य है।** बड़ी-बड़ी गौशालाओं आदि को देखकर उनके सञ्चालकों की वे प्रशंसा नहीं करते हैं, किन्तु उनके कार्यों की निन्दा भी नहीं करते हैं। **गाय आदि प्राणियों को बचाना मनुष्य का धर्म है ऐसा सन्देश उनके प्रवचनों से मिलता है।**

स्थानकों, उपाश्रयों आदि के निर्माण की प्रेरणा भी साधु-साध्वी नहीं करते हैं, क्योंकि भवन-निर्माण के कार्यों में त्रस-स्थावर प्राणियों की हिंसा होती है। वे सामूहिक धर्म-साधना की प्रेरणा कर सकते हैं। साधु-

साध्वी को भाषा समिति की पालना करते हुए ऐसी भाषा से बचना होता है, जिसमें प्राणियों की सीधी हिंसा होती है। वे जीमण आदि की भी प्रेरणा नहीं करते हैं, क्योंकि उनमें भी आरम्भ-समारम्भ होता है, किन्तु साधर्मि-वात्सल्य की प्रेरणा वे कर सकते हैं।

दान मनुष्य का कर्त्तव्य है और यह मोक्ष का साधन भी है, किन्तु **दान प्रतिफल की भावना के बिना यतना और विवेक के साथ किया जाय**, यही जैनधर्म का सन्देश है। गृहस्थ मनुष्य त्रस प्राणियों की हिंसा से बचने का प्रयत्न करता है। एकेन्द्रिय प्राणियों की हिंसा का अल्पीकरण करता है। किन्तु उन प्राणियों को करुणा और अनुकम्पा भाव से यथायोग्य बचाने का प्रयत्न भी करता है। **साधु-साध्वी की अपनी मर्यादाएँ हैं, किन्तु गृहस्थ मनुष्य दया और अनुकम्पा के कार्य विवेक से करने में स्वतन्त्र है।**

साधु-साध्वी रक्तदान, नेत्रदान, देहदान आदि की भी प्रेरणा नहीं करते हैं, किन्तु कोई गृहस्थ स्वेच्छा से अन्य प्राणियों की रक्षा के लिए एवं उन्हें साता पहुँचाने के लिए ऐसा दान करता है तो उसका निषेध भी नहीं करते हैं। उनकी प्रेरणा चार प्रकार से होती है-

1. आदेश दे सकते हैं, उपदेश भी दे सकते हैं, यथा संवर एवं निर्जरा की क्रियाओं हेतु।

2. आदेश दे सकते हैं, उपदेश नहीं दे सकते हैं- यथा साधुओं को परस्पर सेवा आदि कार्य हेतु।

3. उपदेश दे सकते हैं, आदेश नहीं दे सकते हैं- दान आदि पुण्य के कार्यों हेतु।

4. उपदेश एवं आदेश दोनों नहीं दे सकते हैं-पाप कार्यों हेतु।

अत: साधु-साध्वी दान आदि पुण्य के कार्यों के लिए निरवद्य भाषा में उपदेश तो कर सकते हैं, किन्तु जहाँ जीव हिंसा सम्भावित हो वहाँ आदेश नहीं दे सकते हैं कि गायों को चारा डालो आदि।

भाषा समिति एवं वचन-विवेक का ध्यान रखकर ही साधु-साध्वी गृहस्थों को उपदेश एवं आदेश देते हैं।

मन की पवित्रता

उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा.

आप अपने आपको, अपने मन को इस प्रकार साध लें कि मन को जहाँ मोड़ना चाहें वहाँ मोड़ लें, जहाँ रोकना चाहें वहाँ रोक लें। फिर तो यह मन आपके लिए परेशानी की नहीं, बल्कि बड़े आनन्द की चीज होगी।

जिज्ञासु मन को एकाग्र करने की बात पूछते हैं। मन को एकाग्र करना कोई बड़ी बात नहीं है। असली बात तो मन की पवित्रता की है। खेलकूद, गपशप आदि में समय का पता ही नहीं चलता। उस समय मन बड़ा एकाग्र हो जाता है। असली बात तो यह है कि मन को पवित्र कैसे किया जाय। मन यदि पवित्र तथा शुद्ध होता है, तो उसकी चञ्चलता में भी आनन्द आता है।

पानी छानकर पीने की बात जैनधर्म में बड़े जोर-शोर से कही गई है। मन को छानने की प्रक्रिया भी भारतीय धर्म में बतलायी गयी है। मन को छानने का मतलब अपने असद् विचारों का कूड़ा निकालकर पवित्र बना लेना। उसे शुद्ध और निर्मल बना लेना। इसलिए मन को मारने की अपेक्षा मन को साधने की आवश्यकता है। उसे शत्रु नहीं मित्र बनाने की जरूरत है। सधा हुआ मन जब चिन्तन-मनन में जुड़ जाता है तो अपने आप एकाग्र हो जाता है। प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं, केवल दिशा-निर्देशन ही काफी है।

-संकलन : श्री रिखबराज बाफना, 9 ए, पटेल नगर, बंगलो रोड़, भागीरथ स्कूल गली के पास, जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

10 मई 2022
जिनवाणी 12
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

वीतराग का ध्यान

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- सामायिक-व्रत एक दर्पण है। यदि धर्म-ध्यान की ओर अग्रसर होना है तो यह जरूरी आलम्बन है।
- मन को मजबूत करने के लिए संकल्प आवश्यक है। बिना संकल्प के करणी नहीं होगी और बिना करणी के कर्म नहीं कटेंगे।
- धर्मप्रेमी श्रावक अपने गाँव में बालक-बालिकाओं को धर्म तथा निर्व्यसनता की ओर प्रेरित करें तो बड़े लाभ का कारण है।
- मानव जब तक मिथ्या विचार और मिथ्या आचार में रहता है तब तक अपनी आदत में, विश्वास में गलत धारणाएँ रखता है। धर्म के बारे में गलत मानता है, गलत सोचता है और गलत बोलता है।
- सम्यक् विचार और आचार बन्धन काटने के साधन हैं।
- चाय पीना एक तरह का व्यसन है। यह खून को सुखाने वाली, नींद को घटाने वाली और भूख को कम करने वाली है।
- प्रभु की प्रार्थना साधना का एक ऐसा अङ्ग है जो किसी भी साधक के लिए कष्ट सेव्य नहीं है। प्रत्येक साधक, जिसके हृदय में परमात्मा के प्रति गहरा अनुराग हो, प्रार्थना कर सकता है।
- वीतरागता प्राप्त कर लेने पर सम्पूर्ण आकुलता जनित सन्ताप आत्मानन्द के सागर में विलीन हो जाता है। वीतरागता एक ऐसा अद्भुत यन्त्र है कि उसमें समस्त दु:ख, सुख के रूप में ढल जाते हैं।
- वीतरागता का साधक अपने शरीर के प्रति भी ममत्ववान् नहीं रह जाता। उस स्थिति में अपने शरीर का दाह उसे ऐसा ही प्रतीत होता है, जैसे मानो कोई झोंपड़ी जल रही है।
- देहातीत दशा प्राप्त हो जाने पर शरीर का दाह भी आत्मा को सन्ताप नहीं पहुँचा सकता।
- भगवद्-भक्ति अथवा प्रार्थना की पृष्ठभूमि में आन्तरिक एवं आध्यात्मिक विकास ही परिलक्षित होना चाहिए, न कि भौतिक साधनों का विकास। भगवद्-भक्ति का मुख्य उद्देश्य आत्मशुद्धि है।
- विवेक-दीप प्रज्वलित होने से मन का अन्धकार दूर होगा, भावालोक प्रस्फुटित होगा और तब दु:खों का स्वत: प्रक्षय हो जायेगा।
- मन में ज्ञानालोक का उदय होने पर सारी विचारधारा पलट जायेगी और जिसे मैं आज दु:ख मान रहा हूँ उसी को सुख समझने लगूँगा।
- यदि अज्ञान दूर हो जाय और विवेक का प्रदीप प्रज्वलित हो उठे तो दु:ख नदारद हो जायेगा।
- जो साधक प्रार्थना के रहस्य को समझकर आत्मिक-शान्ति के लिए प्रार्थना करता है, उसकी समस्त आधि-व्याधियाँ दूर हो जाती हैं, चित्त की आकुलता और व्याकुलता नष्ट हो जाती हैं और वह परमपद का अधिकारी बन जाता है।
- प्रभात के समय अवश्य वीतराग का ध्यान करो, चिन्तन करो, स्मरण करो और वीतराग की प्रार्थना करके बल प्राप्त करो
- धर्म को बाधा पहुँचाकर अर्थ और काम का सेवन करना जीवन की पंगुता है और पंगु जीवन अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं हो सकता।
- आत्मोत्थान के लिए ज्ञान और चारित्र की अनिवार्य आवश्यकता होती है।
- यह मन बहुत बार इधर-उधर विषय-भोगों की तरफ भटकता रहता है, मगर प्रार्थना मन को स्थिर करके आत्मा को ताकत देती है।

-'अमृत-वाक्' पुस्तक से साभार

10 मई 2022
जिनवाणी 13
ISSN 2249-2011

प्रवचन

सामायिक से पुष्ट होता उदारता का गुण

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर में दिए गये प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमारजी जैन (हरसाना वाले), जयपुर ने किया है। -सम्पादक

असार संसार में से आत्म-विकास का सार निकाल कर अनन्त ज्ञान की प्राप्ति करने वाले तीर्थङ्कर भगवन्त तथा पाप के मार्ग को छोड़कर संयम-साधना से समता सरोवर में स्नान करने वाले पञ्च परमेष्ठी सन्त भगवन्तों के श्रीचरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

तीर्थङ्कर भगवान महावीर की अन्तिम अनुपम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र के माध्यम से जीवन सुधार के साथ मरण-सुधार की बात कही जा रही है। जैन संस्कृति आध्यात्मिक संस्कृति है, यम-नियम की संस्कृति है, तप-त्याग की संस्कृति है। यहाँ का हर एक आचरण धर्म के साथ जुड़ा हुआ है। तीर्थङ्कर भगवान महावीर की वाणी में चलना, बैठना, खड़ा होना ये सब यतनापूर्वक किए जाते हैं। जिसके जीवन का हर क्षण, हर आचरण धर्म के साथ एकमेक होकर चल रहा है, जिसने सजगता का जीवन जीया है वह समाधिमरण प्राप्त कर सकता है और जिसके जीवन में अध्यात्म से हटकर धन की लालसा रही है, भोगों की कामना रही है, आसक्ति में जीवन बीतता रहा है, ऐसा व्यक्ति जीवन को ऊपर नहीं उठा पाता है। इसीलिये चतुर्भङ्गी के माध्यम से पुरुष के चार भेद किये जा रहे हैं।

1. जो स्व उपकार करते हैं, परन्तु परोपकार नहीं करते हैं।
2. जो स्व उपकार नहीं करते, परन्तु परोपकार करते हैं।
3. जो स्व और पर, दोनों का उपकार करते हैं।
4. जो स्व और पर, दोनों का उपकार नहीं करते हैं।

अर्थात् प्रथम प्रकार के पुरुष ऐसे हैं जो अपने आत्म-विकास में अपनी साधना के पथ पर अपने कर्मों को काटने के लिए पूर्णत: सचेत होकर ज्ञान रूप भाव से आत्म-विकास में आगे बढ़ते हैं, पर वे दूसरों के लिए कुछ नहीं करते। आपकी भाषा में कहूँ उन्हें स्वार्थी कह सकते हैं। स्वार्थी भी दो प्रकार के होते हैं-1. दूसरों को दु:ख देकर अपना स्वार्थ साधने वालों को हम निकृष्ट दर्जे का आदमी कहते हैं। जो स्वार्थ भावना से, लौकिक भावना से अलग हटकर लोकोत्तर भावना में दूसरों को कष्ट नहीं देते हुए अपनी साधना में आगे बढ़ते हैं तीर्थङ्कर भगवान ने ऐसे स्वार्थी साधकों को प्रशंसनीय कहा है, श्लाघनीय कहा है। प्रत्येक बुद्ध स्वार्थी होते हैं, वे स्वयं संयम का आचरण करते हैं, किसी को उपदेश नहीं देते हैं, न किसी से सेवा लेते हैं और न किसी की सेवा करते हैं, परन्तु उन्हें प्रशंसनीय, श्लाघनीय कहा है।

दूसरे प्रकार के पुरुष हैं जो अपने लिये नहीं सोचते हैं, पर दूसरों का उपकार करते हैं। अपने सुख का बलिदान करते हैं और दूसरों का भला करते हैं, उन्हें परार्थी कहा जाता है। एक महिला जो स्वयं कष्ट उठाकर बच्चों को पालती है, पोषती है उन्हें संस्कार देकर स्वयं दु:ख पाकर धर्म में जोड़ देती है। घर में अकेला बेटा है, माँ से कहता है-माँ मैं दीक्षा लूँगा, माँ भी शिक्षा दे रही है-यह जीवन धर्म के लिए है, तू आगे बढ़। बेटी माँ से कह रही है, माँ मैं सामायिक करना चाहती हूँ, माँ कहती है-बेटी! तू व्याख्यान में जा, मैं घर का सारा कार्य कर लूँगी अर्थात् अपने सभी दु:खों का गोपन करती है।

खेल में भाग लेने हेतु भेजने वाले बहुत हैं, इन्द्रिय-सुख के साधन सिनेमा आदि में भेजने वाले बहुत हैं, परन्तु स्वयं कष्ट पाकर दूसरों को सुखी करने वाले, ऐसे कोई राम, ऐसी कोई कौशल्या विरली ही मिलेगी।

सुना हुआ किस्सा है कि किसी एक अँगूठी को लेकर झगड़ा हुआ और कोर्ट में लाखों रुपये बर्बाद कर दिये, हाथ कुछ नहीं आया। संसार में ऐसे परार्थी लोग भी हैं जो खुद कष्ट पाकर दूसरों के लिए उत्सर्ग करते हैं।

तीसरे प्रकार के पुरुष हैं–जो अपना भी भला करते हैं और दूसरों का भी भला करते हैं। खुद भी तिरते हैं और दूसरों को भी तिराते हैं। खुद भी खाते हैं और दूसरों को भी खिलाते हैं। ऐसे भी सामायिक करने वाले हैं जिन्होंने स्वयं कष्ट पाकर दूसरों के जीवन–निर्माण में सहयोग दिया। ऐसे लोग हैं जो स्वयं जगते हैं और दूसरों को भी जगाते हैं। **सम्मान चाहने वाले मिल जायेंगे, लेकिन सेवा करने वाले विरले ही मिलेंगे।** सामायिक करने वालों को तीर्थ का दर्जा दिया है–वे खुद भी तिरते हैं और दूसरों को भी तारते हैं। जयपुर में सामायिक की आराधना करने वाले उत्साहपूर्वक आराधना कर रहे हैं, कोई सुबह समय दे रहा है, कोई मध्याह्न का समय दे रहा है। सामायिक की साधना कैसे तिरने, तारने वाली है संक्षेप में एक छोटी–सी बात सामने रखूँ।

आचार्य धर्मघोष एक बार चम्पा नगरी में पधारे। मुनि मण्डल के साथ पधारना हुआ, नगरी के लोगों को खबर पड़ी। धन्धा रोज चलता है, परिवार और समाज के काम रोज चलते हैं, आचार्यश्री का पदार्पण हुआ है, धर्म लाभ लेना चाहिये, ऐसा सोचकर नगरी की जनता उमड़ पड़ी। जनता ऐसी उमड़ी कि सभागार में बैठने को स्थान नहीं मिला। कमजोर, बलशाली, निर्धन, धनवान और सामान्य कार्यकर्त्ता भी आचार्य भगवन्त के उपदेश को सुनने के लिए उपस्थित हुए। सामायिक में बैठे हुए लोगों में अमीर, गरीब, छोटे–बड़े का कोई भेद नहीं होता। जाति–पाँति का कोई भेद नहीं होता। संयोग ऐसा हुआ कि करोड़पति सेठ के पास एक भाई बैठा, जो कि सामान्य स्थिति वाला था। वह भी कभी पूँजीपति था, सम्पन्न था, सैकड़ों मुनीम काम करते थे, समय का परिवर्तन हुआ, एक दिन जो ऊपर था वह नीचे आ गया, जो नीचे था वह ऊपर आ गया। कल जो सिंहासन पर बैठने वाला था, आज वह राम वनवास में है और जो कल तक घूम रहा था उस भरत के लिए सिंहासन की घोषणा हुई है। करोड़पति के पास बैठा भाई जो वर्तमान में दरिद्र था, वह आत्महत्या की तैयारी लेकर चल रहा था, खाने को नहीं रहा, पहनने को नहीं रहा, एक दिन आत्महत्या करने का विचार किया। उस भाई की पत्नी ने कहा कि मैं स्वयं जीना चाहती हूँ। जैन कुल को प्राप्त करके आप जो सोच रहे हैं, आपके लिये शोभाजनक नहीं है। दुःख हर व्यक्ति के जीवन में आता है। राजा हरिश्चन्द्र को भी हरिजन के यहाँ श्मशान में डण्डा लेकर रखवाली करनी पड़ी, पाण्डवों का भी समय बदला, जंगल–जंगल भटकना पड़ा। समय जब तक नहीं बदलता है तब तक नहीं बदलता। भाई बोला–''मैं आत्महत्या नहीं करूँ तो क्या करूँ? जीवित रहने पर पेट कैसे भरेगा? भाई के पास जाऊँ नहीं, याचना करूँ नहीं, मारवाड़ी में कहावत है–'माँगन से मरना भला।' माँगना और मरना बराबर है। इसलिये मैं माँगना नहीं चाहता, मरना चाहता हूँ। पत्नी ने कहा–''आचार्य धर्मघोष पधारे हैं, वहाँ करोड़पति आते हैं, अपने कीमती हार खोलकर बैठते हैं, तुम चुराकर हार ले आना, यद्यपि चोरी करने का हमारा इरादा नहीं, किन्तु मजबूरी में एक अपराध करो बाद में प्रायश्चित्त कर लेंगे।'' पतिदेव बोला–''यह मेरे से नहीं होगा।'' पत्नी बोली–''माँगना मेरे से नहीं होगा, चोरी मेरे से नहीं होगी, जीवन चलाना कठिन हो रहा है, कुछ तो करना ही पड़ेगा।'' पत्नी की बात मानकर भाई धर्म स्थान में पहुँच गया। कपड़ों में से हार निकाला और चल दिया। सामायिक करने के बाद सेठजी ने कपड़े देखे, हार गायब था। लेकिन बिना कुछ कहे घर चल दिये। अगर आपकी कोई छोटी–सी वस्तु, छोटा–सा गहना चला जाय तो सन्तों के पास तक पूछने आ जाते हैं। एक क्षण के लिए सेठजी को विचार हुआ, दूसरे क्षण चेहरे की वृत्ति बदली। घर आये, सेठानी–सेठजी ने विचार किया ऐसा कौन–सा भाई है जिसको स्थानक में चोरी करनी पड़ी, हर व्यक्ति का ध्यान

रखकर चलता हूँ फिर भी धर्मस्थान में किसी को चोरी करनी पड़ी। मेरे समाज में मेरे रहते यह स्थिति है, यह मेरे लिए लज्जाजनक है। दूसरा हार लिया और पहन लिया। दुकान पर पहुँचे। उधर भाई हार चोरी करके पत्नी के पास पहुँचा और कहा-''तूने कहा था, मैंने काम पूरा कर लिया अब आगे क्या करना चाहिये।'' पत्नी बोली-''ऐसा करो हार उसी सेठ के पास गिरवी रखने ले जाओ।'' भाई बोला-''अब तक मरा नहीं, अब मरने का नम्बर आ गया।'' पत्नी बोली-''आपने सामायिक करने वालों की पहचान नहीं की, आप तो मेरी बात मानो तो वहीं ले जाओ, इस हार को गिरवी रखकर धन्धा चलाने के लिए पैसे लेकर आओ। वे न्यायी हैं, धर्मी हैं, ईमानदार हैं उनके पैसे से भाग्य बदल जायेगा।'' भाई सेठजी के पास हार लेकर पहुँचा और बोला-''सेठजी! बहुत दुःखी हूँ, इस हार को रखो और मुझे व्यापार के लिए कुछ पैसे दे दो।'' सेठजी ने हार पहचान लिया, लड़के को बुलाया और कहा-''इस हार को गिरवी रखकर 10 हजार रुपये दे दो।'' सेठजी का लड़का कहता है कि यह हार तो अपना है। इन्हें 10 हजार दें या पुलिस को फोन करें। सेठजी ने अपने पुत्र को कहा कि धर्मभाई को किस दृष्टि से देखना चाहिए, इस घर में जन्म लेकर भी तू नहीं समझा।

सेठजी ने 10 हजार रुपये दे दिये और हार को तिजोरी में रख दिया। भाई ने व्यापार प्रारम्भ किया। समय एक-सा नहीं रहता है; कभी पतन, कभी उत्थान आता है कभी गिरता है तो कभी गिरकर सम्भलता भी है। पत्नी ने उस भाई से कहा कि अच्छा पैसा हो गया, ब्याज सहित सेठजी को पैसे लौटा आओ। भाई पैसों की गड्डी लेकर दुपट्टे में बाँधकर सेठजी के पास पहुँचा, चरणों में नमस्कार किया। आपकी दयालुता से आपकी कृपा से कमा कर खा सका, इसलिये अब आप आपके पैसे ले लो। सेठजी ने लड़के को आवाज लगायी-पैसे लेकर हार दे दो। वह भाई रोने लगा, इंसान के रूप में आज मैं भगवान को देख रहा हूँ। मेरे जैसा पापी नहीं, आप जैसा धर्मी नहीं। भाई बोला-''सेठजी किसका हार और आप किसे दे रहे हैं।'' सेठजी बोले-''यदि मेरा होता तो जाता नहीं, जो गया है वह मेरा नहीं।''

सेठजी ने पैसे ले लिये और हार भाई को वापस दे दिया। आज भाई, भाई से अलग होते जा रहे हैं। दोनों ही हार किसका है, यह निर्णय कराने के लिए धर्मघोष आचार्य के पास पहुँचे। सेठजी कह रहे हैं कि महाराज हार इसका है, मैंने इसके बदले पैसे दिये, अब हार दे दिया और पैसे ले लिये। भाई कह रहा है कि बाबजी हार इन्हीं सेठजी का है, मैं तो चोर हूँ मैंने धर्मस्थान से चोरी की है।

जो गुरु चरणों में आता है, वह शुद्ध हो जाता है लेकिन जो धर्मस्थान में पाप किये जाते हैं, वे बिना भोगे कटते नहीं है। भाई बोला-''मैं चोर हूँ, पापी हूँ, मैंने धर्मस्थान में चोरी की है। ये सेठजी इंसान होते हुए भगवान हैं, मेरा जीवन बनाया है।'' सेठजी कहते हैं-''गुरुदेव! चोर यह नहीं मैं हूँ। मैंने अपने भाई का खयाल नहीं रखा, मेरी जाति में कोई दुःखी है मैंने ध्यान नहीं रखा। इसलिये इसे चोरी करनी पड़ी। अगर यह चोर होता तो मेरा हार मेरे पास क्यों लाता। भगवान महावीर ने कहा-सब भाइयों को समान रखकर चलना, जो गिरे हुए हैं उन्हें उठाकर साथ-साथ चलाना ही धर्म है। मेरे पास जो था मैंने इसे समय पर दिया होता, तो इसे चोरी नहीं करनी पड़ती।''

स्वधर्मी भाई के प्रति कितना प्रेम। आखिर उस हार का निर्णय हुआ। हार की जो पूँजी होती है उसे जो-जो कमजोर हैं उनके लिये उपयोग में ली जाय। तो यह **सामायिक समता में रहना सिखाती है, जैसे आपको दुःख आता है, पीड़ित करता है, दूसरों को भी उसी समान दृष्टि से देखो, इस तरह सामायिक उदारता सिखाती है।** सामायिक करने वाले को तैयार कीजिए, जो धन आपने पुण्यशालिता से पाया है, उसे अपने गरीब भाइयों में बाँटिये। तेरा पैसा तू गुटखे खाने में, शराब पीने में, खर्च कर रहा है। अपने पैसे को भाई को दो जो

आपको जिन्दगी भर तक याद करेगा। बीज सड़क पर फेंकने के लिए नहीं, खेत में डालने के लिए हैं। नीति कह रही है–

खा गया सो खो गया,
जोड़ गया सो फोड़ गया,
दे गया सो ले गया।।

अपने जीवन में कुछ न कुछ दीजिए। किसी दु:खी के दु:ख दूर कीजिए। ऐसा जीवन जीओगे तो जीवन में समाधि आयेगी। शान्ति, सुख और प्रसन्नता को प्राप्त करेंगे।

पर-प्रशंसा और स्व-प्रशंसा का भेद

आचार्य श्री विजयराजजी म.सा.

स्व–प्रशंसा की वृत्ति मानव मात्र में पाई जाती है। उसे अपनी प्रशंसा सुनना और करना अच्छा लगता है; लेकिन मोक्ष-मार्ग की आराधना में स्व-प्रशंसा सबसे बड़ा अवरोध है। स्व-प्रशंसा से उत्पन्न क्षणिक आनन्द व्यक्ति को उन्मत्त और मदहोश बना देता है। परिणामस्वरूप वह अध्यात्म-मार्ग से च्युत हो जाता है। आत्म-प्रशंसा गुणों की वृद्धि नहीं, हानि ही करती है। आत्म-प्रशंसा का रोग तब पैदा होता है, जब वह अपने सत्कार्यों का विज्ञापन चाहता है। यह चाह ऐसी है जो कभी बुझती नहीं। ज्यों-ज्यों आत्म-प्रशंसा होती है, व्यक्ति का गर्व बढ़ता जाता है। साधक के लिए स्व-प्रशंसा पाप ही नहीं, महापाप बन जाती है। संसार में ऐसे भी बहुत लोग हैं जो कुछ भी सत्कर्म करते नहीं, मगर अपनी प्रशंसा किए बिना रहते भी नहीं। कोई दूसरा प्रशंसा करे या न करे, स्वयं ही स्व-प्रशंसा में तन्मय रहते हैं। स्व-प्रशंसा की भूख अनन्त होती है। यह नहीं भूलना चाहिए कि स्व-प्रशंसा के साथ पर-निन्दा का सम्बन्ध चोली-दामन जैसा है। इसीलिये कई लोग स्व-प्रशंसा की आड़ में पर-निन्दा और पर-निन्दा की आड़ में स्व-प्रशंसा करते रहते हैं। किन्तु, यह सत्य है कि जिनमें आत्म-गुणों का विकास नहीं हुआ है, वे स्व-प्रशंसा के भूखे होते हैं। दूसरों की तुच्छता साबित करने से खुद की उच्चता अपने आप सिद्ध हो जाती है। ऐसी ओछी मानसिकता के धनी, हर समय पर-निन्दा में लगे रहते हैं।

पर-निन्दा और आत्म-प्रशंसा नीच गोत्र कर्म का बन्ध करवाती है, जिसका फल अनेक भवों तक भोगना पड़ता है। जो वास्तविक धर्म के आराधक हैं, वे कभी अपने मुँह अपनी प्रशंसा या पराई निन्दा नहीं करते। आत्मकल्याण का वृक्ष तभी हरा-भरा रहता है, जब उसमें पर-निन्दा का खारा पानी नहीं डाला जाता। पर-निन्दा अधम है और अधम व्यक्ति पर-निन्दा में रस लेते हैं। जिन्हें अपने कल्याण वृक्ष को हरा-भरा रखना होता है, वे पर-प्रशंसा और आत्म-निन्दा करते हैं। पर-प्रशंसा स्वर्ग की सीढ़ी है, तो आत्म-प्रशंसा नरक की। स्व-प्रशंसा करने वाले अपने पुण्य को निरन्तर क्षीण करते हैं। पुण्य क्षीण होते ही सारे सुख खत्म हो जाते हैं। हालांकि सांसारिक जीवन में स्व-प्रशंसा भले ही आवश्यक मानी जाती हो, लेकिन अध्यात्म जीवन में यह सबसे बड़ा अवरोध है। अध्यात्म जीवन की मौत स्व-प्रशंसा से हो जाती है, यह किसी ज़हर से कम नहीं होती।

अध्यात्मनिष्ठ आत्मार्थी साधक सदा स्व-प्रशंसा से बचते हैं और पर गुणानुवाद करते हुए आह्लाद भाव का अनुभव करते हैं। यही उनके जीवन की उत्कृष्ट साधना होती है।

-संकलन : कस्तूरचन्द बाफना, जलगाँव

10 मई 2022
जिनवाणी 17
ISSN 2249-2011

प्रवचन

आत्मविकास में पुण्य की भूमिका एवं धर्म से उसका सम्बन्ध

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक प्रवचन फरमाए गए थे। उनमें से इस प्रवचन का आलेखन सुश्री नेहाजी चोरड़िया, जलगाँव द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

सातिशय पुण्य को प्रवर्धित करते हुए उत्कृष्ट पुण्य के साथ उत्कृष्ट संवर, निर्जरा को अपनाकर सर्वोत्कृष्ट पद में विराजमान अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त एवं सातिशय पुण्य को प्रवर्धित कर संयम को अपनाकर संवर, निर्जरा की ओर गतिशील हो मुमुक्षुओं का मार्ग प्रदर्शित करने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्-

21वीं शताब्दी का सभ्य और उन्नत समाज बारूद और एटमों के ढेर पर बैठा है। युद्ध और आपत्ति के काले बादल समाज के राजनैतिक क्षितिज पर मण्डरा रहे हैं। ये किसी भी समय तृतीय विश्वयुद्ध के रूप में बरस सकते हैं और विश्वशान्ति को जीर्ण-शीर्ण कर सकते हैं। हथियार निर्माण पर जितना खर्च किया जाता है अर्थात् मानव समाज को नष्ट करने के लिए जितना पैसा बर्बाद किया जाता है, उसका 10-20 प्रतिशत हिस्सा भी मानव की सुरक्षा में व्यय नहीं किया जाता है। कोई रोको ना इस प्रलय को। किन्तु शान्तिप्रिय साधक एवं शान्तिप्रिय समाज रक्षकों की कौन सुनता है? कोई रोको ना, आ ही गया। चारों तरफ अन्धी दौड़ पर विराम लगाने। मांस, मछली, अण्डे, शराब, व्यभिचार के ताण्डव को कोई रोक न सका तब कोरोना ने उस पर अल्पविराम लगा दिया। खिलाड़ियों ने करोड़ों का दान किया और अन्य लोग भी दान करने में उदारता से आगे आए। प्रश्न यह उठता है कि अनुकम्पावश दिया गया यह दान हेय है या उपादेय? रिक्शाचालक, दैनिक मजदूरी करने वाले मजदूर, आइस्क्रीम एवं कुल्फी बेचने वाले, होटलों और रेस्तराओं में काम करने वाले, स्टेशन पर सामान ढोने वाले और न जाने कितने ही व्यक्तियों पर इस महामारी की मार पड़ी।

एक किस्सा याद आ रहा है। सेठजी का दिल पसीजा, कई दिनों की भूख से संत्रस्त दीन-हीन, फटेहाल दरिद्र को घर पर लाए। नहलाया, धुलाया, नवीन स्वच्छ वस्त्र, सुन्दर आसन, शीशम की लकड़ी की चौकी, चाँदी की थाल, कटोरी, षड्रस भोजन से संतृप्त किया और अन्त में पूछ ही लिया, आपके बाप दादा ने भी कभी ऐसा खाना खाया क्या? (श्रोताओं में हँसी) हँसी क्यों आ रही है आपको? अच्छी राशि खर्च की है सेठ ने उस पर, अच्छा खाना खिलाया है सेठ ने उसे, भरपेट खाना भी खिलाया है पर...पर... दशवैकालिकसूत्र के 5वें अध्ययन के प्रथम उद्देशक की गाथा 47-49 की व्याख्या में-

दानार्थ प्रकृत आहार-विदेश प्रवास से लौटकर आने पर या किसी पर्व विशेष या पुत्रजन्म आदि अवसरों पर बधाई देने आने वालों को प्रसादभाव से देने के लिए आहार तैयार करवाना दानार्थ प्रकृत आहार कहलाता है अथवा चिरकाल से विदेश प्रवास से आकर साधुवाद पाने के लिए किसी श्रेष्ठी द्वारा समस्त पाखण्डियों को दान देने के लिए तैयार कराया गया भोजन भी दानार्थ प्रकृत है।

पुण्यार्थ प्रकृत आहार-पर्वतिथि के दिन धन्यवाद या प्रशंसा पाने की इच्छा रखे बिना जो आहार केवल पुण्यलाभ की दृष्टि से बनाया जाता है, दाता जिसका स्वयं उपभोग नहीं करता, वह पुण्यार्थ प्रकृत है।

हाँ, हाँ, ठाणांगसूत्र भी यही कह रहा है कि दान दस प्रकार के हैं-1. अनुकम्पा दान, 2. भय दान, 3. संग्रह दान, 4. कारुण्य दान, 5. लज्जा दान, 6. गारव दान, 7. अधर्म दान, 8. धर्म दान, 9. करिष्यति दान और 10. कृत दान।

इनमें केवल प्रथम अनुकम्पा दान, चौथा कारुण्य दान, आठवाँ धर्मदान ये तीन दान ही उपादेय हैं। आत्मा को पवित्र करने वाले हैं। हाँ, हाँ पुञ् पवित्रीकरणे (क्रयादि करणे 9वाँ गण) से ही तो पुण्य शब्द निष्पन्न होता है। 'पुनाति इति पुण्यं' आत्मा को पवित्र करे उसे पुण्य कहते हैं। 9वें ठाणे में पुण्य 9 प्रकार का बताया गया। यद्यपि दान, शील, तप, भाव यहाँ चार में जो मोक्षमार्ग बोला जाता है, उस दान में अनुकम्पा दान, सुपात्रदान, अभयदान, ज्ञान दान आदि धर्म दान ही सम्मिलित होते हैं। तत्त्वार्थसूत्र के 7वें अध्ययन का 33वाँ-34वाँ सूत्र है-

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्। -7.33

विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः। -7.34

यह दान प्रायः आत्मा को पवित्र करने वाला है और पुण्य के अन्तर्गत ही आता है। कितना घोर आश्चर्य है कि तत्त्वार्थसूत्र के ही छठे अध्ययन के तीसरे सूत्र से 'शुभः पुण्यस्य' पुण्य को आस्रव बताकर उसे हेय बताते हैं, पुण्य को मिथ्यात्व और कषाय कहकर भ्रमणा फैलाते हैं एवं इसी छठे अध्याय के आगे के सूत्रों में पुण्य प्रकृति बन्ध के कारणों पर गौर ही नहीं करते। 7वें अध्ययन के 33-34वें सूत्र पर दृष्टि ही नहीं डालते। यह दान श्रावक के व्रत के रूप में बताया गया है अर्थात् संवर के साथ में पुण्य की सहभागिता को प्रदर्शित करने वाले हैं ये सूत्र। आठवें अध्ययन के 26वें सूत्र में-

सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम्।

यहाँ मोहनीय कर्म की चार प्रकृतियों समकित मोहनीय, हास्य, रति और पुरुषवेद को भी पुण्य में शामिल कर लिया है। समकित मोहनीय का तो बन्ध होता ही नहीं। मिथ्यात्व मोहनीय के तीन पुञ्ज होने पर इसे सत्ता मिलती है। इसका उदय चौथे से सातवें गुणस्थान तक होता है। उस समय जीव क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि कहलाता है। इस अपेक्षा से आचार्य उमास्वाति जी ने इसे पुण्य कह दिया है। हास्य, रति और पुरुषवेद की स्थिति उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की होती है। मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति 70 कोटाकोटि सागरोपम, 16 कषाय की उत्कृष्ट स्थिति 40 कोटाकोटि सागरोपम, 5 नोकषाय (अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद) की 20 कोटाकोटि सागरोपम और स्त्रीवेद की 15 कोटाकोटि सागरोपम के समक्ष (हास्य, रति, पुरुषवेद) की ये स्थिति न्यून होने से पुण्य कह दिया जाना आपेक्षिक सत्य है। आगम और कर्मसिद्धान्त में मोहनीय कर्म सहित चारों घातिकर्मों को मात्र पाप में गिना जाता है। इन कर्मों की कोई भी प्रकृति पुण्य की नहीं हो सकती। कषाय की तीव्रता से इनका अनुभाग बढ़ता है और कषाय की मन्दता से इनका अनुभाग कम होता है। समकित मोहनीय का तो आस्रव होता नहीं, शेष तीनों का आस्रव अशुभयोग का ही परिणाम है। तत्त्वार्थसूत्र के छठे अध्ययन में स्पष्ट 15वाँ सूत्र है-

कषायोदयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य।

अर्थात् कषाय के उदय से हुआ तीव्र आत्म-परिणाम चारित्र मोह का बन्ध कराता है। कषाय के उदय से होने वाला आत्मपरिणाम शुभ हो ही नहीं सकता। छठे अध्ययन के तीसरे सूत्र में 'शुभः पुण्यस्य' कहा और आठवें अध्ययन में इन तीनों को पुण्य कह दिया जो कि छठे अध्ययन के 15वें सूत्र से बाधित हो रहा है। अस्तु, केवल पुण्य को आस्रव मानकर हेय समझना वीतराग प्रणीत सिद्धान्त से बाधित होता है। पुण्य से पाप का आस्रव रुकता है, विशुद्धि बढ़ने से तथा बढ़े हुए पुण्य से पूर्वबद्ध कर्मों की स्थिति और पाप प्रकृतियों का अनुभाग घटता है, नष्ट होता है। इस अपेक्षा से पुण्य, संवर और निर्जरा में मात्र सहकारी ही नहीं, अपितु अपेक्षा से पुण्य, संवर-निर्जरा तत्त्व भी है। पापास्रव के निरोध को उत्तराध्ययनसूत्र (29/55) में संवर कहा ही गया है-

संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ और उत्तराध्ययनसूत्र के 30वें अध्ययन की छठी गाथा में- **पावकम्मनिरासवे....** कहकर पापास्रव के घटने को निर्जरा भी कहा गया है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की चौथी पृच्छा में **'गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं विणय-पडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियम-णुस्सदेव-दुग्गइओ निरुंभइ।'** एवं उत्तराध्ययनसूत्र 29/10 में **'वंदणएणं भंते! जीवे किं जणयइ'** में भी संवर, निर्जरा की बात स्पष्ट बतायी है।

उत्तराध्ययनसूत्र 29/7 में **'गरहणयाए णं भंते'** में गर्हा से जीव अनन्त घाति पर्यवों को क्षीण करता है, स्पष्ट ही बताया।

पापास्रव को रोक कर जीव संवर, निर्जरा में आगे बढ़ता है एवं पापास्रव को जीव पुण्य से रोकता है। वह पुण्य उपादेय ही है। फिर पुनः प्रश्न खड़ा रहता है कि पुण्य और धर्म अलग-अलग है या एक है?

पुण्य तत्त्व अर्थात् मिले हुए का सदुपयोग। मिला हुआ तीन प्रकार का है। भगवतीसूत्र शतक 18 उद्देशक 7 एवं ठाणांगसूत्र ठाणा 3 में तीन प्रकार के संग्रह बताए- कर्म, शरीर और उपधि। बाहर की सामग्री का सदुपयोग अन्न पुण्य आदि प्रारम्भिक पाँच पुण्य हैं। शरीर का सदुपयोग मन, वचन, काय आदि तीन पुण्य हैं। नमस्कार पुण्य सर्वोपरि है, जिसमें शरीर के तीनों पुण्य भी समाविष्ट हो जाते हैं।

विधि, द्रव्य, दाता और पात्र की विशेषता से वही पुण्य श्रावक का व्रत बन जाता है। व्रत चारित्राचारित्र में आता है। पाँच प्रकार की सामग्री का विस्तार वहाँ चौदह प्रकार में किया गया। अन्तिम चारों पुण्य भी वहाँ न्यूनाधिक रूप से विद्यमान रहते ही हैं। भगवती 7/1 इस पुण्य से समाधि-सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के साथ स्थितिघात, रसघात रूपी निर्जरा का विवेचन कर रहा है, जिसे भगवती 8/6 में निर्जरा के रूप में बताया ही गया है। सम्यग्दर्शन से प्रायः संवर और सकाम निर्जरा का प्रारम्भ हो जाता है। पुण्य तत्त्व इस उच्चतर भूमिका में अधिकाधिक वर्धित होता है। बाह्य सामग्री सापेक्ष होने पर भी ये मुख्यतः परिणामों पर ही निर्भर करता है। भगवती 14/18 से सुस्पष्ट है अकामदाह, तृषा को सहन करने से मात्र काय पुण्य के आधार पर पेड़ का पत्ता अगले भव में अर्चनीय, वन्दनीय, सत्यप्रभा आदि वाला बन गया और वहाँ से पुण्य बढ़ा मनुष्य भव में जहाँ प्रथम संहननादि अनेक पुण्य प्रकृति का अधिकारी बन संवर-निर्जरा की उत्कृष्टता में उत्कृष्ट पुण्य कर मुक्ति का अधिकारी हो जायेगा।

धन्य है पुण्य प्रभु जिससे, शरण में आपके आए।

परदेशी राजा, श्रेणिक महाराज इसी पुण्य से सन्तों के चरणों में पहुँचे और परम भक्ति को प्राप्त कर विमल चित्त और धर्मानुरक्त बने, ऐसा वर्णन क्रमशः रायप्पसेणीय, उत्तराध्ययनसूत्र 20/58 में दिया है। यह पुण्य तत्त्व संसार के सर्व जीवों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। संवर और निर्जरा मात्र संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक जीव और उनमें भी मुख्यतः 9 वर्ष से अधिक कर्मभूमिज मनुष्य द्वारा प्राप्त किया जाता है। सयोगी अवस्था तक इस संवर तथा निर्जरा वाले धर्म में पुण्य की नियमा है।

यह पुण्य तत्त्व धर्म के पर्यायवाची के रूप में कहीं-कहीं प्रयोग में आता है। सूत्रकृताङ्गसूत्र के 9वें अध्याय का नाम धर्म है, जो पुण्य के पर्यायवाची के रूप में भी प्रयुक्त हुआ। उत्तराध्ययनसूत्र 13/21 में भी प्रायः पर्यायवाची के समान है। धर्म की भूमिका पुण्य तत्त्व से सम्पन्न होती है। **पुण्य में धर्म की भजना, धर्म में पुण्य की नियमा है।** दशवैकालिकसूत्र की दूसरी चूलिका में गाथा 1 स्पष्ट कर रही है सुपुण्यशाली की ही धर्म में मति होती है। उत्तराध्ययनसूत्र 5/18 तो सकाम मरण के लिए भी सुपुण्य की अनिवार्यता दिखला रही है।

तीन संग्रह के पश्चात् भगवतीसूत्र के शतक 18

उद्देशक 7 एवं ठाणांगसूत्र के तीसरे ठाणे में इन्हीं तीन को परिग्रह भी कहा। ममता मूर्च्छापूर्वक इनका ग्रहण परिग्रह है। ठाणांगसूत्र के तीसरे ठाणे के चौथे उद्देशक में श्रावक का प्रथम मनोरथ परिग्रह-त्याग का है। इस मनोरथ में भी महानिर्जरा एवं महापर्यवसान फल बताया गया। वस्तुओं के सदुपयोग का भाव मन पुण्य है ही और वहीं पर निर्जरा रूपी धर्म भी है। सुपात्रदान से अभयदान की योग्यता वर्धित कर जीव सामायिक, संवर, पौषध रूपी श्रावक के व्रतों में मन-वचन-काय के सुप्रणिधान से मन-वचन-काय का पुण्य बढ़ाता ही है। उत्तराध्ययनसूत्र तीसरे और 10वें अध्याय में भी स्पष्ट है कि पुण्य तत्त्व से ही संवर एवं निर्जरा तत्त्व तक पहुँचा जा सकता है। नौ प्रकार के पुण्य अपनी-अपनी भूमिका की मर्यादानुसार पहले से तेरहवें गुणस्थान तक होते हैं। वे सदा उपादेय हैं, सयोगी अवस्था तक सदा करणीय हैं।

भगवतीसूत्र शतक 1 उद्देशक 7, उपासकदशाङ्गसूत्र के दूसरे अध्ययन में पुण्य और धर्म को उपादेय बताते हुए भी पुण्य और धर्म को भिन्न-भिन्न बताया गया। पुण्य ही धर्म को प्रकट करने में सहयोगी बनता है। तीर्थंकर भी दीक्षा लेने के पूर्व एक वर्ष तक दान करते हैं, फिर संवर धर्म में आगे बढ़ते हैं। मिले हुए का सदुपयोग करते हुए पुण्य का वर्धापन करने वाला भौतिक विकास भी करता है और आध्यात्मिक जीवन की ओर भी अग्रसर होता है। भौतिक विकास तथा आध्यात्मिक जीवन एक ही जीवन के दो पहलू हैं। इनमें विभाजन करना भूल के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। मानव मात्र को सुख और शान्ति चाहिए। **सुख यदि भौतिक विकास है, तो शान्ति आध्यात्मिक जीवन है। शान्ति रहित सुख और सुख रहित शान्ति किसी को भी अभीष्ट नहीं है।** यद्यपि सुख के भोगी को शान्ति नहीं मिलती, परन्तु शान्ति के पुजारी को सुख अवश्य मिलता है। पर यह रहस्य वे ही जानते हैं, जिन्होंने सत्संग के द्वारा सुख की दासता तथा दुःख के भय का अन्त कर चिर शान्ति प्राप्त की है। सुख लोलुपता साधना में भले ही बाधक हो, किन्तु लोलुपता रहित सुख साधना में बाधक नहीं है।

'पुण्यास्रव' यह शब्द आगम में सीधा देखने को नहीं मिलता, किन्तु अर्थापत्ति न्याय से यह शब्द आगम से पूरी तरह प्रमाणित होता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की 57 वीं पृच्छा में संवर से कायगुप्त पापास्रव का निरोध करता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 30वें अध्ययन की छठी गाथा में संयती के पापास्रव का निरोध और इसे ही पूर्व में अनास्रव भी कह दिया। तत्त्वार्थसूत्र के छठे अध्ययन में शुभ योग से पुण्यास्रव का उल्लेख देखने को मिलता है। आस्रव तो मात्र कार्मण वर्गणा का होता है। कार्मण वर्गणा कषाय के कारण स्थिति बन्ध को प्राप्त करती है। उन बन्धी हुई प्रकृतियों में जिन-जिन प्रकृतियों का अनुभाग कषाय से सर्जित होता है, वे पाप कहलाती हैं और जिन-जिन प्रकृतियों का अनुभाग कषाय की कमी अर्थात् आत्म परिणामों से सर्जित होता है, वे पुण्य कहलाती हैं। बन्धने वाली उन प्रकृतियों को जो-जो प्रदेश मिलते हैं, कारण में कार्य का उपचार कर उन-उन प्रदेशों के आस्रव को पापास्रव या पुण्यास्रव कह दिया जाता है। इस प्रकार पापास्रव का कारण कषाय और पुण्यास्रव का कारण कषाय की कमी या आत्मा का धर्म (स्वभाव) है। जो कि तत्त्वार्थसूत्र के आगे के सूत्रों से पूरी तरह स्पष्ट ही है।

तत्त्वार्थसूत्र का छठा अध्ययन-सातावेदनीय (सूत्र 13), शुभ आयु (सूत्र 18, 19), शुभ नाम एवं तीर्थंकर नाम (सूत्र 22, 23) तथा उच्चगोत्र (सूत्र 25) सुस्पष्ट कर रहा है कि दया, दान, सरलता, विनम्रता आदि आत्म गुणों से इन प्रकृतियों का आस्रव होता है। यहाँ मुख्यतः आत्मधर्म का उल्लेख हुआ है अर्थात् पुण्यास्रव पापास्रव को छुड़ाने का कार्य करता है।

कर्म सिद्धान्त से भी यह बात सुस्पष्ट है कि 32 प्रकृतियों का उत्कृष्ट अनुभाग होने पर ही मोहनीय और शेष 3 घाति प्रकृतियों का नाश कर जीव केवलज्ञान प्रकटाता है। केवल शुभ आस्रव अन्तर्मुहूर्त का ही

पर्याप्त है। बारहवें गुणस्थान में केवल शुभ आस्रव से ही केवलज्ञान प्रकट होता है और सयोगी अवस्था में भी शुभास्रव चलता रहता है। योगनिरोध कर केवली भगवान चौदहवें गुणस्थान में 85 प्रकृतियों की सत्ता समाप्त कर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो जाते हैं। इन 85 प्रकृतियों में से 47 प्रकृतियाँ पाप की और 38 प्रकृतियाँ पुण्य की होती हैं। अस्तु, पापास्रव का निरोध कराने वाला पुण्यास्रव उपादेय है। वह संसार में रोकता नहीं मुक्ति में जाने में सहकारी है, सहयोगी है।

पुण्य बन्ध–पुण्य प्रकृतियाँ 42 हैं, जिनके बन्ध के कारण भगवतीसूत्र के शतक 8 उद्देशक 9 में वर्णित हैं। उनमें मुख्यत: खंति, मुत्ति आदि धर्मों की ही प्रधानता है। जो क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं करने पर बन्धती हैं, उन्हीं से वह आस्रव पुण्यास्रव कहलाता है। जघन्य स्थिति बन्ध प्राप्त होने पर उनका अनुभाग उत्कृष्ट होता है।

दिगम्बर परम्परा, श्वेताम्बर परम्परा, आगम, कर्मग्रन्थ, तत्त्वार्थसूत्र सभी समवेत स्वर में जीव के स्वाभाविक गुण क्षमा, सन्तोष, सरलता, विनम्रता से पुण्य प्रकृति बन्ध का कथन करते हैं। दस यति धर्म के प्रथम चार धर्म भी ये ही हैं। अशुभ योग, हीयमान परिणाम, अप्रशस्त अध्यवसाय में जीव अन्तर्मुहूर्त्त से अधिक रह ही नहीं सकता। औदारिक शरीर धारियों में लेश्याएँ भी परिवर्तित होती रहती हैं। कषाय की तीव्रता में कमी से स्वभाव द्वारा प्रशस्त प्रकृतियाँ बन्धती हैं, जो संवर-निर्जरा रूपी धर्म में बाधक नहीं बनती हैं, अपितु सहायक ही बनती हैं। व्रती मनुष्य का गोत्र उच्च ही होता है एवं मनुष्यायु सहित नाम कर्म में मनुष्य गति, पञ्चेन्द्रिय जाति, तीन शरीर, एक अङ्गोपाङ्ग (औदारिक), वज्रऋषभनाराच संहनन, चार शुभ वर्णादि, अगुरुलघु आदि चार, त्रस चौक, स्थिर, शुभ, सुभग, आदेय, यश:कीर्ति से 24 अर्थात् क्षपक श्रेणी चढ़ने में, केवलज्ञान प्राप्त करने में उच्चगोत्र, मनुष्यायु, मनुष्यगति आदि 26 पुण्य प्रकृतियों का उदय अनिवार्य है। समचतुरस्र संस्थान, शुभविहायोगति, सुस्वर और जिननाम भजनीय हैं, हो भी सकते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि मुक्ति गमन में, धर्माराधान में पुण्य प्रकृतियों का बन्ध भी बाधक नहीं, अपितु साधक ही बनता है।

चार घातिकर्मों की सभी प्रकृतियाँ पाप हैं, अघाति कर्मों की 37 प्रकृतियाँ पाप हैं जिनमें से 5 (उपघात और 4 अशुभ वर्णादि) प्रकृतियाँ ध्रुवबन्धी होने से 8वें गुणस्थान के छठे भाग तक प्रति समय बन्धती हैं एवं तेरहवें गुणस्थान तक शरीर के साथ सम्बद्ध होने से उदय में आती रहती हैं। शेष 32 प्रकृतियों का बन्ध 34 अपसरण में ही रुक जाता है, सातवीं नरक के जीव के लिए तिर्यञ्च द्विक और नीच गोत्र का बन्ध आपवादिक है। जब पाप प्रकृति का बन्ध रुक गया तो प्रतिपक्षी पुण्य प्रकृतियाँ ही बन्धती हैं। आत्म-विचारणा, आत्म-अन्वेषण, आत्म-अनुभव, आत्म-रमण, वीतराग भाव, संवर और निर्जरा के विविध आयामों, उपक्रमों के समय सयोगी अवस्था तक शुभ योग, पुण्यास्रव, पुण्य बन्ध रुक ही नहीं सकता। सयोगी अवस्था तक की दसों गुणश्रेणियाँ शुभयोग में ही होती हैं। अत: मन-वचन-काय पुण्यतत्त्व, पुण्यास्रव और पुण्यबन्ध करा जीव के धर्म आराधन, धर्म साधन में सहकारी ही बनता है। धर्माराधन से पुण्य तीव्रतर, तीव्रतम होकर उत्कृष्टता को प्राप्त होता है। पुण्य से धर्म और धर्म से पुण्य का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

पाप, पापास्रव, पापबन्ध हेय हैं, इन तीनों की न्यूनता होने पर पुण्य बढ़ता है, अप्रमत्त अवस्था में पुण्य तत्त्व विशेषता को प्राप्त होता है। सामायिक, पौषध, संयम, संवर आदि की साधना में सावद्य योग का त्याग कर जीव सुप्रणिधान द्वारा शुभ योगी होकर ही अयोगी पद प्राप्त कर सकता है। शुभ योगी होने के लिए हमें सतत जागरूक रहना है।

भक्ति, विनय, बहुमान सङ्ग, प्रभु वीर वाणी रमता चलूँ।
श्रुत का पठन, चिन्तन गहन, उपसर्ग परीषह सहता चलूँ।
वृत्तियाँ हों कम, मिट जाए गम,
मुक्ति का साधन और कहाँ।

◆

10 मई 2022
जिनवाणी 22
ISSN 2249-2011

प्रवचन

सज्जनों की सङ्गति : एक अमृत फल

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा, सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में 10 जनवरी, 2020 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता द्वारा किया गया है। -सम्पादक

जिज्ञासु उपासकों!

आपको धर्मानुराग अच्छा लगता है या धनानुराग? हाँ, सुनने में धर्मानुराग अच्छा है, श्रेष्ठ है, पर आपको धनानुराग श्रेष्ठ लगता है। आपको धर्मानुराग के लिए एक घण्टा निकालना कठिन होता है जबकि धनानुराग के लिए कई घण्टे निकाल लेते हैं। आपको दो दिनों से यही बात कही जा रही है कि यह संसार विष वृक्ष है। संसार है तो विष वृक्ष, लेकिन फिर भी इसमें दो अमृत के फल हैं। एक है मधुरवाणी या सुभाषण और दूसरा है सुसङ्गत।

हमें सुसङ्गत करनी है। क्योंकि सुसङ्गत से जीवन पावन होता है। सुभाषण की बात कल कही जा चुकी है, इसलिये आज केवल नाम-मात्र ले रहा हूँ। सुभाषण की तरह सुसङ्गत भी मीठा-अमृत फल है। सुसङ्गत थोड़ी देर की ही क्यों न हो, वह अच्छी है, श्रेष्ठ है, जीवन को पावन बनाती है। आपने सुना है-''अच्छों की सङ्गत अच्छी, बुरों की सङ्गत बुरी।'' आप कहकर ही न रहें, प्रेक्टिकल करके देखें, प्रयोग करके समझें।

एक स्थान पर चन्दन का चूर्ण पड़ा है, पिता ने कहा-''तुम चन्दन का चूर्ण लेकर आओ।'' पुत्र गया, एक मुट्ठी चन्दन का बुरादा उठाया और पिता को लाकर दे दिया। दूसरी तरफ कोयले की चूरी पड़ी थी। पिता ने कहा-''जाओ, एक मुट्ठी कोयले की चूरी ले आओ।'' वह दूसरी मुट्ठी में कोयले की चूरी भी ले आया। पिता ने कहा-''अब, तुम अपने दोनों हाथों को देखो। तुम्हारे एक हाथ में खुशबू आएगी, दूसरा हाथ काला होगा।'' पिता ने समझाया कि अच्छी सङ्गत चन्दन के चूरे की तरह है और बुरी सङ्गत कोयले की चूरी की तरह। एक हाथ खुशबू दे रहा है तो दूसरे हाथ में कालिख लगी है। बस, यही प्रयोग है-हृदय को सुरभित करना है तो अच्छी सङ्गत करो, अच्छे लोगों के बीच रहो। जिन्होंने सज्जनों की सङ्गत की उनका जीवन सार्थक हो गया। सत्सङ्गति अच्छी है, श्रेष्ठ है, लाभदायक है, जबकि बुरी सङ्गत खराब है, बुरा बनाती है।

अच्छी सङ्गत का अच्छा प्रभाव पड़ता है, बुरी सङ्गत का बुरा प्रभाव होता है। बुरी सङ्गत आपका जीवन बिगाड़ देगी। दूध अच्छा है। एक व्यक्ति दूध में जावण देता है और दूसरा दूध में दो बून्दे नींबू का रस डालता है। प्रयोग छोटा-सा है, लेकिन परिणाम सामने है। दूध में थोड़ा-सा जावण दिया तो वह दूध दही बन जाता है और दो बून्दें नींबू का रस डाल दिया तो दूध बिगड़ जाता है।

आप सत्सङ्गति करोगे, अच्छे लोगों के बीच रहोगे तो समाज में आपका नाम याद किया जाएगा। पुराने लोग तो कहा करते थे-''जाइजो लाख, रहिजो साख।'' भले ही लाखों रुपये चले जायें, किन्तु साख बनी रहनी चाहिए। कबीरदासजी ने ठीक ही कहा-

कबीरा सङ्गत साधु की, ज्यूँ गन्धी का वास।
जो कुछ गन्धी दे नहीं, तो भी वास सुवास।।

सज्जन पुरुष की सङ्गति रहनी चाहिए। बचपन की सङ्गत अच्छा या बुरा बनाती है। जैसी सङ्गत वैसी रङ्गत।

एक पिता ने संन्यासी से पूछा-''मेरे बेटे का कैसा जीवन है?'' संन्यासी ने जवाब में कहा-''उस बच्चे के मित्र को मेरे पास लाओ।'' पिता को आश्चर्य हुआ कि मैं अपने बेटे के बारे में पूछ रहा हूँ और ये संन्यासी बेटे के

मित्र को लाने की बात क्यों कह रहे हैं? संन्यासी ने समाधान देते हुए कहा-''जैसा मित्र वैसा चरित्र।'' यदि आपके बेटे की सङ्गत अच्छी होगी तो बेटा अच्छा होगा और यदि सङ्गत बुरी है तो बेटे का जीवन भी बुरा ही होगा।

यह तो मात्र एक दृष्टान्त है, पर समझने की बात है कि सज्जनों की सङ्गति लाभकारी है, जीवन का परिवर्तन कराने वाली है।

आपने सुना है रोहिणी चोर के पिता ने उसे शिक्षा देते हुए कहा-''बेटा! तुम दो व्यक्तियों से सदा दूर रहना, उनकी सङ्गति तो करना ही नहीं, उनकी बात तक भी नहीं सुनना। दो कौन? एक हैं-प्रभु महावीर और दूसरे हैं-अभयकुमार।'' महावीर महापुरुष हैं तो अभयकुमार बुद्धिमान मन्त्री हैं। इनसे दूर रहने का कारण बताया कि-चाहे जैसा चोर हो अभयकुमार अपने बुद्धि-बल से चोरी करने वाले के मुँह से ही अपराध स्वीकार करवाकर सबूत प्राप्त कर लेगा। महावीर की सङ्गति या बात सुनने से आदमी चोरी करना भूल जाएगा।

देखिए, दोनों में फ़र्क है। एक सबूत उसके मुँह से उगला सकेगा तो दूसरे की सङ्गत से आदमी चोरी करेगा ही नहीं।

एक सेठजी का बेटा बिगड़ गया। ज्यादातर सेठों के बच्चे बिगड़ते जा रहे हैं। क्यों? तो सेठ के बेटे के पास खर्च करने की छूट है। वह चाहे जहाँ, चाहे जितना खर्च कर सकता है जबकि गरीब का बेटा पहले से धन के अभाव में है तो फिजूल खर्ची की बात ही कहाँ? जहाँ छूट है, वहाँ लूट है।

वह सेठ मरणासन्न था तब उसने अपने बेटे से कहा-''बेटा! तू मेरी बात ध्यान से सुनना और उसे मानना। तू ज्यादा कुछ कर सके, न भी कर सके, तो एक बार सन्त को भले ही बाहर से सही, परन्तु हाथ जोड़कर आना।''

बेटे ने सोचा-मरते-मरते पिताजी कह रहे हैं तो स्थानक के बाहर से सन्त-मुनिराज को हाथ जोड़कर आ जाऊँगा।

देखिए, वह रोज जाता, महाराज को देखकर हाथ जोड़कर चला आता। सन्त के दर्शन आत्म-दर्शन में सहायक बनते हैं। अच्छे और सच्चे सन्तों के दर्शन मात्र से आत्म-दर्शन होने लगते हैं। गुरु हस्ती जिनका आप और हमने कल 110वाँ जन्म-दिवस मनाया था, उस अध्यात्मयोगी के दर्शन मात्र से कइयों को आत्मानुभूति होती थी।

उस पुत्र ने पिता की बात मानी, वह नित्य प्रति सन्त-दर्शन करता। थोड़े समय की सङ्गत से उसका जीवन आमूलचूल बदल गया। जीवन में जब परिवर्तन आना प्रारम्भ होता है तब जीवन उच्च से उच्चतर बनता जाता है।

मैं आपसे पूछूँ-आप तो सन्त-समागम में आते हैं, प्रवचन सुनते हैं, कुछ व्रत-नियम भी करते हैं, लेकिन आपके पुत्र, पौत्र और परिवारजन कहाँ हैं? क्या आपको अपनी भावी पीढ़ी अच्छी नहीं बनानी है? यदि आपके पारिवारिक-परिजन सन्त-समागम नहीं करेंगे तो उनमें जो बुरी बातें घर कर गई हैं वे कैसे निकलेंगी?

एक स्थान पर पढ़ने को मिला कि व्यवहार और विचार वातावरण से बनते हैं। जिस घर में बड़े जीकारा देकर बोलते हैं उस घर के बच्चे भी तुकारा लगाकर नहीं बोलते। क्यों? तो वातावरण जैसा है वैसे ही विचार बनेंगे और विचार जैसे हैं वैसा व्यवहार होगा।

एक माता नित्य प्रति देखती है कि बेटा टॉयलेट कक्ष में बहुत टाइम लगाता है। एक दिन माँ ने किसी उपक्रम से टॉयलेट कक्ष में बैठे बेटे को झाँककर देखा कि बेटा तो वहाँ पर कॉकरोच मार-मारकर खाता है।

माताजी ने पूछा, बार-बार पूछा तो बच्चे ने कहा-''मेरे दोस्त नोनवेज खाते हैं, उनका कहना है कि नॉनवेज खाने से शरीर में शक्ति आती है। मुझे मित्रों की तरह खाने को अण्डे नहीं मिलते, इसलिये मैं कॉकरोच मारकर खाता हूँ।''

यह एक बच्चे की कहानी नहीं है। विचार और व्यवहार सङ्गत से बनते हैं तो कुसङ्गत से बिगड़ते भी हैं। आप सज्जनों की सङ्गति करें, सत्पुरुषों की सेवा का

लाभ लें। कहा भी है-

सत्सङ्गत से सुख मिलता है, जीवन का कण-कण खिलता है।।

रोहिणी चोर को उसके पिता ने प्रभु महावीर और अभयकुमार की सङ्गति से दूर रहने को कहा, परन्तु भाग्योदय से प्रभु महावीर के वचन उसके कानों में पड़ ही गये। उन वचनों का स्मरण रहने से ही वह अभयकुमार के बिछाये जाल से बच सका, जो कि उसे पकड़ने के लिए बिछाया गया था। रोहिणी चोर का चिन्तन चला कि प्रभु महावीर के मात्र कुछ वचनों का श्रवण करने से आज मैं सजा से बच गया तो यदि उन प्रभु महावीर की पूर्ण सङ्गति कर लूँ तो जन्म-मरण के जाल से भी बच सकता हूँ। यह चिन्तन कर रोहिणी चोर प्रभु महावीर के पास दीक्षित हो गया। यह प्रभाव है प्रभु के वचनों के श्रवण मात्र का।

आप सज्जनों की सङ्गति करें, सन्त-महात्माओं की सङ्गति करें तो आत्म-दर्शन का लक्ष्य हासिल कर सकेंगे।

आप सुन रहे हैं कि सुभाषण और सुसङ्गति दो अमृत फल हैं। आप सुनते हैं यह अच्छी बात है, अगर आपको अगली पीढ़ी को भी तैयार करना है तो आप उन्हें सत्सङ्गति में लाएँ, आपने यहाँ जो कुछ भी सुना है, उसे अपने बच्चों को सुनाएँ तो आप भावी पीढ़ी को तैयार कर सकेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ.....

जैसी करणी-वैसा फल

श्री शिखरचन्द छाजेड़

संयम-तप साधना के बिना
मेरा कल्याण तीन काल में भी
सम्भव नहीं फरमाते तीर्थंकर भगवान।
जीव स्वयं कर्त्ता स्वयं भोक्ता
यही अटल सिद्धान्त
चले कोई और मञ्ज़िल
किसी और को मिले
बोकर काँटे सुरभित पुष्प खिले
यह सब नामुकिन है सच तो यही कि-
मेरी जैसी करणी, वैसा फल
आज नहीं तो, निश्चित कल
समझ सच्ची, सोच अच्छी
तो ही-सार्थक हर पल, बेहतर हर कल
जीवन सफल...जीवन सफल
यही सम्यग्दर्शन- यही सम्यग्ज्ञान
फरमाते तीर्थंकर भगवान
फरमाते तीर्थंकर भगवान.....।

-करही (मध्यप्रदेश)

यश गाथा रहती अमर सदा

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

जीवन की सन्ध्या के तट पर
आज खड़ा हुआ हूँ झुककर मैं।
स्मृतियों के बियाबान जंगल में
मैं देख रहा खुद का चेहरा।
कितना अतीत पीछे छूटा है
सोच रहा हूँ रुककर मैं।
क्या बोया, क्या काटा मैंने?
क्या खोया, क्या पाया मैंने?
कितना सोया, कितना जागा?
क्या धोया, घाव किसी का मैंने?
लाखों ही आये चले गये, कौन यहाँ जमकर ठहरा?
स्थूल काया है अमर नहीं, यशगाथा रहती अमर यहाँ।
गर चाह रहा कोई भूले नहीं मुझे
ऐसा काम कर जाऊँ जीऊँ औरों के लिए सदा।
पार्थिव तन से मरकर भी मैं।
होऊँ दुनिया से नहीं विदा।

-हुकम, 5 ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

10 मई 2022
जिनवाणी 25
ISSN 2249-2011

प्रवचन

भगवान महावीर का अवदान

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा दिनांक 14 अप्रैल, 2022 को भगवान महावीर जन्मकल्याणक दिवस पर राधानिकुंज-जयपुर में प्रवचन फरमाया, जिसका संकलन श्री गजेन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर ने किया।

-सम्पादक

धर्मानुरागी सज्जनों !

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की स्वर्णिम सुप्रभात सम्पूर्ण जगत में महावीर जयन्ती के रूप में सुविख्यात है। हर चेहरे पर चमक, हर चौराहे पर चर्चा, हर गाँव में गुणगान, हर गली में गीत, हर नगर में नारे, हर स्थानक में स्तुति, हर उपाश्रय में उपासना, हर मन्दिर में मंगलकामना, हर घर में भगवान महावीर के नाम का मंगल उद्घोष, हर दुकान में दुआएँ, हर द्वार पर प्रभु महावीर की दया-दृष्टि आज के दिन साक्षात् रूप में दृष्टिगोचर होती है।

दुनिया में दो तरह के महापुरुष हुए हैं, एक तो वे जिन्होंने संसार को महान् विचार दिये और दूसरे वे जिन्होंने संसार को महान् जीवन दिया। महान् विचार देने वाले चिन्तक, विचारक और दार्शनिक कहलाते हैं लेकिन महान् जीवन देने वाले व्यक्ति मानवता के मसीहा, इन्सानों के ईश्वर, नर के नारायण, विरक्तों के वीतराग, पतितों के परमात्मा, भक्तों के भगवान बन जाते हैं। भगवान महावीर एक ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने संसार को महान् विचार भी दिये हैं तो महान् जीवन भी दिया है। ऐसा अभिनव संगम, ऐसा अद्भुत समन्वय, अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

भगवान महावीर करुणा के निर्झर, मैत्री के मन्दिर, प्रेम के प्रतीक, अध्यात्म के उत्कर्ष, पुरुषार्थ के प्रतिबिम्ब, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की प्रतिकृति, आचरण के आचार्य, जागरण के देवता, चिन्तन के चाँद, साधना के सूत्र, भेद-विज्ञान के ग्रन्थ, मुक्ति के दिव्य-छन्द, साधना के मकरन्द हैं।

भगवान महावीर का योगदान समग्र सृष्टि के लिए सूर्य-प्रकाश की भाँति सदैव प्राप्त होता रहा। इसीलिए अहिंसा के वरदान में, दया के अवदान में, सन्तों के अवधान में, मानव की पहचान में, सृष्टि के सम्मान में, भारत के स्वाभिमान में, भक्तों की जान में, हर सच्चे इंसान में भगवान महावीर का नाम युगों-युगों से अविस्मरणीय है और अनादिकाल तक अविस्मरणीय रहेगा।

बन्धुओं ! भगवान महावीर का अन्तर्मानस मान से नहीं, अपितु मानवता से भरा हुआ था। भगवान महावीर के अन्तर्मानस में माया का नहीं, मर्यादा का महत्त्वपूर्ण स्थान था। भगवान महावीर का अन्तर्मानस कष्टों के झंझावातों से नहीं, करुणा की झंकार से झंकृत होता था। भगवान महावीर का अन्तर्मानस ममता से नहीं, समता से भरा हुआ था। भगवान महावीर का अन्तर्मानस प्रशंसा की प्रस्तुति में, स्तवन की स्तुति में, अपमान की उपस्थिति में, पुद्गल की परिस्थिति में भी सहज रहता था। इसलिए प्रभु महावीर साधारण पुरुष से हटकर असाधारण महापुरुष कहलाये।

प्रभु महावीर जैन नहीं, जिन थे। जैन क्यों नहीं थे उसके भी कारण हैं-

उनकी वाणी में हमारी जिह्वा की तरह कटु वैण नहीं थे। उनके हृदय में श्वेताम्बर और दिगम्बर का झगड़ा नहीं था। उनके मन में बीस और तेरह का रगड़ा नहीं था। वे नियम थोपते नहीं थे। वे हिंसा रोपते नहीं थे। वे नित नये सम्प्रदाय गढ़ते नहीं थे। वे लकीर के फकीर बनकर लड़ते नहीं थे। वे हमारी तरह ढोंगी नहीं थे। वे

दिन के जोगी, रात के भोगी नहीं थे। वे कहना कुछ और करना कुछ, इसके रोगी नहीं थे। वे आडम्बरों से कोसों दूर थे, राग-द्वेष के विजेता थे। सचमुच मेरे महावीर जैन नहीं, जिन थे।

बन्धुओं ! भगवान महावीर एक ऐसी चेतना का नाम है जिसमें राग का रोग नहीं, द्वेष का दोष नहीं, क्लेश का लेश नहीं, कर्म की कालिमा नहीं, क्रोध का कैंसर नहीं, मान का मलेरिया नहीं, माया का मोतियाबिन्द नहीं, लोभ का लकवा नहीं, ईर्ष्या की एसीडीटी नहीं, नफरत का नासूर नहीं, घृणा की घमोरियाँ नहीं, बुराई की बू नहीं थी।

समूचे विश्व को संस्कृति का एक महान् जीवन देने वाले भगवान महावीर का जीवन हम पाँच पक्षों से देख सकते हैं-

(1) सांसारिक पक्ष, (2) शारीरिक पक्ष, (3) सैद्धान्तिक पक्ष, (4) साधना पक्ष और (5) सिद्धि पक्ष।

(1) सांसारिक पक्ष-संसार में जब जीव जन्म धारण करता है तब किसी न किसी परिवार में आकर उत्पन्न होता है। परिवार मनुष्य की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति द्वारा स्थापित संस्था होती है, जहाँ पर मनुष्य आकर आवश्यकताएँ पूरी करने के साथ-साथ जीवन में कुछ ऐसा काम कर जाता है जिससे परिवार का नाम रोशन हो जाता है। भगवान महावीर का सांसारिक पक्ष भी इतना उज्ज्वल, पवित्र है, जितने भी पारिवारिक सदस्य हैं उनके नाम भी इतने श्रेष्ठ और सुन्दर हैं, जिनमें भगवान महावीर के गुणों का दिग्दर्शन होता है। देखिये-

पिता ऋषभदत्त-ऋषि प्रधान परम्परा का दान करने वाले, भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रदत्त परम्परा को आगे ले जाने भगवान महावीर। **पिता सिद्धार्थ**-जिन्होंने संसार के सारे अर्थ सिद्ध कर लिये हैं, ऐसे भगवान महावीर। **माता देवानन्दा**-देवों को आनन्द देने वाले भगवान महावीर। **माता त्रिशला**-त्रि + शल्य, जो माया, निदान, मिथ्यादर्शन इन तीन शल्यों से रहित हैं, ऐसे भगवान महावीर। **भ्राता नन्दीवर्धन**-आनन्द को वर्धापित करने वाले भगवान महावीर। **काका सुपार्श्व**-जिनके पास में रहने पर 'सु' अर्थात् सुख पास आने लगे ऐसे भगवान महावीर। **पुत्री प्रियदर्शना**-दर्शन जिनके प्रियकारी हो, ऐसे प्रभु महावीर। **भगिनी सुदर्शना**-दर्शन जिनके साताकारी हो, ऐसे भगवान महावीर। **पत्नी यशोदा**-यश को देने वाले भगवान महावीर।

आध्यात्मिक परिवार में भी प्रभु महावीर को ऐसे श्रेष्ठ पुरुषों का संयोग मिला जिनके नामों में भी भगवान महावीर के गुणों की विशेषता उजागर होती है।

साधु प्रमुख गौतम गणधर-गौ अर्थात् कामधेनु, त अर्थात् तरु (कल्पवृक्ष), म अर्थात् मणि (चिन्तामणि रत्न), जिनके नाम में समाहित है ऐसे गौतम स्वामी, भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य थे। शिष्य ही इतने श्रेष्ठ हैं तो गुरु तो सर्वश्रेष्ठ होंगे ही।

साध्वी प्रमुखा-चन्दनबाला-चन्दन स्वयं भी शीतल होता है दूसरों को भी शीतलता प्रदान करता है, ऐसे ही भगवान महावीर स्वयं भी शीतल और अन्य प्राणियों को भी शीतलता प्रदान करने वाले थे।

प्रमुख श्रावक आनन्द-जिनका दर्शन आनन्दकारी, जिनका जीवन आनन्दकारी, जिनकी शरण मंगलकारी, ऐसे प्रभु महावीर।

श्राविका प्रमुखा-जयन्ती श्राविका-जिन्होंने अपने जीवन में हमेशा जय-विजय श्री का ही वरण किया, हार का कभी सामना नहीं करना पड़ा, ऐसे कर्म विजेता प्रभु महावीर।

(2) शारीरिक पक्ष-7 हाथ की अवगाहना, सिंह लक्षण, तपे हुए स्वर्ण के समान देह कान्ति, समचतुरस्र संस्थान, वज्रऋषभनाराच संहनन के धारी प्रभु महावीर।

(3) सैद्धान्तिक पक्ष-प्रभु महावीर रहते थे एकान्त में, सोचते थे अनेकान्त से, जीते थे सिद्धान्त से।

प्रभु महावीर के सिद्धान्त ही इस जग में बेजोड़ हैं,

बाकी सब माथा फोड़ है। प्रभु महावीर ने 'अकार' से प्रारम्भ होने वाले तीन सिद्धान्त दिये-1. अहिंसा, 2. अनेकान्त और 3. अपरिग्रह। भगवान महावीर ने कहा-अहिंसा को रखो-मन में, अनेकान्त को रखो-विचार में, स्याद्वाद को रखो-वचन में और अपरिग्रह को रखो-काया में।

(4) साधना पक्ष-प्रभु महावीर का सम्पूर्ण जीवन साधना की अमर ज्योति रहा है। साढ़े बारह साल के छद्मस्थ काल ही सम्पूर्ण साधना के सार को हम तीन सूत्रों में समझें-1. पाने की चाह नहीं, 2. देवे तो तिरस्कार नहीं और 3. मिले तो संग्रह नहीं।

1. पाने की चाह नहीं-भगवान ने कभी भी कुछ भी पाने की चाह नहीं की। मान मिले, अपमान मिले, सम्मान मिले, वे हर परिस्थिति में सम रहते थे।

2. देवे तो तिरस्कार नहीं-संगम देव ने कष्ट दिये, चन्दनबाला ने तीन दिन के बासी उड़द के बाकुले बहराये, परन्तु भगवान ने किसी का भी तिरस्कार नहीं किया।

3. मिले तो संग्रह नहीं-केवलज्ञान का प्रकाश मिलने के बाद भगवान ने उस ज्ञान का स्वयं तक, स्वयं के लिए संग्रह नहीं किया, अपितु 'सव्वजगज्जीवरक्खण-दयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं' अर्थात् सभी जीवों के हितार्थ ज्ञान का प्रकाश पूरे लोक में फैलाया।

(5) सिद्धि पक्ष-प्रभु ने उस सिद्धि स्थान को प्राप्त किया जहाँ जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, चाकर नहीं, ठाकर नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं, ज्योत में ज्योत विराजमान है। महावीराष्टक स्तोत्र की पाँचवीं गाथा में ये पाँचों पक्ष स्पष्टता से परिलक्षित होते हैं-

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर् ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत-भवरागोऽद्भुतगतिर्,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु नः॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुः-शारीरिक पक्ष। ज्ञान निवहो विचित्रात्माऽप्येको-सैद्धान्तिक पक्ष। नृपति वर सिद्धार्थ तनयः अजन्माऽपि-सांसारिक पक्ष। श्रीमान् विगत भवरागो-साधना पक्ष। अद्भुत गतिः-सिद्धि पक्ष।

बन्धुओं! भगवान महावीर के जीवन के दो गुण बड़े जबरदस्त थे। (1) मैं कैसा हूँ-यह कभी भी लोगों को बताने की प्रभु ने कोशिश नहीं की। (2) दूसरा कैसा है-यह जानने की प्रभु ने जिज्ञासा नहीं की।

इन गुण वर्णन को सुनकर हम प्रभु के गुणानुरागी बनने के साथ-साथ गुणग्राही बनें, इसी मंगल मनीषा के साथ।

■

SOME TRUE LINES

Mrs. Minakshi Jain

- The only place where success comes before work is a dictionary.
- Never argue with a fool, people might not notice the difference.
- Listen to your critics. They will keep you focused and innovative.
- Prayer is answered while you are working, not when you are asking.
- Greed is like sea water. The more you drink, more thirstier you are.

-17/729, CHB, Jopdhpur (Raj.)

10 मई 2022
जिनवाणी 28
ISSN 2249-2011

प्रवचन

निर्दोष सामायिक की साधना

श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री अविनाशमुनि जी म.सा. द्वारा, मानसरोवर, जयपुर में 25-26 सितम्बर, 2021 को सामायिक विषय पर आयोजित विद्वत्संगोष्ठी में फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन सुश्री आभाजी जैन, मानसरोवर-जयपुर द्वारा किया गया है। -सम्पादक

जो दु:ख से डरता है वह विराधक है। जो दोष से डरता है वह आराधक है। जो दु:ख से दूर भागे वह भोगी और जो दोष से दूर भागे वह योगी है। परन्तु हमारी अज्ञानता है कि हम दु:ख के विरुद्ध जंग लड़ते हैं और दोष के साथ समझौता करते हैं। इसका नतीजा होता है कि दोष मजबूत बन जाते हैं। इस आदत को बदलने का एक ही विकल्प है-दु:ख के प्रति स्वीकार भाव और दोष के प्रति प्रतिकार भाव।

शिष्य ने गुरुदेव से पूछा-दोषमुक्त कैसे बन सकते हैं? गुरुदेव ने सस्मित मुस्कुराकर एक शब्द में उत्तर देते हुए कहा-'सामायिक दोषमुक्ति का मार्ग है।'

दोष क्या?

अनुभवी साधक दोष के बारे में कथन करते हुए कहते हैं-तीन कसौटियों पर कसने से दोष का परीक्षण होता है। ये 3 कसौटियाँ हैं-(1) जो गुणों को सीमित करे, (2) उद्घाटित गुणों का अभिमान करे और (3) गुणों को आवृत्त करे, वह दोष कहलाता है।

दोष कैसे उत्पन्न होता है?-महान आचार्य वाचकमुख्य उमास्वाति रचित आद्य संस्कृत ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्ययन में औदयिक भाव के 21 भेद बताए हैं। कर्मग्रन्थ के चौथे भाग एवं अनुयोगद्वारसूत्र में कहा औदयिक भाव के कारण मुख्य रूप से दोष उत्पन्न होते हैं। दशवैकालिकसूत्र 8/37 में चार कषाय को दोष बताकर उनसे पुन: जन्म रूपी वृक्ष सिञ्चित होता है, ऐसा वर्णन है।

दोष शब्द आगम में कहाँ-कहाँ?-श्रुत स्थविर के लिए ठाणांग सूत्र के 10वें ठाणे में आवश्यक जानने योग्य तज्जात, मतिभङ्ग आदि दस प्रकार के दोष बताए हैं। ये दस दोष वाद से सम्बन्धित हैं। सूत्रकृताङ्गसूत्र 1/6/26 में **कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं च अज्झत्थ दोसा....** चार कषाय को अध्यात्म दोष कहा है। 1/11/12 में **पभु दोसे निराकिच्चा....** दोषों का निवारण करके विचरण करें। 1/3/4/11-12 में **दोसो तत्थ कुतो सिया?** इस कार्य में क्या दोष है? आवश्यक निर्युक्ति गाथा 880-886 में सूत्र को 32 दोष से रहित कहा। इस प्रकार दोष शब्द का आगम में अनेक स्थानों पर वर्णन मिलता है।

दोषों का स्वरूप

कुछ बिन्दुओं से दोषों का स्वरूप सुगमता से समझ सकते हैं-1. प्रत्येक दोष आगन्तुक है, बाहर से आया हुआ है। 2. प्रत्येक दोष असत् है, उसका अस्तित्व एक दिन समाप्त होने वाला है। 3. प्रत्येक दोष कृत्रिम है, स्वाभाविक नहीं है। औदयिक भाव एवं कषाय की कृत्रिमता से है। 4. प्रत्येक दोष संक्रामक होता है, जैसे कोरोना महामारी संक्रामक है ठीक वैसे ही दोष संक्रामक होते हैं। 5. प्रत्येक दोष स्वाभिमानी है, बिना बुलाये नहीं आता। हमने बुलाया, तब दोष आए। 6. सभी दोष स्व-पुरुषार्थ से छूट सकते हैं। अत: दोष से मुक्ति भी सम्भव है।

निर्दोषता का महत्त्व

दिवसे दिवसे लक्खं देइ, सुवण्णस्स खंडियं एगो।
एगो पुण: सामाइयं करेइ, न पहुप्पए तस्स।।

बीस मण की एक खण्डी होती है, ऐसी लाख-लाख खण्डी सुवर्ण प्रतिदिन कोई दान दे तो वह भी निर्दोष सामायिक की बराबरी नहीं कर सकता।

सामायिक के प्रकार

विशेषावश्यक भाष्य, आवश्यकनिर्युक्ति और अनुयोगद्वार टीका में चार प्रकार की सामायिक बताई है। समता का विकास, विषमता का अन्त और कषाय उपशमन में श्रुत, सम्यक्त्व और चारित्र की महनीय भूमिका है। इस आधार से 4 प्रकार की सामायिक बताई गई है- (अ) श्रुत सामायिक, (ब) समकित सामायिक, (स) देशविरति सामायिक और (द) सर्वविरति सामायिक।

(अ) श्रुत सामायिक-समग्र सुखों का जन्मदाता एवं जो व्यक्ति के खारेपन को दूर करे वह श्रुत है। श्रुत की छाया, मोह माया में उलझती नहीं है। श्रुत संसार के अटकाव और भटकाव मिटाता है। जिससे चारित्र में उज्ज्वलता, चिन्तन में विराट्ता तथा व्यवहार में उत्तमता भरी जाती है वह श्रुत सामायिक है। जो संस्कारों की स्रष्टा होने से ब्रह्म रूप, संस्कारों की संरक्षक होने से विष्णु का प्रतिबिम्ब और विकारों का विनाश करने में सहयोगी रूप होने से महेश स्वरूप है। वीतराग वाणी पाँच ज्ञानों में श्रुतज्ञान को स्व-पर उपकारक बताकर पर-कल्याण में उसे सशक्त साधन कहती है। उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की 25वीं गाथा की पृच्छा में कहा कि इसकी आराधना से दुःख के मूल अज्ञान और संक्लेश का नाश होता है। ठाणांगसूत्र के तीसरे ठाणे में बताया कि अलौकिक भौतिक सौन्दर्य वैभव से समृद्ध देव भी इसका अभ्यास न कर पाने से उद्विग्न रहते हैं। यह श्रुत 33 सागरोपम तक सर्वार्थसिद्ध विमान के देवों की समकित दृढ़ रखने में सहकारी बनता है। उत्तराध्ययनसूत्र 23.53 में कषाय रूपी अग्नि के लिए श्रुत रूपी जल का वर्णन किया तथा 23.58 में मन रूपी दुष्ट अश्व का श्रुत ज्ञान रूपी लगाम से निग्रह करना कहा ही है।

श्रुत सामायिक के दोष

मन-वचन-काया की चञ्चलता से दोष समुत्पन्न होते हैं। दो प्रकार के श्रुत का कथन ठाणांगसूत्र में कहा है-सूत्र रूप और अर्थ रूप। सूत्र रूप में 14 दोष एवं अर्थरूप में 10 दोष लगते हैं। वाइद्धं आदि 14 दोष सूत्र के हैं। अर्थ के दोषों में अन्तिम चार दोष नहीं होते हैं। अर्थागम के इन 10 दोषों को मुख्य रूप से मन, वचन, काया से लगने की अपेक्षा वर्गीकृत करते हैं।

(1) वचन से-वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, घोसहीणं।

(2) मन से-सुट्ठुदिण्णं (देने वाले को), दुट्ठुपडिच्छियं (लेने वाले को)।

(3) काया से-विणयहीणं।

वचन के अनेक दोष अशुद्ध उच्चारण में लग जाते हैं, इसलिये उच्चारण में स्पष्टता होनी जरूरी है अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे-'कुंती' की जगह 'कुत्ती', 'बदरीनाथजी' की जगह 'बंदरीनाथजी', 'कम्मघणमुक्कं' की जगह 'कुम्भकरण का मुक्का', 'पहीणजरमरणा' की जगह 'पीहर जा मरणा', 'आज भारत बन्द रखा जायेगा' की जगह 'आज भारत बन्दर खा जायेगा', 'दाने-दाने में केसर का दम' की जगह 'दाने-दाने में केंसर का दम' इत्यादि।

(ब) समकित सामायिक-साधना का प्राण श्रद्धा है। वृक्ष अपनी जड़ से अलग हो जाए तो सूख जाता है। ऐसे ही साधक श्रद्धा से दूर हो जाए तो साधना का रस सूख जाएगा। यह मत भूलना कि साधना का शुभारम्भ तत्त्व श्रद्धा है। श्रद्धा देव-गुरु-धर्म इन तीन तत्त्वों पर हो। सर्वप्रथम अरिहंत पर श्रद्धा तत्पश्चात् उनके द्वारा प्ररूपित मार्ग/सिद्धान्त पर आस्था हो तो आत्मतत्त्व पर श्रद्धा स्थिर रह सकती है। साधक यदि साधना-साध्य-साधन और जिनवचन पर शंका करेगा तो मुक्ति के मार्ग पर कैसे चलेगा? एक के प्रति अनास्था का अर्थ शेष तीन पर आक्रमण करना है, साध्य के प्रति शंका होगी तो साधन-साधना-जिनवचन भी सन्देह के घेरे में आ जाएगा।

समकित की महत्ता

समकित सामायिक के प्रभाव से जीव संसार के प्रति अरुचि वाला, मुक्ति की भावना वाला तथा ज्ञानगर्भित वैरागी बनता है। जीव मात्र के प्रति अनुकम्पाशील, सिन्धु जितने जन्म-मरण भी मात्र बिन्दु जितने अवशेष रह जाते हैं, अर्द्धपुद्गल परावर्तन में अवश्य मोक्ष चला जाता है, मन्द कषायी हो जाता है। भवों की गिनती प्रारम्भ हो जाती है। यदि समकित में आयुष्य बाँधकर आराधक बन गया तो 15 भव में मोक्ष निश्चित हो जाता है। गौतमस्वामी जैसी उत्कृष्ट करणी भी समकित के अभाव में मोक्ष नहीं दिला पाती है। पूर्वों का ज्ञान भी ज्ञान तभी कहलाता है जब सम्यक्त्व हो अन्यथा वह अज्ञान की कोटि में ही समाविष्ट होता है।

समकित के दोष

समकित के मुख्य रूप से 3 भेद हैं-(1) क्षायिक समकित-यह शुद्ध और स्थिर होती है। (2) उपशम समकित-यह शुद्ध और अस्थिर होती है। (3) क्षयोपशम समकित-अशुद्ध एवं अस्थिर होती है। क्षयोपशम समकित के अशुद्ध होने से इसमें शंका, कांक्षा, भेद सम्पन्नता, कलुष समापन्नता आदि दोष सम्भव है।

चल, मल एवं अगाढ़ दोष भी क्षयोपशम समकित के ही हैं-

(1) चल दोष-धर्म से ऐहिक सुख चाहना, जैसे-शान्तिनाथजी से शान्ति चाहना, पार्श्वनाथजी से चमत्कार चाहना। सामायिक से दुकान में बरकत होती है, परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं। मन्त्र-तन्त्र उपयोग से भौतिक सुख, अच्छी मांगलिक से तबीयत में सुधार, दुकान खोलने से पहले ताले को नमस्कार, बन्द करने के बाद पुन: नमन, हाथ जोड़ना-ये सब चल दोष के प्रकार हैं।

ज्ञानी कहते हैं-धर्म के बदले भौतिक पदार्थ चाहना घर के पालतू कुत्ते के जैसा है, जिसे मालिक से मात्र रोटी मिलती है। धर्म के बदले मात्र पुण्य चाहना घर के नौकर के जैसा है, जिसे तयशुदा पगार मिलती है। धर्म के बदले गुणों की प्राप्ति चाहना सेठ पुत्रवत् है, जिसे पूरी सम्पत्ति विरासत में मिलती है।

(2) मल दोष-छद्मस्थता की तरंग अर्थात् अल्पज्ञान के कारण आगमिक गहन विषयों में शंका करना मल दोष है। जैसे पल्योपम-सागरोपम के काल, 14 पूर्वों के ज्ञान, तीन कोस की मनुष्य की अवगाहना, 1,000 योजन अवगाहना की मछली, मेरु पर्वत आदि के विषय में शंकित होना मल दोष है।

प्रभु ने रात्रिभोजन-त्याग तब कहा जब विद्युत् का आविष्कार भी नहीं हुआ, यह वर्तमान में अप्रासङ्गिक है, कोई मुँहपत्ति बाँधने से धर्म थोड़ी होता है, ईश्वर की आज्ञा बिना पत्ता भी नहीं हिलता, ईश्वर सर्वव्यापी है, जो पाप नहीं करते हैं उन्हें धर्म करने की आवश्यकता नहीं है, आदि मान्यताओं में आबद्ध रहना मल दोष के प्रकार हैं।

(3) अगाढ़ दोष-आसक्तिपूर्वक पदार्थ में ममता रखना अगाढ़ दोष है। गुरु-शिष्य का आपस में मोह, कुटुम्ब, परिवार, माता-पिता आदि से ममत्व बुद्धि अगाढ़ दोष के प्रकार हैं। चल दोष से मल दोष अधिक अशुभ और मल से अगाढ़ दोष अत्यन्त अनिष्ट है। चल दोष कम पानी ज्यादा कीचड़, मल दोष ज्यादा कीचड़ कम पानी और अगाढ़ दोष कीचड़ ही कीचड़ के समान होते हैं।

(स) देशविरति सामायिक-जिसके दिन की शुरुआत सामायिक साधना से और रात्रि की प्रतिक्रमण से हो, वह श्रावक का श्रेष्ठ स्वरूप है। यह सामायिक इंसान को महान् और महान् से भगवान बनाती है। इससे सहजता, सजगता, सरसता, सहभावना की प्राप्ति सुलभ होती है। ठाणांगसूत्र के 4थे ठाणे में दूसरे विश्राम स्थल के रूप में श्रावक की सामायिक का वर्णन है। राजा श्रेणिक को नरक से बचने का उपाय एक श्रावक की सामायिक बतायी। उत्तराध्ययनसूत्र के अध्ययन 6 में कुण्डकौलिक द्वारा अशोक वाटिका में ही सामायिक आराधना कही है। यह श्रावक का प्रथम शिक्षाव्रत है। सामायिक का इतना मूल्य क्यों? गुणचन्द्रगणि रचित

महावीर चरित्तं पत्रांक 334 में कहा कि प्रत्येक जीव के जीवन का मूल्य-अमूल्य है। एक जीव के जीवन का मूल्य-अमूल्य हो तो अनन्त जीवों का मूल्य अनन्त गुणा अमूल्य हो गया। सामायिक में अनन्त जीवों को अभयदान और अपनत्व दान से इसका मूल्य अनन्त गुणा हो जाता है।

निर्दोष सामायिक के लिए चार प्रकार की शुद्धि भी जाननी चाहिए **(1) द्रव्य शुद्धि**-आसन, वस्त्र, रजोहरण, पूँजनी, मुखवस्त्रिका, पुस्तक आदि द्रव्य साधन अल्पारम्भ, अहिंसक एवं उपयोगी हों, क्योंकि उपकरण जीवों की रक्षा के हेतु हैं। कोमल रोयें वाले गुदगुदे आसन, रेशम की बनी पूँजनी, मुँहपत्ति का गहना बनाकर रखना, गन्दे वस्त्र, चटकीले-भटकीले आभूषण आदि धारण करना, चद्दर-चोलपट्टे से अतिरिक्त वस्त्र यथा पेण्ट, शर्ट, पगड़ी, कुर्ता आदि धारण करना द्रव्य अशुद्धि है।

(2) क्षेत्र शुद्धि-जहाँ विचाराधारा टूटती हो, चित्त में चञ्चलता हो, अधिक लड़के-लड़की का आवागमन हो, उस क्षेत्र में सामायिक करने में शुद्धता का रहना प्राय: सम्भव नहीं है। कभी सोचा-विद्यार्थी चौराहे पर न बैठकर एकान्त में क्यों पढ़ता है? अमूल्य रत्नों को तिजोरी में क्यों रखा जाता है? चिड़िया के बच्चों को घौंसले में क्यों रखा जाता है? कारण स्पष्ट है वहाँ एकाग्रता और सुरक्षा सहज ठीक होती है। योग्य क्षेत्र में मानसिक एकाग्रता सहज सध जाती है, अस्तु क्षेत्र शुद्धि अनिवार्य है।

(3) काल शुद्धि-समय का विचार कर जो सामायिक की जाती है वह निर्विघ्न और शुद्ध सामायिक है। यूँ तो समभाव की साधना के लिए कोई काल बुरा अथवा अशुभ नहीं होता, तथापि **काले कालं समायरे** का निर्देश आगमकारों ने दिया है। जैसे सेवा का अवसर है तो उसे छोड़कर सामायिक करना, गृहकार्य/दायित्व से जी चुराकर सामायिक करना, कार्यालय जाते समय गाड़ी में, सामायिक करना काल अशुद्धि है।

(4) भाव शुद्धि-भाव का प्रभाव सर्वव्यापी है। अत: मन-वचन-काया की शुद्धता ही भाव शुद्धि है। त्रियोग की शुद्धि से ही एकाग्रता सधती है। 10 मन के, 10 वचन के और 12 काया के दोषों से रहित सामायिक से ही भावशुद्धि होती है। प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि मन-वचन से ज्यादा दोष काया के क्यों कहे? 'मनोविजेता जगतो विजेता' की बात कहकर मन को सर्वोच्च महत्त्व दिया तो दूसरी तरफ 'जिसकी जिह्वा सुधरी उसका जीवन सुधरा' कहकर वचन अप्रतिम रूप में बताया। फिर काया के दोष अधिक क्यों? उत्तर है-जिनागम में व्यवहार-निश्चय दोनों नय को प्रधानता दी जाती है।

(अ) निश्चय में सबसे बड़ा दोष मिथ्यात्व का होता है, इसलिये आस्रव में प्रथम मिथ्यात्व को रखा है। व्यवहार में सबसे बड़ा दोष हिंसा का है, इसलिये 18 पापों में प्रथम रखा है। सबसे बड़े पाप हिंसा की निवृत्ति के लिए काया की स्थिरता आवश्यक है। भगवतीसूत्र शतक 1 में बताया कि हिंसा की क्रिया, प्राणातिपात की क्रिया मुख्य रूप से काया द्वारा लगती है। अस्तु काय संयम की प्रेरणा दी गई है।

(ब) साधना के मार्ग में आगे पुरुषार्थ करने के लिए सर्वप्रथम काया की चञ्चलता को त्यागना अति आवश्यक है। कारण कि धर्म की शुरुआत काया से होती है, फिर वह धर्म वचन में, तदनन्तर मन में प्रविष्ट होता है। तस्स उत्तरी के पाठ में **ठाणेणं मोणेणं झाणेणं** तथा इच्छामि ठामि के पाठ में **काइओ वाइओ माणसिओ** कहा है। जबकि पाप की शुरुआत मन में, फिर वचन में तत्पश्चात् काया में होती है। धर्म की प्रगति, उन्नति के लिए काया में संयम अति आवश्यक होने से काया सम्बन्धित विशेष जागृति के लक्ष्य से ग्रन्थकारों ने काया के दो दोष अधिक वर्णन किये। इस प्रकार द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव ये चार सहायक तत्त्व हैं जिनसे शुद्ध सामायिक में प्रवेश होता है।

(द) सर्वविरति सामायिक-साधु और श्रावक

दोनों की सामायिक का ध्येय एक ही है। मात्र सामायिक की अवधि और आत्मविकास की दृष्टि में अन्तर है। श्रावक की सामायिक अल्पकालिक एवं 2 करण 3 योग से युक्त होती है, जबकि सर्वविरति सामायिक जीवन पर्यन्त और बिना आगार के 3 करण 3 योग से सम्पादित साधना है। सर्वविरति सामायिक की महत्ता–उत्तराध्ययनसूत्र के अध्ययन 9 की 34वीं गाथा बताती है–'**जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे। एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ।**' लाखों युद्धों को जीतने की अपेक्षा आत्मजय श्रेष्ठ है। आत्मजय हेतु सर्वविरति होना आवश्यक है। साथ ही 44वीं गाथा में कहा–

मासे-मासे तु यो बालो, कुसग्गेण तु भुञ्जए।
न सो सुयक्खाय धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं।।

जो बाल साधक महीने–महीने के तप करता है, कुश के अग्रभाग पर आये, उतना ही आहार सेवन करता है। वह सुआख्यात धर्मरूप संयम की सोलहवीं कला (भाग) की भी बराबरी नहीं कर सकता। इस प्रकार सर्वविरति सामायिक की महत्ता प्रतिपादित की गई है।

भगवतीसूत्र शतक 3 में तीसरे देवलोक के इन्द्र के एक भवतारी होने का कारण सर्वविरति साधुओं की हित, मंगल और शुभाकांक्षी होना बताया। इतना प्रभाव इस दिव्य सामायिक का है, पर मोहनीय कर्म के उदय के प्रभाव से इसमें भी दोष लग सकते हैं। इसके चार प्रकार के दोष–अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार हैं।

अतिक्रम इच्छा जानिए, व्यतिक्रम साधन संग।
अतिचार देश भङ्ग है, अनाचार सर्व भङ्ग।।

अतिक्रम, व्यतिक्रम की पश्चात्ताप से शुद्धि होती है। अतिचार की प्रतिक्रमण से एवं अनाचार की प्रायश्चित्त से शुद्धि होती है।

ठाणांगसूत्र के 10वें ठाणे में दस प्रकार की प्रतिसेवना भी वर्णित है–(1) दर्प, (2) प्रमाद, (3) अनाभोग, (4) आतुर, (5) आपत, (6) शंकित, (7) सहसाकरण, (8) भय, (9) प्रदोष, (10) विमर्श। अतः दोष का स्वरूप जानकर, दोष मुक्ति का ज्ञान कर, निर्दोषता का वरण करने हेतु निर्दोष सामायिक का आचरण कर, शाश्वत सिद्धि को प्राप्त करें। इन्हीं मंगल भावों के साथ.....।

❖

दिव्य साधक तीर्थंकर महावीर

डॉ. रमेश जैन 'बुढलाडा'

महावीर ने जीवन पथ को, नित नूतन आलोक दिया।
पाप ताप सन्ताप भीति के, अन्धकार को रोक दिया।।
महावीर की ज्ञान किरण से, मानवता नित मुस्काये।
अज्ञान तिमिर वसुन्धरा का, मानो सत्वर हट जाये।।
जय हो जय हो सदा विजय हो, महावीर गुणखान की।
अमर रहेगी गौरव गाथा, महावीर भगवान की।।1।।
मेंढक कमल पांखुरी लेकर, समोशरण की ओर बढ़ा।
पूजा अर्चना करूँ प्रभु की, मन मन्दिर उत्साह बढ़ा।।
हर्षित मन रख धर्म भावना, क्रमशः आगे बढ़ता जाता।
किन्तु नृप श्रेणिक हस्ती, पग नीचे कुचला जाता।।
विदित कथा है धर्मध्यान, स्वर्गारोहण प्रस्थान की।
अमर रहेगी गौरव गाथा, महावीर भगवान की।।2।।
दिव्य उपदेशामृत गंगा, भक्ति भाव से प्रवाहित।
विभिन्न धाराओं में बँटकर, आगे बढ़ती अबाधित।।
आचार्यों मुनिराजों द्वारा, अवगाहन पावन जल में।
दिव्य वारि से भक्त जनों को, विमुक्त करती कलिमल में।।
ज्ञान ज्योति सञ्चित भक्तों को, अमर मुक्ति अभियान की।
अमर रहेगी गौरव गाथा, महावीर भगवान की।।3।।
भौतिक जग में राजकुँवर थे, क्यों घोर परीषह सहते।
राजपाट सञ्चालन करते, सुख सागर सरिता में बहते।।
मोक्षमार्ग के आरोही थे, कर्मों की काटी जञ्जीर।
राजपाट को ठोकर मारी, बने तीर्थंकर सिद्ध फकीर।।
जय हो जय हो महाविजय हो जीवन के उत्थान की।
अमर रहेगी गौरव गाथा महावीर भगवान की।।4।।

–जनरल हस्पताल, बुढलाडा, जिला–मानसा (पंजाब)

10 मई 2022
जिनवाणी 33
ISSN 2249-2011

शोधालेख

जैन भक्ति काव्य एवं विनयचन्द चौबीसी#

डॉ. दिलीप धींग

भारतवर्ष की प्राचीन और प्रागैतिहासिक दो परम्पराएँ हैं–श्रमण और वैदिक। वैदिक परम्परा में वेद को प्रमाण माना गया है। वहाँ वेदों को अपौरुषेय मानते हुए पुरुष को प्रमाण नहीं माना गया है। जैन परम्परा में पुरुष यानी जो सर्वज्ञ हैं, तीर्थंकर परमात्मा हैं, वे प्रमाण हैं अर्थात् उनके वचन और प्रवचन प्रमाण हैं, आगम प्रमाण हैं। आगम पौरुषेय हैं, इसलिए आगम की प्रामाणिकता का श्रेय अन्ततः सर्वज्ञ पुरुष यानी तीर्थंकर भगवान को जाता है।

आचार्यों ने सम्पूर्ण आगम साहित्य, आगमतुल्य साहित्य और आगमों पर आधारित साहित्य को चार विषयों में वर्गीकृत किया है। इस वर्गीकरण को अनुयोग कहते हैं। अनुयोग चार हैं– धर्मकथानुयोग, द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग और चरणकरणानुयोग।

धर्मकथा की महिमा

स्वाध्याय का अन्तिम प्रकार है–धर्मकथा। स्वाध्याय के पाँच भेदों में धर्मकथा को अन्तिम रखने का आशय यही है कि व्यक्ति अध्ययन अथवा स्वाध्याय के सभी आवश्यक चरणों को पूरा करके धर्मकथा करने या उपदेश प्रदान करने के योग्य बन सकता है। किसी को धर्मज्ञान और तत्त्वज्ञान कराने से पूर्व स्वयं का नियोजित स्वाध्याय आवश्यक है। इस प्रकार स्वाध्याय के धर्मकथा भेद में सभी अनुयोगों का समावेश माना जाता है। धर्म की कथाओं के माध्यम से तत्त्व (द्रव्य), गणित, संसार का स्वरूप और साधना के सूत्रों का ज्ञान भी होने लगता है। फलतः व्यक्ति अन्य अनुयोगों की ओर अग्रसर होने की भूमिका या पात्रता अर्जित कर सकता है। उसके लिए अन्य अनुयोगों में प्रवेश आसान हो जाता है। जनजीवन में सदाचार की प्रतिष्ठा के लिए धर्मकथाएँ और महापुरुषों के जीवन चरित सदैव मार्गदर्शक बने हैं। दिगम्बर जैन परम्परा के साहित्य में तो धर्मकथानुयोग को प्रथमानुयोग के नाम से ही जाना जाता है। इस अनुयोग की एक और विशेषता यह है कि कथाओं और जीवनियों को काव्य में गूंथा गया है। काव्यमय कथानुयोग के स्वाध्याय से कथा और कविता, दोनों का आनन्द एक साथ लिया जा सकता है।

धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत तीर्थंकर परमात्मा और उनकी शाश्वत परम्परा के सम्पूर्ण कथा साहित्य को लिया जाता है। इसमें धर्म से जुड़ी कथाएँ, आत्मकथाएँ, कहानियाँ, उपन्यास, रूपक, दृष्टान्त, प्रसङ्ग, घटनाएँ, संस्मरण, जीवनियाँ, इतिहास और इनसे सम्बन्धित सभी प्रकार के साहित्य का समावेश होता है। तीर्थंकर आध्यात्मिक जगत में सर्वोच्च और सर्वोत्तम महापुरुष होते हैं। इसलिए प्रथमानुयोग में तीर्थंकर भगवान के जीवन और इतिहास का प्रथम और प्रधान स्थान और सम्मान है।

धर्मकथा के विषय

प्रथमानुयोग में कई विषयों और उप–विषयों का समावेश होता है। आचार्य श्री हस्ती प्रणीत 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' में ऐसे पच्चीस विषय दिये गये हैं– (1) तीर्थंकरों के पूर्वभव, (2) पूर्व भवों की यात्रा, (3) आयु, (4) च्यवन, (5) जन्म, (6) अभिषेक, (7) राज्य, (8) मुनिदीक्षा, (9) तप–साधना, (10) केवलज्ञान की प्राप्ति, (11) प्रथम प्रवचन, (12) शिष्य–शिष्याएँ, (13) गण और गणधर, (14) आर्या प्रवर्तिनी, (15) चतुर्विध संघ का परिमाण, (16)

अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन विद्वत् परिषद् के तत्त्वावधान में 13 दिसम्बर, 2021 को प्रदत्त व्याख्यान।

केवलज्ञानी, (17) मन:पर्यवज्ञानी, (18) अवधिज्ञानी, (19) श्रुतज्ञान एवं द्वादशाङ्गी, (20) वादी, (21) अनुत्तरोपपात वाले जीव, (22) उत्तर वैक्रिय वाले जीव, (23) सिद्धगति को प्राप्त होने वाले जीव, (24) सिद्धि या मोक्ष का मार्ग (25) अन्तिम आराधना इत्यादि।

तीर्थंकर बोलों में भक्ति

तीर्थंकर एक ऐसा पद है, जिसे उत्कृष्ट साधना और अर्हता से ही पाया जा सकता है। जैन ग्रन्थों में इस अर्हता अथवा योग्यता को तीर्थंकर नामक पुण्य कर्म कहा गया है। अनेक भवों की सुदीर्घ साधना के फलस्वरूप तीर्थंकरत्व की प्राप्ति होती है। जैन ग्रन्थों में तीर्थंकर पद की अर्हता हासिल करने के लिए अनेक विशिष्ट साधनाओं के उल्लेख हैं। प्राकृत भाषा के अङ्ग आगम णायाधम्मकहाओ (ज्ञाताधर्मकथा) के आठवें अध्ययन में तीर्थंकर नामगोत्र के उपार्जन के लिए बीस प्रकार की आराधनाएँ बताई गई हैं-(1) अरिहंत (2) सिद्ध (3) प्रवचन (4) गुरु (5) स्थविर (6) बहुश्रुत और (7) तपस्वी मुनि की सेवा-भक्ति (8) निरन्तर ज्ञान में उपयोग (9) निर्दोष सम्यक्त्व का पालन (10) गुणवानों का विनय (11) विधिपूर्वक छह आवश्यकों की आराधना (12) व्रतों का निर्दोष अनुपालन (13) वैराग्यभाव में वृद्धि (14) शक्तिपूर्वक तप-त्याग (15) चतुर्विध संघ को समाधि उत्पन्न कराना (16) त्यागी-व्रतियों की सेवा (17) अपूर्वज्ञान का अभ्यास (18) वीतराग-वाणी पर श्रद्धा (19) सुपात्र दान एवं (20) जिनशासन की प्रभावना करना।

इन बीस बोलों में से आधे बोलों में किसी न किसी रूप में भक्ति को स्थान मिला है। यह आवश्यक नहीं है कि बीसों ही बोलों की आराधना की जाए। किन्हीं एक-दो बोलों की उत्कृष्ट-अनुत्तर साधना तथा अध्यवसायों की अतिशय उच्चता से भी तीर्थंकर बनने की अर्हता अर्जित की जा सकती है। तत्त्वार्थसूत्र और महापुराण में तीर्थंकर बनने के लिए सोलह कारणभूत भावनाओं की आराधना आवश्यक मानी गई हैं। उन सोलह भावनाओं में भी ज्ञाताधर्मकथा के बीस बोलों का अन्तर्भाव हो जाता है अथवा उक्त बीस बोलों में सोलह भावनाओं का समावेश हो जाता है।

अनन्त चौबीसियों की अवधारणा

जैनदर्शन के अनुसार आत्मा के विकास की यात्रा सम्यग्दर्शन से होती है। सम्यग्दर्शन होने के बाद आत्मा का अनन्त संसार सीमित हो जाता है। तीर्थंकर भगवान के पूर्व जन्मों की कहानी भी उनके उसी जन्म से प्रारम्भ मानी जाती है, जिस जन्म में उन्हें सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई हो। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के बाद भी जीव अपने कर्म और आत्म-पुरुषार्थ के अनुसार उत्थान-पतन के अनेक रोमाञ्चक और रहस्यमय पड़ावों से गुजरता है। सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाले जीव साधना करके पन्द्रह प्रकारों से मुक्त हो सकते हैं। उनमें एक कालखण्ड में विभिन्न भेदों से असंख्य जीव मुक्त होते हैं, सिद्धावस्था प्राप्त करते हैं। लेकिन भरत और ऐरावत क्षेत्र में एक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल में केवल चौबीस विशिष्ट साधक ही तीर्थंकर पद प्राप्त करते हैं और मुक्त होते हैं। इस प्रकार अब तक अनन्त चौबीसियाँ हो चुकी हैं अर्थात् जैनधर्म शाश्वत है। यह अनादि काल से है और अनन्त काल तक रहेगा।

तीर्थंकर नाम-गोत्र पुण्य का उपार्जन तीर्थंकर पद प्राप्त करने के पूर्व तीसरे भव में ही होता है। इन तीन भवों की गणना में तीर्थंकर पुण्य प्रकृति की साधना (उपार्जन) का भव और तीर्थंकर का भव भी सम्मिलित है। जिस विशिष्ट आराधना के कारण आत्मा तीर्थंकरत्व के उत्कृष्ट पुण्य का अर्जन करता है, तीर्थंकरों के चरित में उस आराधना अथवा आराधनाओं के उल्लेख मिलते हैं। इन उल्लेखों के साथ साधक को यह प्रेरणा दी जाती है कि वह भी वैसी उत्तम आराधना करे, जिससे तीर्थंकर जैसा पद पा सके। यह सत्य है कि तीर्थंकरत्व की प्राप्ति सबके लिए सुलभ नहीं होती है, फिर भी यदि साधक बीस बोलों या सोलह भावनाओं की अथवा एक या एकाधिक बोलों/भावनाओं की आराधना करता है तो वह आराधना उसके लिए विशिष्ट फलदायी और परम कल्याणकारी सिद्ध होती है।

वर्तमान के 24 तीर्थंकर

श्रमण परम्परा (जैनधर्म) में तीर्थंकर धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले होते हैं। वे सम्पूर्ण लोक में उजास करने वाले, जन-जन का मार्गदर्शन करने वाले तथा जीवमात्र का कल्याण करने वाले सर्वपूज्य सर्वोच्च आध्यात्मिक महापुरुष होते हैं। इस अवसर्पिणी काल में जैनधर्म का प्रारम्भ प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ने किया। उनके बाद तेईस तीर्थंकर और हुए। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। सभी तीर्थंकरों का अपना-अपना धर्मशासन चलता है। वर्तमान में भगवान महावीर का धर्मशासन गतिमान है। इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक चौबीस ही तीर्थंकर सबके लिए सर्वप्रथम पूजनीय और परम आराध्य हैं। चउवीसत्थव (लोगस्स पाठ) में 24 तीर्थंकर भगवान की स्तुति, कीर्तन और वन्दन किया गया है। चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति स्वरूप अनेक आचार्यों और कवियों ने विभिन्न चौबीसियों की अर्थपूर्ण और भावपूर्ण रचना भी की है।

तीर्थंकर जीवनियाँ और चौबीसियाँ

ऐसे प्रात: स्मरणीय और प्रतिपल वन्दनीय तीर्थंकर भगवान के जीवन के बारे में सबकी विशेष जानने की भावना रहती है। वर्तमान में हमारे पास भगवान महावीर का जीवन और उनके वचन-प्रवचन ही विशेष रूप में उपलब्ध हैं। अन्य तेईस तीर्थंकरों के जीवन और उपदेशों में से कुछ तीर्थंकरों के जीवन की विशेष घटनाओं और प्रसङ्गों को ही हम सुरक्षित रख पाए हैं। इसके लिए हमारे पूर्वाचार्यों और विद्वानों ने अकल्पनीय परिश्रम किया है।

तीर्थंकर भगवान के जीवन के बारे में आगमों तथा अन्य ग्रन्थों में विभिन्न दृष्टियों के साथ सामग्री उपलब्ध है। यह सामग्री कहीं व्यवस्थित तो कहीं बिखरी हुई एवं कहीं विशेष प्रसङ्ग के रूप में तो कहीं सूत्र या संकेत रूप में मिलती है। कई आचार्यों ने 63 शलाका पुरुषों एवं 54 महापुरुषों के जीवन पर स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना भी की। तिरेसठ शलाका पुरुष हों या चौपन महापुरुष, सबमें चौबीस तीर्थंकरों का जीवन सर्वप्रथम समाविष्ट है। केवल 24 तीर्थंकरों के जीवन पर भी अनेक जीवन चरित या जीवनियाँ प्रकाशित हुई हैं। आचार्यश्री हस्ती प्रणीत 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' का प्रथम खण्ड 'तीर्थंकर खण्ड' इसका एक उदाहरण है। कुछ तीर्थंकरों के जीवन पर अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं।

विभिन्न क्षेत्रों, कालखण्डों, भाषाओं में लिखे तीर्थंकर चरित मिलते हैं। हर युग में उस युग की भाषा और शैली में तीर्थंकर भगवान का जीवन लिखा, बाँचा और गाया गया है। वर्तमान युग में भी तीर्थंकर भगवान के जीवन के बारे में अनेक लेखकों, कवियों और विद्वानों ने अपनी-अपनी शैली में लिखा तथा उनकी स्तुति और वन्दना की है। हमें भी उस साहित्य को वर्तमान भाव, भाषा और शैली में प्रस्तुत करना चाहिये तथा जो प्रस्तुत है, उसका स्वाध्याय करना चाहिये। तीर्थंकर परमात्मा, उनके जीवन, उनके जीवन-सन्देशों और उनकी परम्परा के बारे में सरल-सटीक साहित्य का सृजन, स्वाध्याय तथा आधुनिक माध्यमों से उनका प्रचार-प्रसार समय की माँग है और आवश्यकता भी। श्रेष्ठ साहित्य को अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए सभी प्रकार के छोटे-बड़े प्रयास किये जाने चाहिये।

ऐसे ही प्रयासों में जैन भक्ति काव्य में सदियों से चौबीसी काव्य की रचनाएँ होती रही हैं। कुछ चौबीसियाँ बहुचर्चित तो कुछ अल्पचर्चित होती हैं। कुछ अचर्चित भी रह जाती हैं। जैन परम्परा में 17वीं सदी के सन्त-कवि आनन्दघनजी की चौबीसी बहुत प्रसिद्ध है। इस प्रसिद्धि का कारण यह है कि आनन्दघन चौबीसी गहन, गम्भीर, अर्थपूर्ण, भावपूर्ण और तत्त्वों का बोध कराने वाली है। कुछ अन्य कवियों द्वारा भी अर्थपूर्ण और भावपूर्ण चौबीसियाँ रची गईं। मेरे पास ऐसी चौबीसियों की पूरी जानकारी नहीं है। इस बीच 2021 में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित विनयचंद चौबीसी पर विवेचनात्मक पुस्तक देखकर मैं प्रमुदित हुआ।

विनयचन्द चौबीसी का विवेचन

'श्री विनयचंद चौबीसी' नाम से इस पुस्तक में विवेचन रत्नसंघ के आठवें आचार्यश्री हीराचन्द्रजी महाराज के मार्गदर्शन में कवि-मनीषी श्री सम्पतराजजी चौधरी ने किया है। इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद दो माह भी नहीं बीते कि 23 मई, 2021 को इसके विवेचक श्री चौधरीजी का 80 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। श्री चौधरीजी पेशे से चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट थे यानी अंकों के साधक थे। आचार्यश्री हस्ती जन्मशती वर्ष 2010 में चौधरीजी का शब्द-साधना के प्रति रुझान हुआ। सबसे पहले उन्होंने मधुर व्याख्यानी कविरत्न श्री गौतममुनिजी म.सा. के मार्गदर्शन में आचार्यश्री हस्तीमलजी महाराज की काव्यमय जीवनी 'मुक्ति का राही' की रचना की। इसके बाद उनकी यह साहित्य यात्रा अन्तिम समय तक गतिमान रही। चौधरीजी ने यह साबित कर दिया कि श्रद्धा और श्रम के बल पर सान्ध्य वेला में भी साहित्य का अरुणोदय हो सकता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने आचार्यश्री हस्ती के अप्रकाशित पद्य साहित्य को प्रकाश में लाने का किया। आचार्यश्री द्वारा भगवान महावीर, जम्बू स्वामी और आचार्य स्थूलिभद्र पर लिखे काव्य अप्रकाशित थे। उन चरित काव्य रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ ढूँढ़कर, आचार्यश्री हीराचन्द्रजी महाराज, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी, तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी एवं विद्वानों से मार्गदर्शन लेकर उन्होंने अपनी विशद व्याख्या सहित उनका प्रकाशन करवाया। उनका यह कार्य सचमुच अभिनन्दनीय है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष चौधरीजी द्वारा लिखित निबन्ध 'आचार्यश्री हस्ती विरचित काव्यपदों में आध्यात्मिकता' हाल ही प्रकाशित 'आचार्य श्री हस्ती का साहित्य और समाज को योगदान, पुस्तक में प्रकाशित हुआ। उन्होंने अपने निबन्ध की शुरुआत ही योगीराज आनन्दघन के पद से की थी। वस्तुत: कवि श्री चौधरीजी ने अपने कविप्रेम और कविता प्रेम को कई रूपों में अभिव्यक्त किया है।

इसी क्रम में श्री चौधरीजी ने विनयचन्द चौबीसी पर भी कार्य किया। उन्होंने स्वयं ने 12 पृष्ठों में काफी जानकारी देने वाली प्रस्तावना लिखी। प्रस्तावना में उन्होंने जैनदर्शन में भक्ति का महत्त्व और भक्तिसाहित्य की विद्वत्तापूर्ण चर्चा की। भक्तिसाहित्य या स्तोत्र/स्तुति साहित्य में उन्होंने प्राकृत, संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रची कुछ चर्चित स्तुतियों का परिचय दिया या उल्लेख किया। क्षेत्रीय भाषाओं की चौबीसियों में विनयचन्द चौबीसी का परिचय देने से पूर्व उन्होंने आनन्दघन चौबीसी और उपाध्याय देवचन्द चौबीसी, इन दो चौबीसियों का उल्लेख किया। ये दोनों ही चौबीसियाँ जैन समाज में, विशेषत: श्वेताम्बर जैन समाज में काफी चर्चित हैं। इन दोनों में भी आनन्दघन चौबीसी विशेष लोकप्रिय हुई।

प्रस्तावना से पूर्व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से लिखित प्रकाशकीय में लिखा गया कि विनयचन्द चौबीसी की कोई व्याख्या उपलब्ध नहीं थी तथा इसके गायकों और रसिकों की संख्या भी कम होती जा रही है, ऐसी स्थिति में चौधरी जी ने जो कार्य किया, वह नि:संदेह स्तुत्य है। उल्लेखनीय है कि चौधरी जी ने काव्य में आए छोटे-से उल्लेख या सन्दर्भ की व्याख्या के लिए आगम, इतिहास और अन्य स्रोतों के आधार पर विस्तृत विवेचना लिखी। इस प्रकार चौबीसी के माध्यम से उन्होंने अपनी शैली में 24 तीर्थंकरों पर अच्छा लेखन कार्य किया।

चौबीसियों का गौरव

साधुमार्गी स्थानकवासी जैन परम्परा के आचार्यगण आनन्दघन चौबीसी से अपना व्याख्यान शुरू करते थे। वर्तमान में इस परम्परा के आचार्यश्री रामलालजी महाराज भी आनन्दघन चौबीसी से व्याख्यान शुरू करते हैं। उन्होंने कुछ काव्यपदों पर व्याख्यान भी दिये हैं। हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य की शृङ्खला में भी कहीं-कहीं आनन्दघन चौबीसी का अपर्याप्त उल्लेख मिलता है। ये सारे तथ्य आनन्दघन चौबीसी की बहुआयामी विस्तृत महिमा को रेखांकित करते हैं।

चौबीसी काव्य को दो भागों में बाँटा जा सकता है–(1) 24 ही तीर्थंकरों पर एक ही चौबीसी और (2) 24 तीर्थंकरों पर 24 काव्यमय स्तुतियों की चौबीसी।

चौबीस तीर्थंकरों के नाम के साथ एक ही काव्य में स्तुति की अनेक रचनाएँ मिलती हैं। ऐसी कुछ चौबीसियाँ स्थानकवासी जैन परम्परा में प्रतिक्रमण साधना के पश्चात् भी गाई जाती हैं। चौधरी जी ने अपनी प्रस्तावना में 'क्षेत्रीय भाषाओं में स्तुति रचनाएँ' उपशीर्षक दिया है। यह शीर्षक बहुत व्यापक अर्थ देता है। यहाँ मुख्यत: चौबीसी पर चर्चा की जा रही है।

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक और तेरापंथ परम्परा में भी कई चौबीसियों की रचनाएँ हुईं और उन पर व्याख्याएँ भी लिखी गई। यदि क्षेत्रीय भाषाओं के श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा के चौबीसी काव्य पर विचार किया जाए तो इन दो के अलावा भी कुछ और कवियों और सन्तों की चौबीसियाँ उल्लेखनीय हैं। सन्त कवि तिलोकऋषिजी की स्तुतियाँ और चौबीसियाँ अर्थ, भाव, भाषा, शिल्प और अभिव्यञ्जना में बेजोड़ और अद्वितीय हैं। उनकी काव्य–साधना अद्‌भुत थी। डॉ. सुषमाजी सिंघवी ने बताया कि उनके काव्य पर डॉ. मंजुलाजी बम्ब ने शोधकार्य भी किया। तिलोकऋषि ने वर्तमान, अतीत और अनागत, तीनों ही तीर्थंकरों की चौबीसियों की रचना की थी। जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी ने भी चौबीसी की रचना की, जो 'जैन सुबोध गुटका' और 'चतुर्थ चौबीसी' के नाम से स्वतन्त्र रूप में भी प्रकाशित है। इन सभी कवियों ने हर चौबीसी के लिए स्वतन्त्र छन्द या भिन्न तर्ज को अपनाया है। यानी चौबीसी के चौबीस ही काव्य 24 प्रकार की रागों में रचे हैं। भक्त कवि विनयचन्दजी ने भी इसी परम्परा का अनुसरण किया है।

विलुप्त होती राग–रागिनियाँ

आज पुरानी राग–रागिनियों के स्वर सुनने को नहीं मिलते हैं। सन्तों के व्याख्यान में भी पुरानी तर्ज के गीत गान कम होते जा रहे हैं। लोग पुरानी रागों से अपरिचित होते जा रहे हैं। आनन्दघन और विनयचन्द के अलावा जब हम तिलोकऋषिजी, जैन दिवाकर चौथमलजी, मरुधरकेसरी श्री मिश्रीमलजी आदि कवियों के काव्य देखते हैं तो उनमें अनेक प्रकार के छन्द, सवैया, ढालें, गजलें, कव्वालियाँ, लावणियाँ, चौपाइयाँ, गीत–गीतिकाएँ देखने–पढ़ने को मिलती हैं। सिर्फ जैन दिवाकर रचित 'जैन सुबोध गुटका' (गीत संग्रह) में लगभग 90 प्रकार की रागें हैं।

हर प्रकार की काव्य–विधा के नियम होते हैं। जिन विधाओं में काव्य रचे गये और लोकप्रिय हुए, वे विधाएँ आज भी प्रचलित और जीवन्त हैं। जैसे वसन्ततिलका (भक्तामर और कल्याण मन्दिर), हरिगीतिका (तुम तरण तारण, दु:ख निवारण), कवित्त (प्रतिक्रमण के छन्द) आदि। पुरानी विधाओं में रचित कुछ गीतों की राग नहीं आने पर भी मात्रा का इतना बढ़िया तालमेल होता है कि कोई भी काव्य–रसिक थोड़ा–सा प्रयास–अभ्यास करके उन्हें गा–गुनगुना सकता है। कोई गीत किसी को सुनाना हो तो स्वर संगीत आदि सब बढ़िया होना चाहिये। लेकिन स्वयं गाए, गुनगुनाए तो स्वयं का भक्तिभाव महत्त्वपूर्ण होता है।

गुरुओं पर चालीसा

पिछली सदी में फिल्मी गीतों की तर्ज पर भी धर्म गीत बनने लगे। इधर पिछले कुछ वर्षों में अपने–अपने गुरुओं, उप–गुरुओं और गुरुणियों पर चालीसा खूब बनने लगे हैं। कुछ साधु–साध्वियों पर तो एक से अधिक चालीसा भी देखने में आये हैं। कुछ सन्तों के नाम से छपे ऐसे चालीसा भी देखने में आये, जो किसी और से लिखवाये गए। सिर्फ स्थानकवासी सन्तों पर मैंने दर्जनों चालीसा देखे हैं। इन चालीसाओं की रचना करने वाला एकाएक 'अच्छा कवि' बन जाता है। जबकि इन चालीसाओं में प्राय: काव्य–तत्त्व का अभाव होता है। अनावश्यक अतिशयोक्तियाँ भी होती हैं। कहीं कहीं किसी सम्प्रदाय विशेष में दीक्षा लेने वाले मुमुक्षुओं के लिए भी उनके गुरु का चालीसा कण्ठस्थ करना जरूरी माना जाने लगा है। इससे श्रेष्ठ कोटि की तीर्थंकर स्तुतियों एवं महत्त्वपूर्ण स्तोत्र–साहित्य की जाने–

अनजाने उपेक्षा हो रही है। पहुँचे हुए सन्तों के प्रभाव की अवहेलना तथा किसी की आस्था को किञ्चित् भी आहत करना मेरा मन्तव्य नहीं है। उल्लेखनीय है नवकारमन्त्र में पहले जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार है, बाद में गुरु को नमस्कार है।

तीर्थंकरभक्तिसाहित्य

हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में रामभक्ति, कृष्णभक्ति, शिवभक्ति, विष्णुभक्ति आदि पर प्रचुर साहित्य है। उस साहित्य के बारे में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के संसार में काफी चर्चा, वार्ता, व्याख्यान, लेखन और शोधकार्य भी होता है। लेकिन जहाँ तक महावीरभक्ति, पार्श्वनाथभक्ति, ऋषभदेवभक्ति या तीर्थंकरभक्ति की बात है, वह हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपेक्षित है। जबकि साहित्यिक दृष्टि से जैनों ने श्रेष्ठ कोटि का भक्ति साहित्य रचा है। इसके अलावा आगमों की एक पक्षीय व्याख्या करने वाले कुछ पण्डित और सन्त भी भक्ति और भक्ति-साहित्य की उपेक्षा करते हैं। जब घर में ही उपेक्षा हो तो पर से क्या अपेक्षा करें?

कवि-परिचय

उक्त चर्चा के परिप्रेक्ष्य में चौधरीजी के कार्य की महत्ता स्वत: सिद्ध हो जाती है। इस चौबीसी के रचनाकार के बारे में अति संक्षिप्त परिचय उपलब्ध है। जिसे उक्त पुस्तक में दिया गया है। उनके नाम से ही उनकी चौबीसी प्रसिद्ध है। उनका पूरा नाम 'विनयचन्द कुम्भट' था। स्थानकवासी परम्परा में आचार्य भूधरजी के भूधरवंश में रत्नसंघीय परम्परा के तीसरे आचार्य श्री हमीरमलजी के आचार्य-काल में श्रावकवर्य श्री विनयचन्दजी ने विक्रम सम्वत् 1906 (सन् 1849) में इस चौबीसी की रचना की थी।

उनके परिचय में उनकी अन्य रचना(ओं) के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई। नवकारमन्त्र की एक चर्चित स्तुति 'आनन्द मंगल करूँ आरती, सन्त चरण की सेवा' विनयचन्दजी की रचित है। पञ्चपरमेष्ठी की यह भावपूर्ण स्तुति तपस्वी सन्त केशूलालजी महाराज की प्रिय प्रार्थनाओं में शुमार थी। उदयपुर के एक स्थानक में आज भी प्रात:कालीन सामूहिक प्रार्थना में इसे रोज गाया जाता है। अनेक भक्त अपने घरों में भी नित्य साधना के दौरान इसे गाते हैं। अनुमान है कि कवि विनयचन्दजी ने और भी गीत रचे होंगे।

चौधरीजी की व्याख्या की महत्ता

परिचय में बताया गया कि विनयचन्दजी प्रज्ञाचक्षु थे, नेत्रज्योतिविहीन थे। हिन्दी साहित्य में नेत्रज्योति-विहीन कवि सूरदास को सब जानते हैं, लेकिन कवि विनयचन्दजी जैन समाज में ही लगभग अपरिचित थे। उनकी विशिष्ट काव्य-साधना को पाठकों तक पहुँचाने के लिए श्री चौधरीजी ने पूरे मनोयोग से शोधपरक और चिन्तनपरक पुरुषार्थ किया। चौधरीजी ने एक गृहस्थ कवि के महत्त्वपूर्ण भक्ति-काव्य से सबको परिचित करवाया। उनका कार्य इसीलिए विशेष महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने एक श्रावक द्वारा रचित भक्तिकाव्य पर स्वतन्त्र लेखन के साथ विशद व्याख्या लिखी। कविता पर कार्य और श्रावक की कविता पर कार्य, ये दोनों ही बिन्दु महत्त्वपूर्ण हैं। उनके कार्य को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने प्रकाशित किया, इसके लिए मण्डल और उनके पदाधिकारी भी धन्यवाद के पात्र हैं। यहाँ प्रसङ्गवश मैं मण्डल से सम्बद्ध अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का भी उल्लेख करना चाहूँगा कि संघ ने कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी को वर्ष 2010 का **आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान** उनकी काव्यकृति 'मुक्ति का राही' के लिए प्रदान किया था। शायद पहली बार यह सम्मान किसी काव्यकृति पर प्रदान किया गया।

कवि और कविता की उपेक्षा

जैन समाज के सन्दर्भ में पहली बात तो यह है कि वर्तमान में जैनदर्शन से स्पर्शित श्रेष्ठ काव्यसृजन बहुत कम हो रहा है। यदि कोई श्रेष्ठ काव्य सृजन कर भी ले तो अकादमिक जगत् में उसकी उपेक्षा होती है। यहाँ श्रेष्ठ, मौलिक और स्तरीय काव्य सृजन की चर्चा की जा रही है, वरना कविताएँ तो खूब लिखी जा रही हैं। मञ्चों पर चल भी रही हैं। इधर, यदि कोई जोड़-तोड़

करके पीएच.डी. की उपाधि हासिल कर ले तो उसका मूल्यांकन होते हुए देखा जाता है। इसके विपरीत यदि कोई बढ़िया काव्य सृजन करे तो भी विश्वविद्यालय की योजनाओं में उसका कोई स्थान नहीं है।

जैन समाज में कविता की श्रेणी में स्वतन्त्र पुरस्कार भी शायद नहीं है। हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में देखें तो हिन्दी साहित्य वाले जैनदर्शन से स्पर्शित काव्य को धार्मिक काव्य कहकर उपेक्षित करते हैं और जैनदर्शन के अकादमिक क्षेत्र में कहा जाता है कि यह कोई शोध-कार्य नहीं है। मेरा निवेदन यह है कि काव्य-सृजन भी जैनविद्या का महत्त्वपूर्ण विषय है। इसका भी यथेष्ट मूल्यांकन होना चाहिये।

चौधरी जी का श्रम

विनयचन्द चौबीसी में हर तीर्थंकर पर एक-एक काव्य है और कुल 24 भक्ति-काव्य हैं। 24 चौबीसियों की 24 पृष्ठीय सामग्री को ढाई सौ पृष्ठों में विस्तारित करने के लिए चौधरी जी ने बहुत श्रम किया। वे स्वयं कवि थे। उन्होंने कवि विनयचन्द के श्रम और काव्य की अतल गहराइयों को जानने के लिए अध्ययन और चिन्तन-मनन करके बढ़िया लेखन किया। शुरू में उन्होंने विनयचन्द चौबीसी के उद्भव का भावपूर्ण काव्यात्मक शब्द-चित्र खींचा है। इस विवेचनात्मक लेखन में उनकी जिनभक्ति, काव्य प्रतिभा और काव्य-प्रेम की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। इतना सब करने के बावजूद चौधरीजी ने अपना परिचय पुस्तक में नहीं दिया। उनका परिचय दिया जाना चाहिये था। एक महत्त्वपूर्ण बात उन्होंने लिखी कि चौबीसी की मूल लय उन्होंने उनके पिता भैंरूलालजी चौधरी से सीखी। यह कथन इस तथ्य का प्रमाण है कि माता-पिता द्वारा बचपन में जो श्रद्धा और संस्कारों का बीजारोपण किया जाता है, वह आगे-पीछे फलदायी बनता है।

इस भक्तिकाव्य को उन्होंने एक गायिका के स्वरों में संगीतबद्ध भी करवाया। भक्तियोग से अनुप्राणित इस चौबीसी को उन्होंने अपने विवेचन में ज्ञान और कर्मयोग से भी युक्त बताया। यानी यह चौबीसी भक्ति, ज्ञान और कर्मयोग तीनों का सुन्दर समन्वय है। विद्वानों का यह कहना ठीक ही है कि जैनदर्शन के त्रिरत्न दर्शन, ज्ञान और चारित्र ही भक्ति, ज्ञान और कर्मयोग में अभिव्यक्त हुए हैं। स्तुति की महिमा बताते हुए चौधरी जी ने ठीक ही लिखा है-''इन स्तुतियों में कवि की आत्मचेतना अपने सर्वांग सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त हुई है। आस्था और भक्ति से परिपूर्ण इन स्तुतियों में काव्य की सुरीली तान, भावना की भव्यता और अनुभूति की सूक्ष्मता है। कवि ने भगवान के गुण कीर्तन के साथ-साथ जैनदर्शन के गूढ़ दार्शनिक तत्त्वों को बड़ी कुशलता के साथ गूंथ कर बताया है कि निज में जिनत्व का शोध करना ही तीर्थंकर की भक्ति का मुख्य उद्देश्य है।''

चौबीसी की भाषा

विवेचक ने इन स्तुतियों की भाषा को मरु-गुर्जर भाषा कहा है। इसका तात्पर्य यह है कि इन स्तुतियों में राजस्थानी और गुजराती का मिलाजुला रूप देखने को मिलता है। इनमें राजस्थानी और गुजराती के शब्द और लहजे दोनों का मिश्रण है और हिन्दी का प्रभाव भी है। साथ ही वर्तमान की खड़ी बोली हिन्दी का पूर्व रूप भी इनमें विद्यमान है। हिन्दी के इस पूर्व रूप को कुछ विद्वानों ने 'पुरानी हिन्दी' कहा है। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन और पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने तो अपभ्रंश भाषा को भी पुरानी हिन्दी ही कहा है।

पुरानी हिन्दी भाषा का जो साहित्य है, वह वर्तमान में हिन्दी साहित्य के पाठ्यक्रमों में हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत ही पढ़ाया जाता है। हिन्दी साहित्य में मीरा, तुलसी, कबीर, रहीम आदि कवियों की रचनाएँ पाठ्यक्रमों में सम्मिलित हैं। जबकि उनकी रचनाएँ वर्तमान की खड़ी बोली हिन्दी की नहीं है। खड़ी बोली हिन्दी को ही हिन्दी माना जाए तो हिन्दी का इतिहास ही सीमित हो जाता है। यह भी एक विडम्बना है या परिवर्तन कि जो बोली थी, उसे अब भाषा कहा जा रहा है और जो भाषाएँ थीं, उन्हें अब बोलियाँ कहा जाने लगा है।

जब हिन्दी का जन्म ही नहीं हुआ, तब प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश आदि समृद्ध भाषाएँ थीं। जब हिन्दी

शैशव अवस्था में थी, तब राजस्थानी, गुजराती आदि भारतीय भाषाएँ यौवन अवस्था में थीं। इसलिए विनयचन्द चौबीसी जैसे पुराने काव्यों का हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भाषाई दृष्टि से अनुशीलन किया जा सकता है। जब कहीं यह चर्चा होती है कि जैन साहित्य का हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती या अन्य भारतीय भाषाओं में क्या, कितना योगदान है, तब इस प्रकार की रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है, किया जाना चाहिये।

विवेचक की दृष्टि

विनयचन्द चौबीसी की हर चौबीसी में कवि ने एक-एक विषय लेकर अपनी काव्याञ्जलि अर्पित की है। 19वें तीर्थंकर मल्लीनाथजी की 11 पदीय स्तुति को छोड़कर हर तीर्थंकर की स्तुति सात-सात पदों में की है। कुछ तीर्थंकरों की स्तुति में तीर्थंकर के जीवन की झलकियाँ दी गई हैं। इस प्रकार की स्तुति कथा-प्रधान होती है। कवि ने निश्चय, व्यवहार, लोक-व्यवहार, दर्शन, सम्यग्दर्शन, तत्त्वज्ञान, सिद्धांत, कर्मवाद, आत्मानुभव आदि विषयों को चौबीसियों में गूंथा है। विवेचक को जहाँ प्रतीत हुआ, वहाँ अपनी असहमति भी जताई है। विशेष तौर पर नवतत्त्वों में जब कवि ने पुण्य को हेय बताया तो कवि ने आगम के आधार पर अपने विवेचन में पुण्य की उपादेयता सिद्ध की। कवि ने पुण्य को हेय क्यों बताया इसका कारण भी विवेचक ने बताया।

लोकभाषा का वैभव

तत्कालीन भाषा में रची इस प्रकार की स्तुतियों के माध्यम से अनेक भूले-बिसरे शब्द जीवित रह जाते हैं। अनेक शब्दों का अर्थबोध एवं भावबोध होता है। अपनी भाषा में या लोकभाषा में भक्ति और भक्तिकाव्य का जो सहज रस पैदा होता है, वह किसी आधुनिक विदेशी भाषा में नहीं हो सकता। लोकभाषा में अनेक काव्यरूपों का नया और चकित कर देने वाला आलोक होता है। स्तुतिकार ने तत्कालीन लोकभाषा का प्रयोग किया। इसलिए इस काव्य में अनेक लोक प्रचलित शब्दों और उपमाओं को लिया गया है। जैसे तीर्थंकर के लिए ठाकुर, दीनदयाल, दीनबन्धु, कृपालु आदि।

लोक प्रचलित उपमाओं में कवि ने पणिहारिन, नटवी, चकवी और पतिव्रता स्त्री के उदाहरण दिये हैं। (15वीं, 10वीं और 8वीं स्तुति)। भक्ति काव्य में सांसारिक प्रेम को परमात्म प्रेम में परिणत होते देखा जाता है। विनयचन्दजी ने भी ऐसा किया है। लौकिक प्रेम की उपमाएँ देता आठवें तीर्थंकर की स्तुति में कवि कहता है-

चन्द्र चकोरन के मन में, गाज आवाज हुए घन में।
प्रिय अभिलाषा त्रिय तन में, तिऊँ बसियै मो चितवन में।

जैसे चकोर के मन में चन्द्र, मेघ में गर्जन और पतिव्रता स्त्री के मन में प्रिय का निवास होता है, वैसे ही कवि के चितवन में परमात्मा विराजमान है। दसवें तीर्थंकर की स्तुति में कवि कहता है-**प्राण पियारौ तुम प्रभु, पतिवरता पति जेम।** प्रिय-मिलन की आस को कवि परमात्म मिलन की प्यास रूप में परिणत कर देता है।

प्रकृति की उपमाएँ

प्रकृति और लोक जीवन से जुड़ी उपमाओं का सुन्दर प्रयोग भी कवि विनयचन्द ने किया है। जैसे पाँचवें तीर्थंकर सुमतिनाथ जिन-स्तवन में प्रकृति के वर्णन के साथ भक्तिभाव दर्शाया गया है। इसमें मधुकर (भौंरा), मालती, कमल और सूरजमूखी के फूल, पपीहा, वर्षा ऋतु आदि की उपमाएँ दी गई हैं।

मधुकर नो मन मोहियोजी, मालती कुसुम सुवास।
त्यूँ मुझ मन मोह्यो सहीजी, जिन महिमा सुविभास।
ज्यूँ पंकज सूरजमुखीजी, विकसे सूरज प्रकाश।
त्यूँ मुझ मनड़ो गह-गहैजी, सुणि जिन चरित हुलास।
पपइयो पिउ पिउ करेजी, जाण वर्षा ऋतु मेह।
त्यूँ मो मन निशदिन रहेजी, जिन सुमिरन सूँ नेह।

प्रभु का पतित पावन रूप

छठे तीर्थंकर पद्मप्रभु की स्तुति में भगवान का पतित पावन रूप उजागर किया गया है। कवि कहता है कि धीवर, कसाई, वेश्या, चोर, लुटेरे और हत्यारे भी

यदि पाप और हिंसा छोड़कर तीर्थंकर परमात्मा की भक्ति करेंगे तो वे पवित्र बन जाएँगे। कैसा भी पापी हो, वह पवित्र बन सकता है। पाप से घृणा करना, पापी से नहीं; जैनधर्म का यह सूत्र आज अधिक प्रासङ्गिक है। इस स्तुति में कवि बड़े-बड़े पाप करने वालों को भी अपने पाप छोड़कर धर्मपथ पर, भक्तिपथ पर आमन्त्रित करता है।

एक तुलना

हर व्यक्ति अपने दु:ख और दुर्भाग्य को मिटाना चाहता है। इसके लिए परमात्मा की भक्ति एक लोकप्रिय और लोकसम्मत माध्यम है। आनंदघन चौबीसी में भगवान विमलनाथ की स्तुति में कहा है-

दु:ख दोहग दूरे टल्यां रे, सुख संपद सु भेट।
धींग धणी माथे कियो रे, कूण गंजे नर खेट।
विमल जिन, दीठां लोयण आज, मारा सीध्या वांछित काज।

कवि बड़े विश्वास से कहता है कि अब मेरे सारे दु:ख और दुर्भाग्य दूर हो गये हैं, टल गये हैं एवं सुख सम्पत्ति से भेंट हो गई है। कवि कहता है कि ''धींग धणी माथे कियो रे, कूण गंजे नर खेट।'' धींग यानी समर्थ, धणी यानी स्वामी अर्थात् जब तीर्थंकर जैसे समर्थ स्वामी की शरण ले ली है तो कोई दुर्जन भी भक्त का बाल बांका नहीं कर सकता है। इसी प्रकार विनयचंद चौबीसी में नमिनाथ भगवान की स्तुति में कहा गया है-

भजन कियां भव-भवना दुष्कृत, दु:ख दुर्भाग्य मिटावे।
काम क्रोध मद मत्सर तृष्णा, दुर्मति निकट न आवे रे।
सुज्ञानी जीवा, भजले रे जिन इकवीसमां।।

यहाँ भी कवि दु:ख और दुर्भाग्य के नष्ट होने का विश्वास व्यक्त कर रहा है। इनके साथ ही कवि कह रहा है कि परमात्मा की भक्ति से काम, क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या, तृष्णा, बुरे विचार आदि दूर रहते हैं। सोलहवें तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथ की स्तुति में भी कवि लौकिक सुख प्राप्ति और अनिष्ट निवारण की अभ्यर्थना करता है। दोनों ही कवियों ने स्वयं की कुशलता के साथ, लोक-मंगल और लोकोत्तर कल्याण की कामना की है।

निष्पत्ति

लोकोत्तर कल्याण के लिए कवि ने अपनी चौबीसियों में आत्मा की अमरता, आत्मा और शरीर की भिन्नता, आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता, आत्मा की अगोचरता, आगम की महत्ता, तीन रत्न, तीन योग, चार समाधि, पाँच व्रत, आठ कर्म एवं कर्मवाद, नवधा भक्ति, नवतत्त्व, अनुभव दशा, वीतराग देव की महिमा, भक्ति से ध्यान में प्रवेश, आत्म-आलोचना, आत्म-सम्बोधन, नाम सुमिरन या जप, अजपाजप आदि अनेक प्रकार के विषय समाविष्ट किये हैं। सातवीं स्तुति में कवि अपने आपको प्रभु का सेवक मानता है। परमात्मा के समक्ष यह दास्य भाव बाहरी दासताओं से मुक्त कर देता है। इस प्रकार भक्तिरस से भरी विनयचन्द चौबीसी का चौधरीजी ने विशद विवेचन करके श्रेष्ठ कोटि के साहित्य में वृद्धि की है। सबको कवि, कविता, भक्ति आदि का महत्त्व बताया है।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 7 अय्या मुदली स्ट्रीय, साहुकारपेट, चेन्नई-

सम्पादकीय पृष्ठ 9 का शेषांश

वाले जीव अधिक विकसित होते हैं अत: उनकी हिंसा में अधिक दोष होता है। भगवतीसूत्र में कहा गया है कि- **एगं इसिं हणमाणे अणंते जीवे हणइ** अर्थात् एक ऋषि का हनन करने वाला अनन्त जीवों का हनन करता है। जहाँ एक जीव के आश्रित अनेक जीवों का जीवन टिका होता है, वहाँ पर उस जीव का प्राणातिपात करने से अनेक जीवों को पीड़ा और कष्ट का अनुभव होता है। इसलिये बुद्धिमानी तो इसी में है कि किसी भी जीव की हिंसा नहीं की जाये। सूत्रकृताङ्गसूत्र में कहा गया है-**एयं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ कंचण** अर्थात् ज्ञानी होने का सार यही है कि वह किसी भी जीव की हिंसा न करे। किन्तु जब उसके बिना जीवन ही नहीं चलता हो तो विवेक एवं यतना से हिंसा का अल्पीकरण करना एक गृहस्थ का कर्त्तव्य है। किन्तु एकेन्द्रिय तथा पञ्चेन्द्रिय की हिंसा को एक समान समझना अज्ञान पूर्ण कुतर्क के सिवाय कुछ भी नहीं है।

10 मई 2022
जिनवाणी 42
ISSN 2249-2011

संगोष्ठी-आलेख

सामायिक और ध्यान*

श्री रणजीत सिंह कूमट (पूर्व आई.ए.एस.)

जैन साधना पद्धति में सामायिक का बड़ा महत्त्व है, क्योंकि यह साधन ही नहीं, साध्य भी है। सामायिक के साथ ध्यान का भी बहुत महत्त्व है और ये दोनों आपस में एक-दूसरे के पूरक ही नहीं पर्यायवाची भी बन जाते हैं। सामायिक को व्रत की श्रेणी में बताया है तो ध्यान को निर्जरा के लिए आन्तरिक तप बताया है। सामायिक क्या है, समता जीवन में कैसे प्राप्त कर सकते हैं, ध्यान क्या है और सामायिक में यह कैसे सहायक हो सकता है इन सब बातों का विवेचन इस लेख में करेंगे।

सामायिक

सामायिक शब्द को विभक्त करते हैं तो शब्द आते हैं-'सम + आय + इक' अर्थात् समता की आय या आवक। जिससे समत्व भाव बने या समता की आवक बने एवं समता में स्थित हों वह सामायिक कहलाती है। सब जीवों पर मैत्रीभाव रखना 'सम' या 'साम' है और साम की आय होना सामायिक है। पापमय प्रवृत्तियों का त्याग तथा निरवद्य योग के आचरण को सम कहते हैं और इस प्रवृत्ति में रहना सामायिक है। इन सब व्युत्पत्तियों का आशय एक ही है-समता, और **समता में रहना ही सामायिक है।** आचार्य हरिभद्र के अनुसार जो साधक त्रस और स्थावर सभी प्राणियों के प्रति समभाव रखता है उसकी सच्चे अर्थों में सामायिक है ऐसा केवली भगवान ने कहा है। कुछ आचार्यों ने सामायिक को मोक्ष प्राप्त करने का साधन बताया है और यहाँ तक कहा है कि भूतकाल और भविष्य में जो मोक्ष गए हैं अथवा जायेंगे, वे सामायिक के माध्यम से ही जायेंगे।

जे केवि गया मोक्खं, जे वि य गच्छन्ति जे गमिस्सन्ति ते सव्वे सामाइयप्पहावेण मुणेयव्वं।

अर्थ-जो भी साधक भूतकाल में मोक्ष गए, वर्तमान में जा रहे हैं और भविष्य में जायेंगे वे सब सामायिक के प्रभाव से गए हैं, जा रहे हैं और जायेंगे।

आचार्य हरिभद्र ने कहा-चाहे श्वेताम्बर हो या दिगम्बर, बुद्ध हो या कोई अन्य वेश का साधक, जिसकी आत्मा कषायमुक्त है, समभाव से वासित है वह निःसन्देह मोक्ष को प्राप्त कर लेगा। स्पष्ट है कि समभाव ही सामायिक साधना का हार्द है और जो समभाव में नहीं है वह अपने लक्ष्य से कोसों दूर है।

आचार्य हरिभद्र ने पञ्चाशक में सुन्दर व्याख्या की है-

समभावो सामाइयं तण-कंचण सत्तुमित्तविसउत्ति।
निरभिस्संगचित्तं, उचियं पवित्तिप्पहाणं च।।

अर्थ-चाहे तृण हो या स्वर्ण, शत्रु हो या मित्र, अपने चित्त को राग-द्वेष की परिणति रहित, शान्त एवं माध्यस्थभाव में रखना और पाप रहित, समभाव युक्त प्रवृत्ति करना ही सामायिक है, क्योंकि समभाव ही सामायिक है।

श्रीमद्भगवद्गीता में समभाव या समता में रहना योग बताया है-

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा, समत्वं योग उच्चते।।

श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 48

अर्थ-हे धनञ्जय! आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर, योग में

* 25-26 सितम्बर, 2021 को जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु प्रेषित आलेख।

स्थित होकर कर्मों को कर। यह समत्वभाव ही योग नाम से कहा जाता है। इससे पूर्व श्रीकृष्ण ने इसी अध्याय में बताया है-

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 38

अर्थ-सुख-दुःख, लाभ-हानि और जय-पराजय को समान समझकर उसके उपरान्त युद्ध के लिए तैयार हो। इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को प्राप्त नहीं होगा।

भगवतीसूत्र में वर्णन

भगवतीसूत्र में गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से पूछा-सामायिक क्या है और सामायिक का अर्थ क्या है? भगवान ने उत्तर दिया-आत्मा ही सामायिक है और आत्मा ही सामायिक का अर्थ है।

इस प्रश्नोत्तर का अर्थ बहुत ही गूढ़ है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि आत्मा में स्थित होना और आत्मा में समाहित होना ही सामायिक है। समय का अर्थ है आत्मा और सामायिक का अर्थ है आत्मा में होना या आत्मा में स्थित होना। जो आत्मा में स्थित है वह बाहरी स्थितियों से परे होकर समभाव में स्थित हो जाता है, क्योंकि जो बाहरी वस्तुओं से आकृष्ट नहीं है, वह उन वस्तुओं के प्रति राग-द्वेष से भी दूर है। जो राग-द्वेष से दूर है वह समभाव में है और जैसा कि ऊपर कहा है समभाव ही सामायिक है, अतः आत्मा में स्थित होना ही सामायिक है।

वस्तुतः राग-द्वेष ही आत्मा को कलुषित करते हैं और इन्हीं से सुख-दुःख के द्वन्द्व में प्रवेश होता है। सुख-दुःख के द्वन्द्व से मुक्त होना है तो वस्तुओं, व्यक्तियों और बाहरी आकर्षण से मुक्त होना होगा, उनके प्रति मन में उठने वाले आकर्षण से बचना होगा। तृण और स्वर्ण के प्रति समभाव में आना होगा। जब बाहरी आकर्षण से मुक्त होंगे तब ही आत्मा में स्थित हो पायेंगे। अतः आत्मा में स्थित होना ही सच्ची सामायिक है।

अगर आत्मा ही सामायिक है तो अलग से सामायिक करने को क्यों कहा जाता है? सामायिक करने की तो वस्तु रही नहीं। ओशो ने कहा-सामायिक की नहीं जा सकती, आप सामायिक में हो सकते हैं, क्योंकि करने का मतलब है आप बाहर चले गए, क्योंकि कृत्य बाहर ले जाता है। सामायिक एक अवस्था है, अपने में डूबने की अवस्था; अपने में बन्द हो जाने की अवस्था; अपने को सब तरफ से तोड़ लेने की, अलग कर लेने की अवस्था। (आज का आनन्द, 15/10/2021, पृष्ठ 3)

द्रव्य और भाव सामायिक

सामायिक को दो प्रकार से समझा जा सकता है-द्रव्य सामायिक और भाव सामायिक। गृहस्थ पुरुष एवं स्त्रियाँ प्राय: साधना स्वरूप द्रव्य सामायिक करते हैं जो एक मुहूर्त्त (48 मिनट) के लिए निश्चित वेशभूषा में निर्विघ्न स्थान पर सावद्य योग में प्रवृत्त न होने का नियम लेकर की जाती है। वे अपने मन, वचन और शरीर को पापमय प्रवृत्ति से हटा कर धर्ममय प्रवृत्ति में लगाते हैं जैसे ईश-भजन, माला, स्तोत्र वाचन, स्वाध्याय, ध्यान आदि। यह एक तरह से सांसारिक व्यवहार से निवृत्ति और धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति है। इस काल में वे कषायों से मुक्त हो समभाव में रहने का अभ्यास किया जाता हैं। जितनी देर समभाव में रहते हैं उतनी देर समता की आय होती है और यह ही सामायिक कहलाती है। इसमें अपने आप को सांसारिक कार्यों से अलग कर समता में रहने का अभ्यास किया जाता है और धीरे-धीरे लम्बे समय तक समता में रहने का प्रयास किया जाता है। कुछ लोग दिन में एक सामायिक का नियम लेकर अपने नियम को पूर्ण करते हैं, तो कुछ लोग जितना समय मिले उतनी देर सामायिक कर समता में रहने का प्रयास करते हैं। इसमें वेश, स्थान और समय को महत्त्व दिया गया है। आचार्य हेमचन्द्र ने योगशास्त्र में द्रव्य प्रधान सामायिक को इस प्रकार बताया है-

त्यक्तार्त्तरौद्रध्यानस्य, त्यक्तसावद्यकर्मणः।
मुहूर्त्तं समतायास्तं सामायिकव्रतं विदुः।

अर्थ–सब प्रकार के अशुभ आर्त्त-रौद्र ध्यान और सावद्य कार्यों का परित्याग करके एक मुहूर्त्त तक समभाव में (आत्म चिन्तन, समत्व चिन्तन एवं स्वाध्याय आदि में) रहना ही गृहस्थ का सामायिक व्रत है।

भाव सामायिक

स्वभाव में लीन होना, बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बनना, बाहरी पदार्थों से ममता हटा कर समता में निवास करना भाव सामायिक है। इसमें परिवेश, स्थान और समय गौण हैं। जितनी देर समता की आय हुई उतनी देर सामायिक हुई। इसमें गिनती नहीं भाव प्रमुख हैं। कषायों से निवृत्ति, समता में प्रवृत्ति और अन्तर्मुखी बनकर सन्तोष के सागर में डुबकी मुक्ति रस का प्रसाद चखाती है और धीरे-धीरे वैराग्य भाव में प्रवेश होता है। सांसारिक भोगों से उदासीनता, पाप कर्मों से निवृत्ति तथा कषायों का शमन ही सही रूप से भाव सामायिक है। समभाव के साधक को यह गाथा सही प्रेरणा देती है–

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ।।

–उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 19, गाथा 91

अर्थ–लाभ की परिस्थिति हो या अलाभ की, सुखमय स्थिति हो या दुःखमय, जीवन लम्बा चले या आज ही मृत्यु उपस्थित हो जाए, कोई निंदा करे या प्रशंसा, कोई सम्मान करे या अपमान, सभी परिस्थितियों में सामायिक का साधक सम रहे, स्वस्थ और माध्यस्थ बना रहे।

इसी प्रकार मैत्री, प्रमोद, कारुण्य एवं माध्यस्थ भावनाओं से अपने अन्तःकरण को आप्लावित करते रहना भाव सामायिक है। इन भावनाओं से व्यक्ति समभाव का साधक बन जाता है। आचार्य अमितगति का निम्नलिखित श्लोक सदा याद रखकर अनुसरण करने लायक है–

सत्त्वेषु मैत्रीं, गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव।।

अर्थ–हे परमात्मन् ! मेरी यह भावना है कि मेरी आत्मा सदैव प्राणिमात्र के प्रति मैत्रीभाव, गुणीजनों के प्रति प्रमोदभाव, दुःखी जीवों के प्रति करुणाभाव एवं विपरीत आचरण करने वालों के प्रति माध्यस्थ भाव धारण करें।

ध्यान

चित्त को तनावों से मुक्त करा कर समाधि या शान्ति में लाना सभी धार्मिक पद्धतियों का लक्ष्य रहा है। चित्त को निराकुल, निर्विकार, अनुद्विग्न और निर्विकल्प या समत्वयुक्त बनाने में ध्यान का प्रमुख स्थान है।

वासनाओं और इन्द्रियों के वशीभूत मन चञ्चल ही नहीं विघटित और कमजोर होता है। ध्यान के माध्यम से इस विघटन एवं कमजोरी को समाप्त कर मन को सशक्त और संकल्प-विकल्प से मुक्त किया जाता है। बाहर के बिखराव से हट कर संघटित चेतना से शक्ति का ह्रास रुकता है और नई शक्ति का स्फुरण होता है। ध्यान का मुख्य उद्देश्य है स्व की पहचान, जो जीवन और चेतना का स्रोत है। हमारा स्रोत चेतन मन ही नहीं अवचेतन मन भी है और हम अवचेतन मन से अनभिज्ञ हैं। जिसे हम जानते हैं उसके तो मालिक बन जाते हैं और उससे सचेत भी रहते हैं, परन्तु जिसे नहीं जानते वह हम पर कब हावी हो जाता है यह पता ही नहीं लगता। ध्यान से अवचेतन मन तक जब पहुँच जाते हैं तो अवचेतन मन की ताकत गल जाती है और सचेतन मन ताकतवर महसूस करता है और तब मन की व्याकुलता क्षीण होने से मन शान्त हो जाता है।

ध्यान की दो परिभाषाएँ सामने आती हैं। महर्षि पतञ्जलि के अनुसार–

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'

–योगदर्शन, अध्याय 1, सूत्र 1

अर्थात् चित्त की वृत्ति के निरोध को योग कहा है।

आचार्य उमास्वाति के अनुसार ध्यान की यह

परिभाषा मिलती है-

'उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानम्।'

-तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय 9, सूत्र 27

अर्थ-उत्तम संहनन वाले व्यक्ति द्वारा किसी एक विषय में एकाग्र चिन्तन और निरोध को ध्यान कहते हैं।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि एकाग्र चिन्तन-निरोध को ध्यान कहते हैं, परन्तु प्रत्येक एकाग्रता समाधि का साधन नहीं है। अकुशल कार्यों में भी एकाग्रता होती है। इसलिए जैन शास्त्रों में ध्यान के चार प्रकार बताए हैं जिनमें दो अकुशल ध्यान हैं और दो कुशल। अकुशल ध्यान हैं-आर्त्त-ध्यान तथा रौद्र-ध्यान। कुशल ध्यान हैं-धर्म-ध्यान एवं शुक्ल-ध्यान।

आर्त्त-ध्यान में व्यक्ति या वस्तुओं की प्राप्ति या वियोग में राग-द्वेष और रुदन किया जाता है। रौद्र-ध्यान में व्यक्ति या वस्तुओं की प्राप्ति या वियोग के लिए रोष, आक्रामक आयोजन, हिंसा और क्रोध की एकाग्रता की जाती है। धर्म-ध्यान में भौतिक वस्तुओं से विरक्त हो स्वरूप में स्थित होने के लिए एकाग्र होना होता है। चिन्तन से परे जाकर निर्विकार एवं निर्विकल्प हो जाने को शुक्लध्यान कहा है जो ध्यान की उच्चस्थ स्थिति बताई गई है।

धर्मध्यान

धर्म-ध्यान के चार भेद हैं-

1. आज्ञा विचय 2. अपाय विचय
3. विपाक विचय 4. संस्थान विचय

आज्ञाविचय

ध्यान में स्व को देखना है और इस देखने की प्रक्रिया में स्व की गहराई में जाने पर स्व का बोध होता है और स्व के अन्तर से स्वयं की आवाज़ सुनाई पड़ती है। स्वयं में आज्ञा का स्फुरण होता है और प्रज्ञा जगती है। यह अपने शरीर पर हो रही संवेदना को देखने से और स्पष्ट होती है। जो हो रहा है उसे वैसे ही जानना और राग-द्वेष जगाये बिना अपनी प्रज्ञा से आज्ञा को जानना और समझना आज्ञाविचय ध्यान है। आचाराङ्गसूत्र में उल्लेख है कि ध्यान में साधक देह के भीतर देखता है, पृथक्-पृथक् करके पुनः पुनः देखता है, प्रति लेखन करता है वह पण्डित है। इस ध्यान का लक्षण 'आज्ञारुचि' है अर्थात् जो भी आज्ञा स्फुरित हो रही है उसमें रुचि रखना और उसके प्रति सजग होना आज्ञाविचय ध्यान का लक्षण है।

अपायविचय

ध्यान में स्व के श्वास को देखने से शुरू कर शरीर के अङ्गों को पृथक्-पृथक् कर देखने पर शरीर पर हो रही संवेदना को समता पूर्वक देखना है। इस प्रक्रिया के साथ भाव या विचार आना अस्वाभाविक नहीं है। लाख कोशिश करने पर भी विचार आते हैं (विचार करना नहीं है विचार आते हैं) और वे राग-द्वेष जनित भी हो सकते हैं। परन्तु उस वक्त जागरूक होकर विचारों से अलिप्त रहना और द्रष्टाभाव में रहकर राग-द्वेष से उपरत हो उन विचारों से मुक्त होना अपायविचय ध्यान है। विचार या भावों की उत्पत्ति मन-मस्तिष्क में होती है अतः विचार करने की अपेक्षा विचारों अथवा भावों को देखना मन को देखना है। हम अपने मन की वृत्ति के प्रति जागरूक रहेंगे तो राग-द्वेष जनित विचारों के साथ बहने की बजाय उन विचारों से मुक्त हो जायेंगे। इसे मन की वृत्ति पर ध्यान लगाना कह सकते हैं। अपाय विचय धर्म-ध्यान का लक्षण 'निसर्ग रुचि' है जिसका अर्थ है निसर्ग (प्रकृति) के अनुसार जो भी अनुभव में आ रहा है उसके प्रति द्रष्टाभाव रखना।

विपाकविचय

कर्मों के विपाक से शरीर पर संवेदना उत्पन्न होती है अतः उस विपाक को संवेदना के माध्यम से जानना ही विपाकविचय है। कर्मों का फल वेदना के रूप में शरीर पर प्रकट होता है और अन्तर्मुखी होकर शरीर पर हो रही संवेदना पर ध्यान देते हैं तो कभी सुखद संवेदना की अनुभूति होती है तो कभी दुःखद की होती है। जैसी भी संवेदना शरीर पर जाग रही है उसे केवल जानना है और द्रष्टाभाव में रहते हुए उसके अनित्य स्वभाव को समझना

है। स्वयं अनुभव करना है कि संवेदना जगती है और स्वतः ही समाप्त हो जाती है। कोई भी संवेदना अधिक देर नहीं चलती। उदय-व्यय का क्रम निरन्तर चलता है और यही वस्तुओं का स्वभाव है। संसार की अनित्यता और क्षणिकता इसी विपाकविचय ध्यान से ज्ञात होती है और इसी से अनित्य भावना पुष्ट होती है। संसार की अनित्यता अभी तक पढ़ने और सुनने में आती थी जो हमारी मान्यता बन गई थी, परन्तु अब अनुभव से जान रहे हैं कि संसार अनित्य है। यह जानना प्रत्यक्ष ज्ञान है। विपाकविचय का लक्षण 'सूत्र रुचि' है जिसका अर्थ है श्रुत ज्ञान (स्वयंसिद्ध ज्ञान) में रुचि रखना। स्व के अनुभव से जान रहे हैं वही सच्चा ज्ञान है।

संस्थानविचय

हमारा पूरा शरीर ही संस्थान है और इसका चिन्तन कर शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्ग की बनावट को जानना, इसकी नश्वरता को पहचानना और द्रष्टाभाव में रहकर अनित्य बोध जगाना संस्थानविचय है। इसका लक्षण 'प्रगाढ़ रुचि' है, जिसका अर्थ है शरीर का चिन्तन करते वक्त गहराई से गहराई में जाना, शरीर को तार-तार कर खोलना। जब शरीर पर ध्यान कर रहे हैं तब जो भी अनुभूति प्राप्त हो उसके प्रति न राग जगाना है, न द्वेष। मात्र द्रष्टाभाव में रह कर शरीर और शरीर के धर्म को जानना है और शरीर के प्रति मोह और मूर्च्छा से मुक्त होना है।

शरीर को देखते वक्त हमारा पूरा ध्यान शरीर पर या शरीर के किसी भाग पर केन्द्रित कर बिना राग-द्वेष के समभाव से देखने को संस्थान विचय कहते हैं। शरीर को देखने के लिए पहले श्वास के आवागमन पर ध्यान केन्द्रित किया जाए और केवल श्वास का आवागमन जाना जाये और उसकी पूरी समझ हो। ध्यान के दूसरे चरण में साधक चल रहा है, बैठा है, लेट रहा है, खड़ा है आदि क्रिया के समय में वह जान रहा है कि मैं चल रहा हूँ, बैठा हूँ, लेटा हूँ, खड़ा हूँ आदि। जिस भी अवस्था में है, साधक को उस अवस्था की अवगति है और जो भी संवेदना का उदय-व्यय हो रहा है उसे बिना राग-द्वेष के जान रहा है और केवल जानता है कि यह शरीर है। शरीर को अन्दर से, बाहर से एवं अन्दर-बाहर दोनों तरह से जानता है। यह जानकारी अनित्य-बोध के साथ है कि जो कुछ वह जान रहा है, अनुभव कर रहा है वह सब अनित्य है, बदल रहा है और इस अनित्य से कोई राग द्वेष नहीं है। यही समता या समत्व में स्थापित करता है जिसे सामायिक कहते हैं। ध्यान से समता में आना और स्व में स्थित होना सामायिक है।

शुक्ल ध्यान

यह सबसे उच्चकोटि का ध्यान है और जो साधना में आगे बढ़ गए हैं वे ही कर सकते हैं। शुक्ल का अर्थ है सफेद अर्थात् जिस ध्यान में कोई रंग नहीं है और सब चीज शुद्ध-सफेद दिख रही है वह शुक्ल ध्यान है। रंग कषाय के होते हैं और जब ध्यान में कोई कषाय नहीं है तो वह शुक्ल ध्यान है। जो साधक उच्च श्रेणि में चढ़ जाते हैं और कषाय क्षीण या उपशम हो जाते हैं वे ही इस प्रकार के ध्यान कर पाते हैं। इसके भी चार भेद हैं-

1. पृथकत्व वितर्क सविचार
2. एकत्व वितर्क अविचार
3. सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति
4. समुच्छिन्न क्रिया अप्रतिपाती या व्युपरत क्रिया निवृत्ति

(i) पृथक्त्व वितर्क सविचार

शरीर के हर अङ्ग के पृथक्-पृथक् हिस्से कर अणु-अणु पर ध्यान केन्द्रित करना और उन अङ्गों पर हो रही संवेदना का सत्य जानना और जो प्रज्ञा प्रकट हो रही है उसे वितर्क या श्रुत ज्ञान कहते हैं, उससे साक्षात्कार होना पृथक्त्व वितर्क सविचार ध्यान कहा है। इसमें अभी विचार चल रहे हैं, इसलिए इसे सविचार कहा है।

(ii) एकत्व वितर्क अविचार

जब ध्यान की एकाग्रता तीव्र हो जाती है और पृथक्-पृथक् कर ध्यान करने पर एक ही बात सामने आती है कि समस्त पदार्थों में एक ही गुण प्रकट हो रहा

है–उत्पाद, व्यय अर्थात् अनित्यता तो एकत्व श्रुत ज्ञान प्रकट होता है कि यह शरीर और दृश्य पदार्थ अनित्य हैं और चेतन तत्त्व की एकता परम तत्त्व से मिलती है जो ध्रुव है तो एकत्व की अनुभूति होने लगती है। इस प्रकार साधक स्व तत्त्व से एकाकार होकर शरीर तत्त्व से अलग हो जाता है। मोह का आवरण हटने से स्व–स्वरूप में स्थित हो जाता है। यही कैवल्य की और अविचार होने की स्थिति है जहाँ द्रष्टा, दृश्य और दर्शन एक हो जाते हैं और केवल दर्शन रह जाता है। इसी प्रकार ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय एक हो जाते हैं और केवल ज्ञान रह जाता है। इस अवस्था में निज स्वरूप का ही ध्यान रहता है और इस एकत्व की स्थिति को एकत्व वितर्क अविचार शुक्ल ध्यान कहा है। यही परम केवल ज्ञान और केवल दर्शन के पूर्व की स्थिति है।

(iii) सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति

मन, वचन, काया के योग का निरोध जब इस पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है कि मात्र श्वासोच्छ्वास रह जाता है उस स्थिति को सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति कहते हैं। यह तीसरा शुक्ल ध्यान है।

(iv) समुच्छिन्न क्रिया अप्रतिपाती या व्युपरत क्रिया निवृत्ति

जब शरीर की सूक्ष्म क्रिया भी बन्द हो जाती है और शरीर के प्रदेश सर्वथा निष्प्रकम्प हो जाते हैं उसे समुच्छिन्न क्रिया निवृत्ति ध्यान कहते हैं। यह शरीर की अन्तिम स्थिति है और निर्वाण प्राप्त करने के ठीक पूर्व की स्थिति है।

सामायिक और ध्यान की परस्पर सम्बद्धता

सामायिक और ध्यान एक–दूसरे के पूरक हैं। ध्यान से समता प्राप्त कर साधक सामायिक अथवा समता की स्थिति में आते हैं और सामायिक में समता से स्व–तत्त्व में स्थापित होते हैं। एकाग्रता प्राप्त कर योगों का निरोध करें अथवा सावद्य योगों का निरोध कर निरवद्य योग में स्थित हों, दोनों का उद्देश्य एक ही है। सामायिक में ध्यान और ध्यान से सामायिक परस्पर पुष्ट होते हैं और दोनों ही मुक्ति के मार्ग हैं। अत: सामायिक में ध्यान को अपना कर अन्तर्मुखी बनें और समता, सिद्धि और मुक्ति प्राप्त करें।

- सी-1701, लेक प्रिम रोज, लेक होम्स फेज-4 पवई, मुम्बई-400076 (महाराष्ट्र)

जीने की राहें

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

जीने की राहें, जो आपने बताई,
उन्हीं रास्तों पर, हम चलते रहेंगे,
चारों ओर फैली है, चकाचौंध भारी,
मन के विकारों से बचते रहेंगे।
जीने की राहें, जो आपने बताई.....।।1।।
जीवन जीना कैसे जीना, आपने बातें बतलाई हैं,
ज्ञान की सौरभ देकर हमको,
आत्म बगिया महकाई है।
श्रेष्ठ बने यह जीवन हमारा,
सादगी से जीवन जीते रहेंगे,
जीने की राहें, जो आपने बताई.....।।2।।
राग–द्वेष को तजकर हरदम,
प्रेम–प्यार का व्यवहार करेंगे,
अनुशासन और मर्यादा का,
आचरण में ध्यान रखेंगे।
धर्म को अपना साथी बनाकर,
धर्म के पथ पर बढ़ते रहेंगे।
जीने की राहें, जो आपने बताई.....।।3।।
सत्य अहिंसा और दया का,
जीवन में सरोकार रहेगा, जीवों के संग मैत्री रखेंगे,
करुणा का प्रभु स्रोत बहेगा।
मानवता का मान बढ़ाकर, सद् राहों पर चलते रहेंगे।
जीने की राहें, जो आपने बताई.....।।4।।

-जनता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

10 मई 2022
जिनवाणी 48
ISSN 2249-2011

English-section

Pratikramaṇa : Mirror of Introspection

Sh. Jitendra Chaurdia 'Prekshak'

Self-criticism is very important in Jain Philosophy. Just as in the worldly sphere, sweeping means like broom etc. are used to clean the house, so as in the spiritual field through self-criticism our soul is to be made clean shedding badness, sins, inferiority etc. from it. For this, Lord Teerthankars have propounded a method and described it as a routine and worth doing both the times (Ubhaya Kāla) for the members of four-fold religious union i.e. Chaturvidh-Sangh regularly. That method is came to be known as Pratikramaṇa. Since it is an indispensable action for us, hence it is also called an essential activity i.e. Āvashyak Sootra.

Just as regular cleaning is required to keep the house, office, vehicle, furniture etc. clean and protected. In the same way, in order to keep our soul clean, pure, virtuous and protected from the dirt of Karmic-Matter (Pudgals of Kārman Varganā) and other negative emotions, there is a need to do Pratikramaṇa.

There are many types of work we do to complete our daily routine. While performing those tasks, Karmic-Matter is attracted due to commitment of sins like violence etc, lowness of emotions, fickleness of Yogās (Mind, Speech and Body), conduct of passions (tendency to do Kashāyās). This attracting Karmic-Matter sticks to the soul and gets stored continuously in the Karmic body (Kārman-Shareer). As a result, the soul continues to experience happiness and sorrow due to those bound auspicious and inauspicious Karmās. Through Pratikramaṇa, the soul resolves not to repeat them in future, repenting for the mistakes that are committed, by concentrating on and remembering the short comings of one self through self-criticism. Knowing well the things to be discarded and practiced, it is committed and resolved to avoid their repetition in future. In this way, while reviewing his daily routine, the seeker (Sādhak) tries his best to keep himself away from useless and sinful activities in future. He considers those tendencies to be disastrous, which lead to the lowering of the spiritual level of his soul. Thus a seeker, while looking at himself in the mirror of self-criticism, by adorning his life with the ornaments of virtues, makes his conduct from beautiful to most beautiful.

Sinful tendencies keep on making the soul heavy with the constant attraction of inauspicious Karmās and their accumulation in the soul. When the seeker performs Pratikramaṇa, then he remembers all those sinful tendencies and being frightened by the fruits of the evil deeds that have been bound by him in his soul, by taking a resolution not to commit them again, he is determined to stay away from them forever and ever. In this way while retreating from sins, that soul keeps on throwing away sinful thorns from its life everyday. As a result, an atmosphere of unparalleled peace and self-confidence starts being created in the life of that soul and it starts experiencing happiness by being filled with the qualities like scareness from sins, sinlessness etc. Regular observation of one's own routine and by following the path of renunciation of sinful tendencies starts to feel a special kind of lightness which always motivates it to move

towards the right path. Favorable and unfavorable circumstances become incapable of affecting it and from here a unique equanimity (Samabhāv) is born which makes the soul so powerful that even burning-coal embers placed on the head cannot disturb its equanimity and nor is there any reaction even when the skin is removed from the body in an awakened state. That is why it has been said that if a living being contemplate on an excellent feeling while performing Pratikramaṇa at both the times (Ubhay Kāla) with a pure spirit, then he can earn up to Teerthankar Goutra. Then the minor shortcomings cannot remain in his his life.

Thus, all the Teerthankars have propounded the importance of Pratikramaṇa and have described it as necessary for the members of four-fold religious union (Chaturvidha-Sangha). We are also members of the four-fold religious union, so we must also understand the importance of Pratikramaṇa and do it regularly according to our compatibility. So that we keep on seeing our faults, shortcomings, sinful tendencies etc. in the mirror of self-criticism and get permanent solution to them. Continuing on the path of spiritual practice (Sādhnā), we keep on climbing the peak of spiritual upliftment and eventually achieve our ultimate goal and become the owner of eternal happiness. That's what my auspicious wish.!

- No. C-16/1, Krishna - Kunj, Haled Road, BHILWARA-311 001 (Raj.)

कटारियाजी द्वारा मञ्च पर साफा एवं शाल का त्याग

राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाबचन्दजी कटारिया 4 अप्रेल, 2022 को पीपाड़ शहर दौरे पर पधारे। पुण्यभूमि पीपाड़ में विराजित आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. प्रभृति सन्त-सतीवृन्द की सेवा में श्रद्धा-भक्ति की भावना से नेता प्रतिपक्ष गुरु-चरण-सेवा हेतु स्थानक पधारे। वन्दन-नमन के पश्चात् अहिंसा-सत्य-सदाचार जैसे विषयों पर विचार-चर्चा करते-करते स्वागत-सत्कार-सम्मान परीषह को जीतने की भावना से गुरुदेव के समक्ष संकल्प किया-''आज के पश्चात् भविष्य में साफा और शॉल का मैं जीवन पर्यन्त त्याग करता हूँ।''

-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़शहर

अनुकरणीय उदाहरण

24 अप्रेल, 2022 को ओसवाल कम्यूनिटी सेण्टर, जोधपुर में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त महामन्त्री श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा की सुपुत्री सौ.कां. दिव्या का शुभविवाह पीपाड़ निवासी और तमिलनाडु के पल्लीपेट्टवासी श्री राजेन्द्र कुमारजी बागरेचा के सुपुत्र चि. योगेशजी के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। विवाहोत्सव पर जैन विधि के अनुसार दिन में विवाह हुआ। शुभविवाह में न जमींकन्द का उपयोग हुआ और न ही फूलों की सजावट हुई। वर-वधू ने फूलों की जयमाला के स्थान पर बनावटी फूल-माला का प्रयोग करके एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया।

सूचना

जिनवाणी मासिक पत्रिका के नये स्तम्भ सदस्यों एवं संरक्षक सदस्यों का हार्दिक स्वागत है। स्तम्भ सदस्यता रुपये 21,000/- एवं संरक्षक सदस्यता रुपये 11,000/- है। नये सदस्यों की सूचना जिनवाणी में उनके फोटों के साथ दी जाएगी।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

10 मई 2022
जिनवाणी 50
ISSN 2249-2011

प्रासङ्गिक

श्रमण संस्कृति में अक्षय तृतीया

प्रो. मंगलचन्द टाटिया

श्रमण एवं वैदिक संस्कृति के धर्मों में अक्षय तृतीया का विशेष महत्त्व है। इसे एक विशेष पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन प्राय: अनेक जन नया कार्य प्रारम्भ करते हैं। विवाह के लिए यह अत्यन्त शुभ तिथि मानी जाती है। इस दिन को विशेष मुहूर्त्त के रूप में स्वीकार किया जाता है, इस दिन शुभ से शुभ कार्य किये जाते हैं। श्रमण-संस्कृति में इसका और अधिक महत्त्व है। इस दिन तप-त्याग की साधना पूर्णकर श्रमण-श्रमणियाँ एवं श्रावक-श्राविकाएँ अपना व्रत पूर्णकर पारणा करती हैं। इस अवसर्पिणी काल के आदि तीर्थङ्कर भगवान ऋषभदेव ने एक वर्ष पर्यन्त की कठोर साधना के पश्चात् वैशाख शुक्ला 3 (अक्षय तृतीया) के दिन इक्षुरस से पारणा किया। तभी से लेकर आज तक इस दिवस को वर्षीतप के पारणे के रूप में मान्यता प्राप्त है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि नाभिराजा एवं उनकी पत्नी मरुदेवी की कुक्षि से ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा अष्टमी को जन्म लिया। श्रमण-संस्कृति या जैन संस्था की प्रथम कड़ी या निर्माण करने वाले आदि प्रभु ऋषभदेव थे। जैन परम्परा की भाँति वैदिक परम्परा के आचार्यों ने भी प्रथम मनु स्वयंभू के वंशज में नाभि का जन्म माना है। यह नाभि ही भगवान ऋषभदेव के पिता थे। ऋषभदेव का जीवन-चरित्र जैन साहित्य में ही नहीं, अपितु वैदिक साहित्य में भी पाया जाता है। ऋग्वेद में वातरशना मुनियों एवं श्रमणों की साधना का उल्लेख मिलता है जिसका सम्बन्ध ऋषभ प्रणीत जैन मुनि परम्परा से है। भगवान ऋषभदेव का जीवन समन्वय का जीवन है। वे मानव जाति के समक्ष इहलोक एवं परलोक का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

ऋषभदेव के सौ पुत्र भरत, बाहुबली आदि एवं दो पुत्रियाँ ब्राह्मी एवं सुन्दरी हुईं। ऋषभदेव ने जनमानस को सर्वप्रथम कृषि, मसि, असि, शिल्प, वाणिज्य एवं विद्या का ज्ञान दिया और उसी अनुरूप अपने राज्य में सुन्दर राज्य व्यवस्थाएँ की। प्रजा अत्यन्त प्रसन्न एवं सुखी थी। ऋषभदेव ने जहाँ एक ओर अपने पुत्रों को सभी प्रकार का ज्ञान दिया, अलग-अलग कलाओं में निपुण किया वहीं दूसरी ओर अपनी पुत्रियों में ब्राह्मी को लिपि का ज्ञान तथा सुन्दरी को गणित ज्ञान के रूप में पारङ्गत किया। यह आदिमानव जीवन के उत्कर्ष का प्रारम्भ था।

समय बीतता गया, राज्य का शासन सानन्द चल रहा था कि अचानक एक घटना विशेष ने ऋषभदेव को झकझोर दिया और उनकी भावना वैराग्य की ओर प्रस्फुटित हुई। उस समय का जनमानस जड़ एवं सरल था। ऋषभदेव ने अपने हृदय की बात अपने पुत्रों को बताई और राज्य का सारा भार पुत्रों को सौंप दिया। ज्येष्ठ पुत्र भरत का राज्याभिषेक हुआ और शेष पुत्रों को भी भिन्न-भिन्न राज्यों के कार्यभार सौंप दिये। ऋषभदेव जनता जनार्दन के सम्मुख चैत्र कृष्णा अष्टमी को आदि जैनमुनि के रूप में दीक्षा धारण कर संयम पथ पर अग्रसर हो गये। तप-त्याग का क्रम अब जीवन में प्रारम्भ हुआ। दीक्षा के दिन भगवान के दो उपवास थे। साधना उनके जीवन के अन्तिम क्षणों तक चलती रही और वे उस युग के आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव बनकर इतिहास के पृष्ठों में अंकित हो गये। इसके बाद श्रमण संस्कृति में 23 तीर्थङ्कर और हुए। भगवान महावीर अन्तिम 24वें तीर्थङ्कर बने।

प्रव्रजित होने के बाद आदि मुनि श्री ऋषभदेव ने मौन धारण करके अपने कच्छ, महाकच्छ आदि मुनियों के साथ पैदल विहार किया। बेले के पारणे के दिन प्रभु

को किसी भी स्थान से आहार के रूप में भिक्षा प्राप्त नहीं हुई, वस्तुत: उस समय के लोग भिक्षादान करना जानते ही नहीं थे। प्रभु ऋषभदेव ही आदि भिक्षु हुए थे। प्रभु जब किसी के यहाँ भिक्षा के लिए जाते तो उन्हें महाराजाधिराज समझकर जनमानस हीरे, माणक, मोती, हाथी, घोड़े, वस्त्र इत्यादि तथा अपनी सुन्दर कन्याएँ लेकर उपस्थित होते। कोई भी भोजन पानी देने का आग्रह नहीं करते और कहीं करते तो आहार सचित्त आदि दोषयुक्त होने के कारण वे स्वीकार नहीं करते। श्रमण संस्कृति में मुनि समुदाय अचित्त एवं निर्दोष आहार ही ग्रहण करते हैं।

इस तरह भगवान ऋषभदेव मौन रहकर निराहार एक वर्ष पर्यन्त आर्य-अनार्य देशों में विचरते रहे। विचरते-विचरते एक दिन प्रभु गजपुर (हस्तिनापुर) नामक नगर में पधारे। उस राज्य में बाहुबलि के पौत्र और राजा सोमप्रभ के पुत्र श्रेयांसकुमार रहते थे। गत रात्रि में श्रेयांसकुमार ने स्वप्न में देखा कि मेरु पर्वत जो स्वर्ग के समान है वह कुछ श्याम हो गया है। उस पर्वत राज का उन्होंने दूध से अभिषेक करके उज्ज्वल किया। ऐसे ही अन्य स्वप्न वहाँ के 'सोमप्रभ' राजा एवं 'सुबुद्धि' सेठ ने भी देखे। भगवान ऋषभदेव ने उसी दिन हस्तिनापुर नगर में प्रवेश किया। प्रभु को आते देख नगर का जनमानस उनके दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। यह कोलाहल श्रेयांसकुमार के कानों तक पहुँचा, तुरन्त उनके पास समाचार आया कि भगवान ऋषभदेव नगर में पधारे हैं। हृदय प्रफुल्लित हो गया, उस समय तक प्रभु उनके आङ्गन में पधार गये थे। श्रेयांसकुमार ने अपने परिवार के साथ प्रभु को वन्दन नमस्कार किया एवं अपलक दृष्टि से प्रभु के श्रीमुख को निहारने लगे। दृष्टि हटी ही नहीं, तुरन्त मन विचारों में डूबने लगा और श्रेयांस कुमार को ऐसा भान हुआ कि मैंने पहले भी इन्हें देखा है, वस्तुत: यह जातिस्मरण ज्ञान था। विचारों के घोर मन्थन ने श्रेयांस कुमार को झकझोर दिया। उसी बीच किसी ने आकर कुमार को इक्षु-रस के घड़े भेंट किये, जाति-स्मरण ज्ञान से निर्दोष भिक्षा विधि का आभास हुआ और श्रेयांसकुमार रस के घड़े लेकर प्रभु के करपात्र में उण्डेलने लगे और इस तरह प्रभु ने एक वर्ष पर्यन्त दिन के बाद वैशाख शुक्ला 3 को जिसे आज भी अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता है, पारणा किया। श्रेयांसकुमार के हर्ष का पार नहीं रहा। दीक्षा लेने के एक वर्ष पर्यन्त प्रभु ने पहली बार इक्षुरस से पारणा किया। सब ओर प्रसन्नता छा गई। देवगण 'अहोदानम्' का उच्चारण करने लगे। प्रभु ने चैत्र कृष्णा अष्टमी को बेले के तप के साथ दीक्षा ली, जिसका पारणा 1 वर्ष 40 दिन बाद हुआ। धर्मदान की प्रवृत्ति इस प्रकार इस धरा पर श्री श्रेयांसकुमार से प्रारम्भ हुई।

अक्षय तृतीया के दिन पूरे देश में विशेषकर तीर्थ स्थलों पर एवं आचार्यों के सान्निध्य में पुरुष-स्त्रियाँ जो वर्षीतप करते हैं उनका पारणा इसी तरह आज भी इक्षुरस से होता है। प्रभु तो एक वर्ष पर्यन्त लगातार निराहार एवं मौन रहे, लेकिन वर्तमान युग में जो वर्षीतप करते हैं वे एकान्तर उपवास करते हैं। यह बहुत बड़ी तप साधना है अर्थात् 1 वर्ष में 6 माह आहार और 6 माह उपवास में रहना पड़ता है, उपवास में केवल गर्म अथवा धोवन जल के अतिरिक्त कुछ नहीं लिया जाता है।

करोड़ों वर्ष पूर्व वर्षीतप का महातप आदि तीर्थङ्कर भगवान ऋषभदेव से प्रारम्भ हुआ और आज तक अक्षुण्ण बना हुआ है। तीर्थ स्थलों में एवं अन्य धार्मिक स्थानों पर आज के दिन मेले जैसा माहौल रहता है। वर्षीतप करने वालों का समाज द्वारा सम्मान किया जाता है, यही तो श्रमण संस्कृति का मर्म है।

आज के दिन हम आदि प्रभु ऋषभदेवजी का स्मरण करते हैं। उनके सम्मुख नतमस्तक होते हैं। अन्तस्तल से ये भावना भाते हैं कि आपकी तरह हमारा जीवन भी बन जाये तो हम जन्म-मरण के चक्कर से सदा-सदा के लिए बच जायें और आप जैसी सिद्धगति हमें भी प्राप्त हो जाए।

-81, ए.पी.आर. कटंगा, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

10 मई 2022
जिनवाणी 52
ISSN 2249-2011

स्मृति-दिवस

षड्द्रव्य समान उपयोगी थे गुरु हस्ती

सौ. अनिता किशोर लुंकड़

जैसे षड्द्रव्य संसार के लिए उपयोगी हैं, वैसे ही गुरु संसार में जीवों के लिए उपयोगी हैं। यहाँ धर्मास्तिकाय आदि षड्द्रव्यों के गुणों के आधार पर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के गुणों का चिन्तन किया जा रहा है।

1. धर्मास्तिकाय–गति गुण। जैसे धर्मास्तिकाय जीव एवं पुद्गल के चलने में सहायक होता है, वैसे ही गुरु भी दीक्षा लेने के पश्चात् अविरल, अविराम गति से मोक्षमार्ग में स्वयं चलते हैं और दूसरों को चलाते रहते हैं। गुरु हस्ती ने कई जीवों को संयम में तथा कई जीवों को श्रावक धर्म में अग्रसर किया। समकित की प्रेरणा करते हुए संयम मार्ग में स्वयं चले एवं दूसरों को गतिमान किया।

2. अधर्मास्तिकाय–स्थिर गुण, रुकने का गुण। आचार्यश्री हस्ती ने धर्म में अस्थिर बने जीवों को स्थिर करने का कार्य किया। कभी सामायिक-स्वाध्याय के माध्यम से प्रेरणा देकर, कभी इतिहास से प्रेरणा देकर, तो कभी व्यसन मुक्ति की प्रेरणा देकर अनेक जीवों को धर्म में स्थिर करने का अनूठा कार्य किया।

3. आकाशास्तिकाय–स्थान देने का गुण। आकाश द्रव्य अन्य सभी द्रव्यों को समान रूप से स्थान देता है। गुरु हस्ती ने दीन दुःखी, अमीर-गरीब सभी को बिना भेदभाव के समान रूप से चरणों में स्थान दिया। सम्प्रदायवाद से हमेशा दूर रहे। सभी सम्प्रदायों के व्यक्तियों से प्रेमपूर्वक व्यवहार किया और दिल में स्थान दिया। 'मित्ती मे सव्वभूएसु' संसार के समस्त जीवों से मैत्री रखकर उनको सम्मान दिया। शत्रु-मित्र के भेदभाव से परे रहे। 'गुरु एक-सेवा अनेक' का मन्त्र दिया।

4. कालद्रव्य–परिवर्तन गुण। यह पर्याय परिवर्तन में सहायक द्रव्य है। जड़ और चेतन दोनों पर समान रूप से वर्तता है। वैसे ही गुरु हस्ती ने सिद्धान्तों से समझौता न करते हुए समय के साथ बदलाव भी किया। शिष्य रूप में थे तब तक गुरु सेवा, गुरु आज्ञा-पालन एवं पूर्ण रूप से समर्पण किया। गुरु बनने के पश्चात् शिष्यों को प्रेम से, वात्सल्य से, सौहार्द से अपना बनाया। जो आज तक भी भुलाये नहीं भूला जा सकता। सम्यग्दर्शन गुण के कारण उन्होंने अपना-पराया, स्वजन-परिजन का भेद नहीं किया। यह शिष्य मेरा, वह पराया ऐसा भेद न करते हुए समय के साथ-साथ सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार किया। वाद-विवाद से हमेशा दूर रहे। समय का सदुपयोग ज्ञान, स्वाध्याय एवं क्रिया पालन में किया। सदा अप्रमत्त रहे। परिवर्तन संसार का नियम है इसे अपनाया।

5. जीवास्तिकाय–उपयोग गुण। हमेशा स्व-पर के लिए उपयोगी बनना। जैसे चन्द्रमा की कला बढ़ते-बढ़ते एक दिन पूर्णिमा का चाँद पूर्णत्व को प्राप्त करता है वैसे ही गुरु हस्ती ने स्व के साथ पर का भी उत्थान किया। हमेशा उपयोगी बने। अपने जीवन काल में समय का भरपूर सम्यक् उपयोग करके विपुल साहित्य का सृजन किया, जो हमारे लिए धरोहर के रूप में है। भजन एवं काव्यों की रचना की जो आज भी हमें प्रेरणा देते हैं।

'सामायिक-स्वाध्याय' का सन्देश हमारे लिए उपयोगी है। गुरुवर ने हमें जो धरोहर दी है उसका उपयोग हम भी स्व-पर कल्याण के लिए कर सकते हैं। स्वाध्यायी बनकर निरन्तर गतिशील एवं उपयोगी बन सकते हैं। उपयोगी बनकर गुरुवर अपने जीवन का उत्तरोत्तर विकास करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़े।

अन्त में उत्कृष्ट संलेखना-संथारा करके इस मानव भव के पूर्णत्व को प्राप्त किया। आगम का कथन है कि एक आचार्य अगर उत्कृष्टता से संयम का पालन करे तो तीसरे भव में मोक्ष प्राप्त कर सकता है। मोक्षमार्ग की ऐसी ही उत्कृष्ट साधना गुरुदेव ने की। उपयोग गुण को सार्थक किया। आप लक्ष्य को निश्चित प्राप्त करेंगे।

6. पुद्गलास्तिकाय-बादलों की तरह मिलना-बिखरना। संयोग-वियोग, मिलना-बिछुड़ना जीवन में लगा रहता है। इसे समभाव से सहन करना गुरु हस्ती को बहुत अच्छी तरह से आता था। सड़न, गलन, विध्वंस, पुद्गल का स्वभाव है तो शरीर भी पुद्गल ही है। वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श बदलते रहते हैं। इस पर क्या राग-द्वेष करना? 'समझो चेतनजी अपना रूप', 'मेरे अन्तर भया प्रकाश' इन भजनों से हमें उद्बोधन दिया। उनकी दृष्टि पुद्गल पर नहीं, आत्मा पर थी। नष्ट होने वाले इस शरीर का आत्मा के लिए जितना उपयोग कर सकूँ, कर लूँ। इस तरह देह का उपयोग उन्होंने जीवन भर आत्म उत्थान, स्वपर कल्याण के लिए किया। विषयवासना से दुर्गन्धित जन-जीवन को शीलव्रत से सुरभित बनाया। पुद्गलों से दृष्टि हटाकर, दृष्टि को सम्यक् बनाये रखा। जन-जन को गुणों से महकाया।

अनेक अपूर्व कार्य उन्होंने 71 वर्ष की दीर्घ संयम यात्रा में किये। उनका जीवन आज भी और आगे भी जन-जन को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

-गेट नं. 74, प्लॉट नं. 27/28/29, कल्पतरु, फ्लेट नं. 102, शान्तिनगर, सूरत गेट के पास, जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

शिक्षा का महत्त्व

श्रीमती विनय टाटिया

प्राचीन समय में शिक्षा गुरुकुल में दी जाती थी। विशेषकर राजा, महाराजा, सेठ, सामन्त जैसे सम्पन्न लोग भी अपने बच्चों को शिक्षा के लिए गुरुकुल में भेजा करते थे और पूर्ण शिक्षा प्राप्त होने के बाद ही वे बच्चे घर लौटते थे।

एक समय की बात है आचार्य विश्वभूति के गुरुकुल में तीन शिष्य अध्ययन कर रहे थे। शिक्षा प्राप्ति के बाद तीनों ने घर जाने की अनुमति माँगी। आचार्य ने कर्त्तव्य को लक्ष्य में रखते हुए तीनों को घर जाने की अनुमति दे दी और वे घर जाने की अपनी-अपनी तैयारी भी करने लगे, किन्तु आचार्य ने सोचा घर जाने से पहले इनकी परीक्षा लेना आवश्यक है। आचार्य ने एक योजना बनाई। जिस रास्ते से उन्हें जाना था उस रास्ते में उन्होंने काँटे बिखेर दिये और स्वयं एक स्थान पर छिपकर बैठ गये। अब तीनों शिष्य रवाना हुए। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें काँटे दिखाई दिये। एक शिष्य आगे-पीछे पैर रखकर निकल गया। दूसरा शिष्य विचार में पड़कर वापस लौट गया। अब तीसरे शिष्य ने उन काँटों को हाथ से बीनकर एक किनारे कर दिया और आगे निकल गया। यह सब दृश्य आचार्यश्री छुपकर देख रहे थे तथा शिष्यों की परीक्षा कर रहे थे। उन्होंने तीनों शिष्यों को अपने पास बुलाया और तीसरे शिष्य को घर जाने की अनुमति दे दी तथा दोनों शिष्यों को रोक लिया और कहा-"अभी तुम दोनों की शिक्षा पूरी नहीं हुई है। शिक्षा के उद्देश्य को तुम लोगों ने भलीभाँति समझा ही नहीं है।"

शिक्षा वही पूर्ण मानी जाती है जो स्वयं तथा दूसरों के लिए भी उपयोगी हो।

ऐसी शिक्षा जो समाज को स्थायित्व प्रदान करें। इससे समाज के बच्चे सुधरेंगे। सही रास्ते पर चलने का प्रयास करेंगे। जब बच्चे सुधरेंगे तब समाज सुधरेगा, फिर राष्ट्र सुधरेगा। हमें समाज और राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जाना है। भले ही जैन समाज अल्प संख्यक हो, पर इसकी शिक्षा से सम्पूर्ण राष्ट्र में एक नयी चेतना जगेगी, जो हमें पूर्ण सुख प्रदान करेगी। विश्व में हमारा मान भी बढ़ेगा।

-81, ए.पी.आर. कॉलोनी, कटंगा, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

10 मई 2022
जिनवाणी 54
ISSN 2249-2011

पर्यावरण-संरक्षण

पर्यावरण-चेतना एवं संरक्षण के लिए बनें विवेकी

डॉ. एन. के. खींचा

आज मानव अशान्त है, विक्षुब्ध है। स्वार्थपरता एवं भोगविलासिता के कारण मानव-मन विक्षिप्त है, संकीर्णता में आबद्ध है। मानव बाहर तो सभ्य दिखना चाहता है, किन्तु उसके भीतर पशुत्व हावी है। आसक्ति, भोगलिप्सा, भय, क्रोध, स्वार्थ एवं अनेक प्रकार के कषायों से मानवता अभिशप्त है। सभी जैन आगमों में इंगित किया गया है कि समस्त दु:खों का मूल कारण आसक्ति, तृष्णा एवं ममत्व बुद्धि है। बाहर भटकते इस मन में तृष्णा और स्पृहा है। संकीर्ण भावों के कारण परस्पर दूसरों के प्रति जलन ही जलन है। जबकि समता स्वभाव है, ममता विभाव है। प्रश्न है कि मानव मन में विवेक कैसे जगे? कैसे सजगता बढ़े। मूर्च्छा कैसे न्यून हो। कैसे दायित्व बोध जगे? जैन आगम तत्त्वार्थसूत्र में वाचक उमास्वाति ने कहा है- **परस्परोपग्रहो जीवानाम्** मानव एक-दूसरे के परस्पर सहयोगी बनें। परस्पर एक-दूसरे के दु:ख एवं पीड़ा, अवसाद तथा कष्ट को समझकर निराकरण का बोध जगाएँ। साथ ही **आत्मवत् सर्वभूतेषु** की भावना जगाएँ। वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ बनें। अत: ममत्व बुद्धि के स्थान पर कर्त्तव्यबुद्धि को स्थान दें। जो भी पीड़ाएँ, दु:ख आदि हैं उनके प्रति निरपेक्षभाव से रहें, उन्हें मात्र परिस्थितिजन्य समझें।

सुख-दु:ख, संयोग-वियोग, मान-अपमान, यश-अपयश आदि जीवन के अनिवार्य अङ्ग हैं। सभी के जीवन में रात और दिन सुख-दु:ख चलते ही रहते हैं। अपने चित्त की समता बनाये रखें। जीवन में आये दु:ख से विचलित न हों, बल्कि दु:ख के प्रभाव से जागें। कर्त्तव्यबोध जगायें। समता में रहें। अवसाद में न जायें। दु:ख के मूल कारणों का चिन्तन करें, समयोचित आचरण करें।

कहते हैं मनुष्य सामाजिक प्राणी है, लेकिन चाहिए कि मनुष्य विवेकशील (बौद्धिक/विचारशील) प्राणी बने। चिन्तन जगाये, बोधगम्य बने। आदर्शों पर चलकर पथ प्रदर्शक बने। जीवन में अनुशासन एवं सहयोग की भावना जगाये। मानव को चाहिए कि मर्यादित जीवन जीये।

पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण के लिए आवश्यक मर्यादित जीवन जीये। तभी सुव्यवस्थित जीवन जी सकेंगे। तभी प्राकृतिक मर्यादाएँ, पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादाएँ, राष्ट्रीय मर्यादाएँ, विश्व की मर्यादाएँ सुरक्षित रह सकेंगी। तभी प्रवृत्ति से निवृत्ति के मार्ग पर अग्रसर होकर सन्तुष्ट रह सकेंगे। उत्तराध्ययनसूत्र 3.12 में कहा गया है-**असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं** अर्थात् असंयम से संयम की ओर प्रवृत्ति करें। यही समुचित मार्ग है, पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का। तृष्णा/इच्छा/कामना आदि आकाश के समान हैं। तृष्णा का अन्त नहीं है। तृष्णा कभी भी वृद्ध नहीं होती है। इच्छा के लिए उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है-**इच्छा हु आगास समा अणंतिया** अर्थात् इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। इसी तथ्य की पुष्टि में आचाराङ्गसूत्र में भी इंगित किया गया है-**कामा दुरतिक्कमा, जीवियं दुप्पडिबूहगं, कामकामी खलु अयं पुरिसे से सोयइ जूरइ तिप्पइ परितप्पइ** अर्थात् काम (कामनाओं) का पूर्ण होना असम्भव है तथा जीवन बढ़ाया नहीं जा सकता। जब तक मानव-जीवन में कामना रहेगी तब तक जीवन में दु:ख, सन्ताप, पीड़ा, कलह, अवसाद, ईर्ष्या, द्वेष बने ही रहेंगे। अत: सूत्रकृताङ्गसूत्र (1/1/3) में दु:ख रूपी समस्या का

समाधान दिया गया है-**चित्तमंतमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि, अन्नं वा अणुजाणाइ एवं दुक्खा ण मुच्चइ।**

जब तक मानव मन सजीव अथवा निर्जीव पदार्थों में आसक्ति रखता है तब तक दु:खों से, प्रदूषणों (विकारों) से त्राण नहीं हो सकता है। लक्ष्यविहीन भौतिक दौड़, तनाव और दु:ख देती है। अत: सुख/आनन्द को आत्मगत (Subjective) मानें तथा वस्तुगत (Objective) को तिरोहित करें। तब अभी और यहीं परम सन्तोष को प्राप्त कर जीवन के पर्यावरणीय चेतना एवं संरक्षण को भी प्राप्त कर सकेंगे।

समाज का आधार ही है सह-जीवन, परस्पर सहयोग और सहिष्णुता। किन्तु भोगवादी, स्वार्थ-परायण संस्कृति तथा यूज एण्ड थ्रो से प्रकृति तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना ही क्षीण प्राय: हो रही है। आज के इस संकट से मुक्ति के लिए जीवमात्र के लिए परस्पर सहयोगी तथा स्वावलम्बी संस्कार जरूरी हैं।

आम आदमी भी ऊब गया है। उसे जरूरत है प्रेरणा की। ताकि उसका आत्मबल बढ़े। प्रश्न है कि पर्यावरण-संरक्षण हेतु सन्तुलन (Balance) कैसे बढ़े। पर्यावरण-चेतना एवं संरक्षण सह-अस्तित्व (Co-existence) से सम्भव है। जैन संस्कृति ने आवश्यक रूप से पाँच स्थावर काय की रक्षा के निर्देश दिए हैं अर्थात् दूसरे के अस्तित्व की स्वीकारोक्ति। जिसके लिए आमजन को चाहिए कि श्रावक बनें अर्थात् श्र-श्रद्धा, व-विवेक तथा क-क्रियान्वयन। श्रद्धा और विवेक का क्रियान्वयन। श्रावक बारह व्रतों का पालन करें। श्रावक पर्यावरण-संरक्षण के लिए रात्रि भोजन का त्याग करें। अनछना अथवा अप्रासुक जल को ग्रहण न करें। बासी भोजन न करें। अपनी जीवन-दृष्टि बदलें। जीवन-दृष्टि अहिंसक बनाएँ। सारी प्रकृति जीवनमय है। प्रकृति का संरक्षण ही विवेक है। पशु-पक्षियों के प्रति क्रूरता से विरत रहें। अपरिमित (Unlimited) परिग्रह का स्वेच्छा से त्याग करें। जीव हत्या से प्राप्त वस्तुओं का उपयोग न करें।

जैन संस्कृति ने आदर्श श्रावकाचार को यतनाचार कहा है। व्यक्ति यतनापूर्वक चले, यतनापूर्वक ठहरे, यतनापूर्वक क्रिया करे। सृष्टि के सभी जीव परस्पर एक-दूसरे के उपकारक हैं। प्रकृति का यह अटूट बन्धन जीवों में मैत्री के विकास को जन्म देता है। मन, वचन और काया की शुद्धि हेतु जैन संस्कृति में प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, आलोचना, कायोत्सर्ग, ध्यान एवं मंगलमैत्री का विधान है। इन सभी श्रावकाचार का जीवन में व्यवहार बढ़ने से पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण बढ़ेगा। जिससे चिन्तन दिशा बदलेगी, भाव बदलेंगे। मंगल भावना बढ़ेगी। लोभ-लिप्सा तिरोहित होगी। व्यक्ति की लेश्या बदलेगी, जिससे व्यक्ति का आभा-मण्डल भी रूपान्तरित हो जायेगा। प्रतिदिन प्रतिक्रमण साधना करने से पर्यावरणीय प्रदूषणों से मुक्ति मिलेगी। मन, वचन और काया से किसी का अहित न करने से पर्यावरण में शुद्धता आयेगी। मानवीय चित्त में प्रियता-अप्रियता, राग-द्वेष, स्नेह-घृणा, निरहंकार-अहंकार, समत्व-ममकार, करुणा-क्रूरता, शान्ति-क्रोध, सरलता-मायाचार, शुचिता-लोभ के द्वन्द्वों, मनोभावों से निकलना है। मानवीय मानसिक प्रदूषण के प्रमत्तभाव से जागरुक होकर पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण को बचाना है।

-सीनियर फेलो आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली
सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल, जयपुर (राज.)

- तन योग से, मनोयोग से और वाणीयोग से सामायिक की साधना की जाए तो अनन्त-अनन्त कर्म समाप्त हो सकते हैं।
- आर्त्त-रौद्र ध्यान को छोड़कर जो धर्मध्यान में लीन होता है और एक मुहूर्त्त का समय सामायिक या धर्मध्यान के चिन्तन में लगाता है, वह कल्याण को प्राप्त होता है। **-आचार्यश्री हस्ती**

10 मई 2022
जिनवाणी 56
ISSN 2249-2011

32वाँ आचार्य पद दिवस

आत्म-साधना में संलग्न प्रेरक व्यक्तित्व

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के गुणों की बात करें, अष्ट सम्पदा का अतिशय देखें, रत्नत्रयी की उज्ज्वलता का बखान करें, उनकी संयम की सजगता का गुणगान करें; हर कसौटी पर वे खरे ही उतरते हैं। हम कितना भी लिख लें, पढ़ लें, पर उन महापुरुषों के गुणों की पूर्ण अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है। जब एक अनजान व्यक्ति इस चारित्रात्मा के सम्मुख आता है तो उसे जो कुछ गुरुवर में सहजता से नज़र आता है, वह शायद इस प्रकार होता है-

चेहरे पर तेज

आचार्यश्री का चेहरा इतना सौम्य है कि दर्शन करने वाला आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाता। गौर-वर्ण, उन्नत नासिका, उत्तान कर्ण देखते ही व्यक्ति अभिभूत हो जाता है। ऐसे तो ये शरीर सम्पदा के लक्षण हैं, पर जिन्हें 8 सम्पदा की जानकारी नहीं होती वे भी इस विरल विभूति को अपने मन में बसा लेते हैं। क्योंकि उनका दर्शन मात्र सुकून, शान्ति, आत्मीयता देने वाला होता है। क्योंकि उनके शरीर के एक-एक अवयव, एक-एक पुद्गल से जो ऊर्जा निकलती है वह सामने वाले के हृदय के हर एक तार को स्पर्श करती है।

काँटों की सेज

एक संघ के नायक बनकर संघ को सम्भालना किसी काँटों की सेज से कम नहीं है, क्योंकि हर अच्छाई और हर बुराई का दारोमदार उन्हीं के कन्धों पर होता है। कार, बस आदि थोड़ी छोटी होती हैं, इसलिए सड़क पर 19-20 इधर-उधर हो जाएँ तो ज्यादा फर्क नहीं पड़ता, लेकिन यदि रेल पटरी से एक इंच भी इधर-उधर हो गई तो दुर्घटना की अधिक सम्भावना होती है।

एक घर में जहाँ हम जन्म लेते हैं, वहीं हमारे भाई, बहन, चाचा, पिताजी आदि जन्म से हमारे साथ हैं, फिर भी सभी में सन्तुलित सामञ्जस्य किन्हीं विरले घरों में ही दिखाई देता है, पर एक संघनायक के गण में तो अलग-अलग गाँव, अलग-अलग शहर, अलग-अलग परिस्थिति वाले घरों से मुमुक्षु आत्माएँ आती हैं। फिर भी आचार्यश्री का ऐसा प्रेम और अनुशासन है कि सभी फूल एक माला में बड़े प्रेम से समाहित हो जाते हैं। हर निर्णय में दूरदर्शिता है, हर अनुशासन में प्रेम है और चतुर्विध संघ का हित-निहित है।

संयम का ओज

जब गुरुदेव पाट पर विराजकर अपने श्रीमुख से जिनवाणी का सन्देश, उपदेश एवं प्रवचन फरमाते हैं तब चेहरे और वाणी की ओजस्विता अद्भुत होती है। यह प्रभाव है उनके उत्कृष्ट संयम के पालन का। कितनी ही बार तो ऐसा होता है कि उनकी वाणी सुनने को और दर्शन करने को आतुर भक्त इतना खो जाता है कि सामायिक तक लेना भूल जाता है। उनके संयम के ओज का ही प्रभाव है कि अनेकों मुमुक्षु आत्माओं में उनकी चरण सन्निधि पाने की स्फुरणा जागृत हुई। अनेक भव्य आत्माएँ, सन्त-सतीवृन्द उनकी चरण सन्निधि में जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं।

आत्मा की खोज

गुरुदेव ने नश्वरता को प्राप्त होने वाली देह में शाश्वत आत्मा को खोज लिया है। तभी तो देह में रहते हुए भी विदेह अवस्था को प्राप्त करने के लिए आतुर हैं। इसलिये आत्मा की खुराक तप, स्वाध्याय, जप आदि में ही संलग्न नज़र आते हैं। निज देह से ममत्व दृष्टि नगण्य कर ली है। जब भी दर्शन करने का सौभाग्य मिलता है तो वे स्व में ही रमण करते हुए दिखाई देते हैं।

साधना की मौज

पच्चीस वर्ष की यौवनावस्था में संयम ग्रहण कर आपने उसका निरतिचार पालन किया है। इतने दीर्घकाल तक रत्नत्रयी की साधना करने वाले गुरुदेव में संयम के उज्ज्वल पर्यायों का अवलोकन करने के लिए किसी विशेष अवसर का इन्तजार करने की आवश्यकता नहीं। उनके प्रतिदिन के क्रियाकलाप, नित्य की दिनचर्या भी इतनी सधी हुई है कि साधना की मौज, फकीरपना, निस्पृहता अपने आप दृष्टिगोचर होती है। उनके उठने, बैठने, चलने, फिरने, बोलने और मौन रहने में साधना की मस्ती झलकती है। हर कार्य में यतना है, जागृति है, स्व आत्मा का भान और अपने शिष्य समुदाय के उत्थान पर हमेशा ध्यान है।

भक्तों की फौज

सच्चा गुरु वही है जो भीड़ में भी अकेला है। अर्थात् कितने भी भक्त बन जाएँ, उसे गर्व, घमण्ड नहीं होता। वह तो निज आत्मा के स्वरूप को निखारने में ही व्यस्त होता है तथा भक्तों के द्वारा की गई प्रशंसा के सरोवर में अपने आप को नहीं डुबोता। वह कीचड़ में उत्पन्न हुए कमल की तरह अपने आपको निर्लिप्त रख लेता है। आचार्यश्री भी उस कमल के समान हर ओर से भक्तों से घिरे रहने के बावजूद भी अपने आपको अनासक्त एवं निर्लिप्त रखते हैं। मान-अपमान, निन्दा-प्रशंसा में एकरूप रहते हैं। भक्तों की हर समस्या का समाधान जरूर करते हैं, पर निज आत्मा का भान भुलाए बिना। वे एकान्तप्रिय हैं, संघ की उचित व्यवस्था के लिए जितना बोलना आवश्यक है, उतना ही बोलते हैं। शेष समय निज आत्मा को ही टटोलते हैं।

चेहरे पर तेज, काँटों की सेज,
संयम का ओज, आत्मा की खोज,
साधना की मौज और भक्तों की फौज।

इन बिन्दुओं के माध्यस से हमने इस महापुरुष के जीवन की अलौकिक झाँकी को देखने का प्रयत्न किया, पर जैसे सीप में समुद्र, दीपक में दिवाकर, परों में पवन पूर्णतया समाहित नहीं हो सकता, अंश मात्र ही समाविष्ट हो सकता है ऐसे ही गुरुदेव के जीवन को लेखनी अंशत: ही कागज पर उतार सकती है, सम्पूर्णतया: कभी सम्भव ही नहीं। गुरुदेव के जीवन में स्वास्थ्य समाधि बनी रहे, वे दीघार्यु हों। इसी मंगल भावना के साथ वन्दन।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

गुरु नाम से तन मन चेतन

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.

(तर्ज :: दूल्हे का सेहरा सुहाना.....)

गुरु नाम से तन मन चेतन खिलता है,
गुरुवर के आशीष से जीवन फलता है।
जग में एक आश्रय है गुरुवर का
पालें सच्चा आनन्द हमको मिलता है।। टेर।।

अगर गुरु ना होते, तो ये जग सूना रहता,
हर इंसान भटकता फिरता, कौन धर्म करता,
प्रभु का नूर समाया गुरुवर में, ये है दया निधान,
क्या उपमा दें गुरु के आगे, हर उपमा बेजान,
गुरु का शरणा सबसे सच्चा लगता है।।1।।

गुरुवर के चरणों में आकर पाई सम्यक राह,
कल्पतरु से मिले गुरु तो, पूर्ण हुई हर चाह,
दुविधा शंका गई उदासी, काम हुए आसान,
टूटे मन ने हिम्मत पाई, छाई नव मुस्कान,
सम्यग्ज्ञान दया का उपवन खिलता है।।2।।

जीना सीखा हमने इनसे, सीखी है हर बात,
इनके आदर्शों में मिलता, हर पल नया प्रभात,
गुरु दीपक है गुरु उजाला, गुरु का ज्ञान महान,
गौतम को भगवान बनाते, गुरु है प्रभु समान,
सुख का पथ गुरु चरणों से ही निकलता है।।3।।

-संकलन : श्रीमती सुनीता डागा, बी 13, सेठी कॉलोनी, जयपुर-302004 (राजस्थान)

10 मई 2022
जिनवाणी 58
ISSN 2249-2011

युवा-स्तम्भ

न्यूनतम साधनों की जीवनशैली

श्री हिमांशु जैन

आज के युग में अधिकतर मानव विलासिता (Luxury) की जीवनशैली की ओर जा रहे हैं। लोग कोई भी सामान इसलिए नहीं खरीद रहे कि उन्हें जरूरत है, बल्कि इसलिए खरीद रहे हैं, क्योंकि उनके पड़ोसी के पास वह वस्तु है या किसी रिश्तेदार के पास वह चीज है। सब एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में लगे हुए हैं। यह दौड़ छोटी से लेकर बड़ी चीजों तक सबमें चल रही है। जिस नारी के पास 50 साड़ियाँ हैं, वह सोच रही है कि मेरी भाभी, बहन या पड़ोसन के पास तो 100 साड़ियाँ हैं, इसलिये मेरे पास और होनी चाहिए। जिस व्यक्ति के पास एक कार है वह सोच रहा है मेरे दोस्त के पास तीन हैं तो मैं भी और खरीद लेता हूँ।

लेकिन कुछ महानुभाव ऐसे भी हैं जो न्यूनतम वस्तुओं की जीवनशैली को अपना रहे हैं। जिसका तात्पर्य है कम से कम चीजों से काम चलाना, जितना जरूरी हो उतनी ही चीजें स्वयं के पास रखना। ऐसी ही कुछ महान् विभूतियों के विषय में हम जानने की कोशिश करते हैं जिन्होंने न्यूनतम वस्तु जीवनशैली को अपनाया।

1. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम–वे भारत के राष्ट्रपति थे। इनके अन्तिम समय के पश्चात् इनके संग्रह में इनके पास 2500 किताबें, 1 घड़ी, 6 शर्ट, 4 ट्रॉउज़र एवं 3 सूट मिले। सोचने वाली बात यह है कि भारत जैसे विशाल देश के राष्ट्रपति रहने के बावजूद भी उन्होंने अपना जीवन न्यूनतम चीजों के साथ जीया।

2. अल्बर्ट आइंस्टीन–वे विश्व के जाने-माने वैज्ञानिक थे, जिन्होंने 'थ्योरी ऑफ़ रिलेटिविटी' का उपहार मानव जाति को दिया। इन्हें नोबेल प्राइज से सम्मानित किया गया जो कि शोध में सबसे उच्चतम सम्मान है। वे एक ही साबुन से शेविंग करते, उसी से कपड़े धोते और उसी से नहाते थे। हम में से अधिकतर लोगों के पास नहाने-धोने के लिए 10 से ज्यादा चीजें होती हैं जैसे कि फेसवाश, हैंडवाश, शैम्पू, बॉडीवॉश, शेविंग क्रीम, नहाने की साबुन, धोने की साबुन, स्क्रब, फेस पैक आदि। आइंस्टीन के पास केवल 1 छड़ी, 1 घड़ी, एक रुमाल और कुछ सीमित कपड़े थे।

3. मार्क ज़ुकरबर्ग–ये फेसबुक (मेटा) नामक कम्पनी के सीईओ हैं। जिसके उत्पाद (प्रोडक्ट्स) अधिकतर लोग उपयोग में लेते हैं। फेसबुक विश्व की शीर्ष कम्पनियों में से एक है। ज़ुकरबर्ग के पास सात हज़ार सात सौ तीस करोड़ डॉलर हैं, फिर भी वह हमेशा ग्रे रंग की ही टी शर्ट पहनते हैं। इतना पैसा होने के बावजूद भी दिखावा नहीं करते। यह चाहे तो कपड़ों की दुकान लगा दे, बढ़िया से बढ़िया डिज़ाइनर कपड़े पहन सकते हैं, फिर भी इनका मानना है कि इन्हें अपना समय छोटे-छोटे निर्णय लेने में व्यतीत नहीं करना चाहिए, जैसे-आज कौनसी शर्ट पहनें, आज कैसी पतलून पहनें। यह अपना कीमती समय अत्यावश्यक निर्णय लेने में लगाना चाहते हैं।

4. बराक ओबामा–ये अमेरिका जैसे महाशक्तिशाली देश के राष्ट्रपति रहे हैं। यह भी ज़ुकरबर्ग की तरह अधिकतर ब्लू या ग्रे रंग के सूट ही पहनते रहे हैं। ये सोचते हैं कि हर आदमी के पास सीमित ऊर्जा है, उस ऊर्जा को वह या तो कपड़े पसन्द करने में लगा सकता है या अपने देश को आगे ले जाने के लिए निर्णय लेने में लगा सकता है। क्या कभी हमने सोचा कि हम अपनी ऊर्जा का सही उपयोग कर रहे हैं या उसे व्यर्थ ही नष्ट कर रहे हैं?

5. स्टीव जॉब्स–ये एप्पल नामक प्रसिद्ध

इलेक्ट्रॉनिक्स कम्पनी के को-फाउण्डर और सीईओ रहे हैं। इस कम्पनी ने काफी प्रसिद्ध चीजें बनाई है, जैसे- आईफ़ोन, मैक, आईपैड आदि। एक दिन स्टीव के घर पर पूर्व सीईओ पधारे तो उन्होंने पाया कि स्टीव के घर पर बहुत ही कम फर्नीचर है। घर में सिर्फ जरूरी सामान जैसे पलंग, कुर्सी, टेबल ही रख रखे थे। यह देखकर पूर्व सीईओ को काफी आश्चर्य हुआ कि इतने अमीर होते हुए भी इनके पास इतना कम सामान कैसे? स्टीव मानते थे जितना ज्यादा सामान रखेंगे उतना ही उनका समय सामान को साफ़ करने में, व्यवस्थित रखने में और चीजों को ढूँढ़ने जैसे कार्यों में व्यर्थ होगा।

हमने देखा कि कुछ महानुभाव कैसे न्यूनतम साधनशैली को अपनाकर अपने जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। आइये हम न्यूनतम साधनशैली के कुछ और फायदे समझते हैं-

1. अधिक उत्पादकता-यदि हमारे पास सीमित विकल्प होंगे तो समय कम बर्बाद होगा और उस समय का उपयोग अच्छे कार्य हेतु कर सकेंगे।

2. कम तनाव-हम जितना कम प्रतिस्पर्धा में दौड़ेंगे, एक-दूसरे के पास की चीजों की जितनी कम तुलना करेंगे उतना ही तनाव कम होगा।

3. कम व्याकुलता-अगर हम अपनी इच्छाओं पर लगाम लगायें तो हमारा मन भी कम व्याकुल होगा।

4. कम खर्च, ज्यादा बचत-जितना कम परिग्रह रखेंगे उतना ही खर्चा कम होगा और स्वयं की बचत में भी वृद्धि होगी।

5. अधिक शान्ति-हमें जितने कम निर्णय लेने होंगे, उतना ही हमारा दिमाग शान्त रहेगा।

6. ऊर्जा की बचत-हर निर्णय लेने में हमारी ऊर्जा खर्च होती है, अगर हम सीमित खरीददारी करेंगे तो कम निर्णय लेने पड़ेंगे। अगर हमारे पास सीमित संसाधन होंगे तो हमें कौन-सा उपयोग करना है यह निर्णय लेने के लिए ऊर्जा नहीं लगानी होगी। जैसे अगर आपके पास 4-5 वाहन हैं तो आपको यह सोचने के लिए कि कौनसा वाहन ले जाना है, इसके लिए ऊर्जा लगानी होगी। अगर सीमित वाहन हों तो स्वतः ही ऊर्जा की बचत हो जाएगी।

7. समय की बचत-वस्तुओं का परिग्रह जितना कम होगा, उतना ही उन्हें सम्भालने में समय भी कम लगेगा।

8. पहिचान (iconic)-क्या हमारे व्यवहार जगत् के सुपर हीरो पुलिस और आध्यात्मिक जगत् के आदर्श गुरु भगवन्त रोजाना अलग-अलग तरह के कपड़े पहनते हैं? क्यों हम दूर से देखकर ही पुलिस एवं गुरु भगवन्त आदि को पहचान जाते हैं? क्योंकि वे एक पोशाक पहनते हैं जो रोजाना नहीं बदलती। यदि हम भी रोजाना एक रंग की, एक तरह की पोशाक पहनें तो लोग दूर से ही हमें पहचान लेंगे।

हम कई बार अपनी इच्छाओं को जरूरतों से ज्यादा प्राथमिकता दे देते हैं। पारिणामतः हम एक के बाद एक चीजें खरीदते जाते हैं और परिग्रह को बढ़ाते जाते हैं। आवश्यकसूत्र (प्रतिक्रमण) के पाँचवें अपरिग्रह व्रत एवं उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत में भी इसी सन्दर्भ में बताया गया है। आगमकारों ने अपरिग्रह के सिद्धान्त पर जोर देकर बताया है कि मकान, जमीन, सोना, चाँदी, खाने की सामग्री, पहनने के सामान, घर के सामान, वाहन आदि हर चीज में हमें एक सीमा तय करनी चाहिए। आजकल अधिकतर घरों की अलमारियों में इतने कपड़े होते हैं कि उन्हें खोलते ही कपड़े गिर जाते हैं। समझ में ही नहीं आता कि कोई उत्सव हो तो कौन-सा पहने, कहीं जाना है तो कौन-सा पहने, ये कपड़े तो सबने देख लिए हैं। दिवाली पर बोलते हैं कि इस अलमारी में एक भी कपड़ा नया नहीं है और होली पर कहते हैं कि अलमारी में एक भी कपड़ा पुराना नहीं है।

ख़रीदो केवल आवश्यक वस्तुएँ-बचें इच्छाओं की आपूर्ति से।

आप भी न्यूनतम साधनों की जीवनशैली अपना कर निश्चिन्तता को अपना सकते हैं।

-101, सकून रेजडेंसी, झालावाड़ (राज.)

10 मई 2022
जिनवाणी 60
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (20)

(साता-वेदनीय कर्म)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– साता वेदनीय कर्म का उदय कितने प्रकार से होता है?

समाधान–साता वेदनीय कर्म का उदय मुख्य रूप से आठ प्रकार से माना जाता है–

1. **मनोज्ञ शब्द**–मन को अच्छे एवं रुचिकर लगने वाले शब्दों को सुनने का अनुभव।
2. **मनोज्ञ रूप**–अत्यन्त सुन्दर, मनोहर एवं मन को सुखकर रूप का अनुभव।
3. **मनोज्ञ गन्ध**–सुगन्धित, सुरभित एवं मनमोहक गन्ध का वेदन।
4. **मनोज्ञ रस**– मन को अच्छे लगने वाले खट्टे-मीठे आदि रसों को प्राप्त करना, रस युक्त खाद्य सामग्री का अनुभव।
5. **मनोज्ञ स्पर्श**–कोमल, मुलायम मनोनुकूल शुभ स्पर्श युक्त पदार्थों, साधनों का अनुभव।
6. **मनचाहे सुख**–मन की चाहना के अनुरूप व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति आदि से सुख का अनुभव।
7. **अच्छे वचन**–मधुर, प्रिय, हितकारी वाणी से साता का अनुभव।
8. **नीरोगी काया**–स्वस्थ, सशक्त एवं दृढ़ संहनन वाला शरीर नैतिक, धार्मिक कार्यों में सहायक शरीर से साता का अनुभव।

जिज्ञासा– साता वेदनीय कर्म के उदय रहते क्या असाता वेदनीय का बन्ध होता है अथवा साता वेदनीय का भी बन्ध हो सकता है?

समाधान–साता वेदनीय कर्म के उदय से प्राप्त शरीर, धन-सम्पदा आदि का दुरुपयोग करना, उन्हें अनर्थदण्ड के कार्यों में लगाना, सेवा-सहायता, धर्माराधना, तपाराधना, व्रताराधना में नहीं लगाकर उन साधनों को हिंसादि पाप कार्यों में लगाने से प्राण, भूत, जीव, सत्त्व की विराधना होती है, जिस कारण से पुनः उसके असाता वेदनीय कर्म का बन्ध हो जाता है।

यदि प्राप्त साधनों का सदुपयोग किया जाये; परोपकार, सेवा, धार्मिक-आध्यात्मिक साधना-आराधना में सही ढंग से उपयोग किया जाये तो शुभ योगों एवं परिणामों के कारण उसके सातावेदनीय कर्म का बन्ध होता है।

जिज्ञासा– साता वेदनीय कर्म का बन्ध किन जीवों के होता है?

समाधान–साता वेदनीय कर्म का बन्ध दो प्रकार का बतलाया गया है–1. साम्परायिक तथा 2. ईर्यापथिक। साम्परायिक साता वेदनीय कर्म का बन्ध पहले से लेकर दसवें गुणस्थान तक होता है। जबकि ईर्यापथिक साता वेदनीय कर्म का बन्ध सयोगी वीतरागी जीवों के 11वें गुणस्थान से लेकर 13वें गुणस्थान तक होता है।

पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक जो साता-असाता वेदनीय कर्म का बन्ध होता है, वह अन्तर्मुहूर्त-अन्तर्मुहूर्त में बदल-बदल कर होता है। उदाहरण के रूप में एक अन्तर्मुहूर्त तक सातावेदनीय कर्म बँधता है तथा दूसरे अन्तर्मुहूर्त में असाता वेदनीय कर्म बँधना शुरु हो जाता है। फिर अन्तर्मुहूर्त बाद पुनः साता वेदनीय कर्म बँधने लग जाता है। प्रमाद अवस्था में परावर्तमान (बदलने वाले) परिणाम चलते रहने के कारण अन्तर्मुहूर्त-अन्तर्मुहूर्त में साता-असाता वेदनीय कर्म का बन्ध क्रमशः होता रहता है।

अप्रमत्त दशा में अर्थात् 7 से 13 गुणस्थान तक लगातार सातावेदनीय कर्म का ही बन्ध होता रहता है।

जिज्ञासा– सातावेदनीय कर्म का बन्ध कब-कब कितनी स्थिति का होता है?

समाधान–साता वेदनीय कर्म का बन्ध जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त से लेकर उत्कृष्ट 15 कोटाकोटि सागरोपम तक की स्थिति का होता है। इसमें भी इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उत्कृष्ट स्थिति 15 कोटाकोटि सागरोपम का बन्ध तो मिथ्यादृष्टि जीवों को ही होता है। उनमें भी संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक हो, तीव्र संक्लेश परिणाम हो तभी अन्तर्मुहूर्त्त के लिए उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध होता है।

मिथ्यात्व अवस्था में भी जो संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक जीव विशुद्ध परिणामी हो तथा समकित प्राप्ति की प्रक्रिया कर रहा हो तो उसके अन्त:कोटाकोटि सागरोपम का ही सातावेदनीय कर्म बँधता है। दूसरे गुणस्थान से लेकर आठवें गुणस्थान तक अन्त:कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति का ही कर्म बँधता है। ऊपर-ऊपर के गुणस्थानों में क्रमश: अन्त:कोटाकोटि सागरोपम छोटा-छोटा होता जाता है।

नवम गुणस्थान के प्रारम्भ में उपशम श्रेणि वालों के अन्त:कोटि सागरोपम तथा क्षपक श्रेणि वालों के अन्त: लक्ष सागरोपम की स्थिति का कर्म बँधता है। दसवें गुणस्थान के अन्त में बन्ध विच्छेद के समय 12 मुहूर्त्त का साम्परायिक सातावेदनीय कर्म बँधता है। 11वें से 13वें गुणस्थान में ईर्यापथिक सातावेदनीय कर्म का बन्ध जघन्य-उत्कृष्ट दो समय की स्थिति का होता है।

जिज्ञासा– साता वेदनीय कर्म का किन-किन जीवों में कितनी-कितनी स्थिति का बन्ध होता है?

समाधान–साता वेदनीय कर्म का एकेन्द्रिय जीवों को एक सागरोपम के चौदह भागों में से तीन भागों के बराबर स्थिति अर्थात् एक सागरोपम के 3/14 भाग का उत्कृष्ट बन्ध होता है।

उत्कृष्ट स्थिति के बन्ध में से पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम स्थिति के बराबर जघन्य स्थिति बन्ध होता है।

द्वीन्द्रिय जीवों में 25 सागरोपम के 3/14 भाग अर्थात् 75/14 सागरोपम का बन्ध होता है। त्रीन्द्रिय जीवों में 50 सागरोपम का 3/14 भाग अर्थात् 150/14 सागरोपम का, चतुरिन्द्रिय जीवों में 100 सागरोपम का 3/14 भाग अर्थात् 300/14 सागरोपम का तथा असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों को 1,000 सागरोपम का 3/14 भाग अर्थात् 3,000/14 सागरोपम का बन्ध उत्कृष्ट होता है। इन सब में भी अपने-अपने उत्कृष्ट स्थिति बन्ध में से पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम करने पर जो स्थिति शेष रहे वह अपना-अपना जघन्य स्थिति बन्ध समझना चाहिए।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों को मिथ्यात्व गुणस्थान में कम से कम अन्त:कोटाकोटि सागरोपम का तथा अधिक से अधिक 15 कोटाकोटि सागरोपम का सातावेदनीय कर्म का बन्ध होता है।

जिज्ञासा– सातावेदनीय कर्म जो बँधा हुआ है, क्या वह असातावेदनीय के रूप में बदल सकता है?

समाधान–जिन जीवों के सातावेदनीय कर्म शुभ परिणामों से बन्धा हुआ है, यदि वे जीव अशुभ परिणामी बन जायें और असातावेदनीय कर्म के बन्ध के कारण भीतर में प्रकट हो जाये तो उस समय नया बन्ध असातावेदनीय का होने लग जाता है। जब असाता वेदनीय कर्म बँधता है, उन समयों में पूर्व में बँधा हुआ साता वेदनीय कर्म भी संक्रमित होकर असाता वेदनीय रूप बनने लग जाता है। इससे स्पष्ट है कि पूर्व में बँधा हुआ कर्म भी वर्तमान के परिणामों के अनुसार बदल जाता है।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि समता, सजगता, सहनशीलता, शान्ति, समाधि ये सब पूर्व बद्ध अशुभ प्रकृतियों को शुभ में बदलने में सहायक बनती हैं तथा वर्तमान की विषमता, राग-द्वेष, क्रोधादि कषाय, हिंसादि पाप प्रवृत्तियाँ पूर्वबद्ध शुभ प्रकृतियों को अशुभ में बदलने में सहायक बनती हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

10 मई 2022
जिनवाणी 62
ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

अनमोल मोती (2)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

1. योद्धा ढाल से बचाव और तलवार से प्रहार करता है। साधक की ढाल संयम है और कर्मों पर प्रहार करने के लिए तप की तलवार है।
2. धर्म गुणों की वृद्धि करता हुआ चारित्र के विकास को महत्त्व देता है, किन्तु सम्प्रदाय इनकी उपेक्षा करता हुआ केवल विधि-विधानों को पकड़े रखता है।
3. अन्य शुभ कर्मों का फल जल्दी से या देर से भी मिल सकता है, किन्तु स्वाध्याय का फल ज्ञान के रूप में तत्काल मिलता है।
4. मन को निर्मल बनाये रखना धर्म है।
5. भोग अनर्थकारी ही है चाहे वह पुण्य के प्रभाव से मिला हो तो भी, जैसे चन्दन की लकड़ी में उत्पन्न अग्नि भी जलाती ही है।
6. संसार की ऊँची उड़ान का लक्ष्य प्राणी के अध्यात्म रूपी पंखों को निरन्तर छोटा करता रहता है।
7. सन्तोष स्वाभाविक धन है, विलासिता कृत्रिम दरिद्रता है।
8. समस्त उन्नति का आधार आत्मनिर्भरता है।
9. अज्ञानी लोग स्वाध्याय का तिरस्कार, सरल लोग इसकी प्रशंसा और ज्ञानी इसका उपयोग करते हैं।
10. आत्मविश्वास बढ़ाने की रीति यह है कि वह काम करो जिसे करते हुए डर लगता है। इस प्रकार ज्यों-ज्यों सफलता मिलेगी त्यों-त्यों आत्मविश्वास बढ़ता जाएगा।
11. सत्य के दो रूप हैं शाश्वत और सामयिक। शाश्वत में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, परिवर्तन होता है सामयिक सत्य में, क्योंकि वह नए-पुराने की परिधि में घिरा रहता है। एक समय का सत्य, दूसरे समय में पुराना पड़ जाता है, अनुपयोगी हो जाता है अतः वह असत्य हो जाता है। महापुरुष इसी सामयिक सत्य को तोड़कर, युगानुरूप नए सामयिक सत्य की स्थापना करते हैं। सामयिक सत्य का ही एक रूप है दैशिक सत्य ..एक देश, एक क्षेत्र, एक स्थान में जो सत्य है वह दूसरे देश आदि में अपना मूल्य खो सकता है अतः वह असत्य हो सकता है। भगवान महावीर ने शाश्वत सत्य का ही नहीं, सामयिक सत्य का भी निरूपण किया।
12. अपने से भिन्न मत रखने वालों को मिथ्यात्वी मत कहो। यह कहो कि उनके मत से मेरा मत भिन्न है। किसी के कहने से सम्यक्त्वी मिथ्यात्वी या फिर मिथ्यात्वी सम्यक्त्वी नहीं हो जाता। किसी को मिथ्यात्वी कहना यानी अपने द्वेष को उगलना, अशान्त बनना और शान्ति का अपव्यय करना है। सम्यक्त्वी कभी किसी को मिथ्यात्वी नहीं कह सकता, यह प्रकृति का नियम है। जिसका अपना कोई मत नहीं होता और जो स्वानुभूति (आत्मानुभूति) में रत रहता है वह सम्यक्त्वी होता है। मतों में उलझने वाला, देहानुभूति में रत रहने वाला मिथ्यात्वी होता है।
13. परधर्म (संसार) को स्वीकार कर जीने के बजाय स्वधर्म (आत्मधर्म) में मर जाना श्रेष्ठ है।
14. यह अशुचिमय देह भी रत्नत्रय तथा अन्य सद्गुणों को धारण करके पवित्र, वन्दनीय और प्रशंसनीय बन सकती है।
15. संसार के सब कार्यों को करते हुए भी यह जीव यदि दो घड़ी के लिए भी शरीर को पड़ौसी मान ले तो लक्ष्य प्राप्ति में देर नहीं लगती।

◆

10 मई 2022
जिनवाणी 63
ISSN 2249-2011

48वाँ दीक्षा दिवस

गुरु महेन्द्र चालीसा

श्री डुग्गु 'ज्ञानार्थी'

गुरु गजेन्द्र प्रताप से, जय-जय महेन्द्र महान्।
इनमें गुण अपार हैं, करता हूँ गुणगान।।
महेन्द्र गुरु के गुण नित गाएँ।
तव चरणन में शीश झुकाएँ।।1।।
साँझ-सवेरे ध्यान लगाएँ।
निश दिन जीवन गाथा गाएँ।।2।।
माँ सोहिनी के सुत हैं प्यारे।
पिता पारस के राज दुलारे।।3।।
विक्रम सम्वत् दो हजार ग्यारह।
जोधाणा में लिया अवतारा।।4।।
श्रावण शुक्ला नवमी को जाए।
लोढ़ा कुल के भाग्य सवाए।।5।।
हस्ती गुरुवर महा उपकारी।
जीवन उनको किया बलिहारी।।6।।
विक्रम सम्वत् बत्तीसा आया।
महेन्द्र का मन अति हर्षाया।।7।।
वैशाख शुक्ला चतुर्दशी प्यारी।
दीक्षा की तब हुई तैयारी।।8।।
वेश बदल गुरु सम्मुख आए।
गुरु ने दीक्षा पाठ सुनाए।।9।।
दीक्षित कर निज शिष्य बनाया।
पंचम पद नवकार बिठाया।।10।।
सरलमना है समताधारी।
गुरुवर शाश्वत सुख अधिकारी।।11।।
तप जीवन का ध्येय बनाया।
जिनागम को गले लगाया।।12।।
तप स्वाध्याय सेवा का संगम।
विषय कषाय का किया है उपशम।।13।।
गुरु हस्ती के शिष्य अनुपम।
तप संयम में रमते हरदम।।14।।
हस्ती गुरुवर ज्ञान प्रदाता।
महान् अध्यवसायी पद के दाता।।15।।
सेवा भावी आज्ञाकारी।
जन-जन के तुम वल्लभकारी।।16।।
उग्र तपस्वी उग्र विहारी।
तुमको नमती दुनिया सारी।।17।।
प्रवचन शैली है अलबेली।
आगम अनुरूप जीवनशैली।।18।।
तत्त्वज्ञान के आप हो सागर।
गूढ़ रहस्य करे उजागर।।19।।
सरस व्याख्यानी आप कहाते।
श्रोतागण के मन को भाते।।20।।
बात बताएँ नयी पुरानी।
जब भी सुनते लगे सुहानी।।21।।
आत्मा के हित संयम पाले।
दुर्गुण दोषों को नित टाले।।22।।
कैसी मधुरता दिव्य सरलता।
पायी तुमने खूब सफलता।।23।।
हीरा गुरुवर हैं गम्भीरा।
उनकी सेवा में तुम वीरा।।24।।
गुरुवर आपकी करुणा भारी।
बाधा सबकी दूर निवारी।।25।।
छोटे-बड़े मुमुक्षु आते।
माँ बनकर के नेह लुटाते।।26।।
धाय माता सम व्यवहार तुम्हारा।
सेवा धर्म को है स्वीकारा।।27।।
धर्म जागरणा अद्भुत तेरी।
ज्ञान ध्यान की बजती भेरी।।28।।
प्रमत्त दशा से बड़े दूर हैं।
तप संयम में बड़े शूर हैं।।29।।

है गम्भीरता इनकी गहरी।
धन्य है ऐसे संयम प्रहरी।।30।।
निस्पृहता हर ओर झलकती।
जो है इनकी अनुपम शक्ति।।31।।
साधना इनकी अजब निराली।
देख-देख बढ़ती खुशहाली।।32।।
प्रवचन माता के आराधक।
चिन्ता चूरक कष्ट निवारक।।33।।
न कोई तेरा न कोई मेरा।
यह जग तो है रैन बसेरा।।34।।
सबको यही रहस्य समझाते।
इस शिक्षा बिन दीक्षा न पाते।।35।।
दो हजार अठत्तर माँही।
संवत्सरी को सूचना पाई।।36।।
गुरु हीरा ने नाद सुनाया।
भावी आचार्य तुम्हें बनाया।।37।।
तेरे गुणों की खूब महिमा।
मेरे शब्दों की है सीमा।।38।।
महेन्द्र गुरुवर नाम है प्यारा।
इनको शत-शत नमन हमारा।।39।।
सब मिलकर इनके गुण गाओ।
जीवन अपना धन्य बनाओ।।40।।

ऊँचे हमको गुरु मिले, करें इनके गुणगान।
उभय लोक सुधरें तभी, हो जाए कल्याण।।
मंथन कर जो कर्म खपाए, गुरुवर महेन्द्र महान्।
डुग्गु करता प्रार्थना, पत राखो भगवान।।

-संकलनकर्त्री, श्रीमती बीना मेहता, हाल मुकाम पीपाड़सिटी, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

1. Shri R K Jain (IAS Retd.)

I have received the issue of Jinvani, April, 2022 with gratitude which contains impressive content & to ace it all is your article in the English section, JAIN RELIGION AND PHILOSOPHY FOR BETTERMENT OF SOCIAL LIFE. The theme of the well thought out article, "Hence the impact of religion must be seen in his social life", says it all. In very simple and lucid way you have rendered a powerful message which our younger generation can easily assimilate and can eventually be drawn to the eternal divine path of soul salvation.

My hearty Sadhuvad for your this much needed endeavor!

Very essential and important matter has been covered in this article. When I say that we need Jain books for sale at railway platform stalls then I mean such matter. We rarely find articles or books covering contents of this kind. Great! I wish some books get developed on the basis of these contents and some businessmen get convinced to commercialise such books (not as charity, but as a business).

2. श्री अभय कुमार जैन

श्रद्धेय श्री मोतीमुनिजी म.सा. के समाधिमरण पर गुणानुवाद का जो विवेचन पढ़ा बहुत अच्छा लगा। पढ़ते-पढ़ते ऐसा सजीव चित्रण लगा जैसे सामने ही यह सब अद्भुत नज़ारा हो रहा है। धन्य है ऐसी संयमी और संथारा साधक आत्माएँ तथा संयोग महापुरुषों का। 'भर यौवन में पाल्यो शील' श्रीमती सुमनजी कोठारी की संवाद नाटिका बहुत अच्छी लगी-इस प्रकार के संवाद निश्चित ही प्रेरणादायी रहते हैं। 'विज्जाचरण पारगा' आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पद ग्रहण के तीन दशक की संयम यात्रा का वर्णन विवेचन श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा ने किया वह मनोरम है। महापुरुषों के जीवन के संस्मरण एवं घटनाओं को पढ़ने का आनन्द ही अद्भुत है। अन्य लेख भी पठनीय और चिन्तनीय हैं। *-तृप्ति, बन्दा रोड़, भवानीमण्डी (राज.)*

10 मई 2022
जिनवाणी 65
ISSN 2249-2011

संवाद-वाटिका

संयम ही जीवन का बसन्त

श्रीमती सुमन कोठारी

सूत्रधार–आज की इस चकाचौंध भरी दुनिया में चारों ओर से एक से बढ़कर एक भोगों का प्रलोभन देने वाले वैज्ञानिक उपकरण, टी.वी., कम्प्यूटर, इण्टरनेट, मोबाइल की भरमार है। आधुनिकता एवं भौतिकता का प्रदर्शन करती हुई फैशन परस्त युवा-युवतिगण हैं। अध्ययन हो या व्यवसाय, या सामाजिक परम्पराएँ, सभी में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा और इन सबका एक ही निष्कर्ष है-ईर्ष्या, द्वेष, अधिक पाने की तृष्णा तथा परिणाम कभी न मिलने वाली शान्ति है।

ऐसे में संयम, दीक्षा जैसे शब्द कानों में पड़ते हैं। पूर्ण यौवन वाली आयु में दीक्षा लेता है तो बड़ा आश्चर्य होता है। तो आइये, आज हम 'संयम ही जीवन का बसन्त' संवाद नाटिका के द्वारा इन वीर बहनों का गुणगान करें और संयम के महत्त्व को समझें।

(बहनों की किटी पार्टी चल रही है, इधर-उधर की गपशप चल रही है।)

उमा–अरे! तुम्हें मालूम है आज ई.पी. सिनेमा हॉल में कौन सी फिल्म लगी है। हाँ-हाँ क्यों नहीं ई.पी. में ही नहीं सभी सिनेमा हॉल में कौनसी मूवी लगी है, मुझे सब मालूम है। क्योंकि मैंने सब देख ली है। मुझे फिल्म देखने का बड़ा शौक है।

उषा–अच्छा यार मैं तो चलती हूँ मुझे तो अभी बहुत काम है, पार्लर भी जाना है। 2-3 घण्टे तो लग ही जायेंगे, शाम को पार्टी में जो जाना है।

उर्वी–चलो! मैं भी चलती हूँ, कल मेरे बेटे का जन्मदिवस है, बहुत शॉपिंग करनी है।

आर्या (चौथी बहन)- मजाक बनाते हुए कहती है-अरे! तुमने सुना है क्या? आठ बहनें दीक्षा ले रही हैं।

(सभी एक साथ चौंक कर अजीब अंदाज़ में)

तीनों एक साथ-'दीक्षा' यह किस चिड़िया का नाम है, क्या होती है दीक्षा? हम सब नहीं जानते, आर्या! क्या तुम जानती हो?

आर्या–अरे! नहीं-नहीं, मैंने तो मम्मी-पापा के मुँह से सुना, इसलिए कह दिया।

सभी (कौतूहलता) से ... 'चलो-चलो उन्हीं दीक्षार्थी बहनों से पूछते हैं।'

(वे सब मुमुक्षु बहनों के पास जाती हैं और पूछती हैं... सुश्री ट्विंकल एवं वर्षा बहन से ....)

ट्विंकल बहन, वर्षा बहन! क्या आप हमें यह दीक्षा क्या है, संयम क्या होता है? बतायेंगी?

ट्विंकल एवं वर्षा बहन–आओ बहन आओ, ज्ञानी भगवन्तों से जो हमने जाना है, वह बताती हैं-संयम है जीवन का बसन्त। यह आत्मगुणों को विकसित कर पूर्णता एवं शाश्वत सुख की प्राप्ति का मार्ग है। संयम अमूल्य मानव-भव को सफल बनाने वाला पथ है।

एक बहन मुमुक्षु वर्षा से–वर्षाजी, आप बतायें यह दीक्षा कैसे ली जाती है? क्या यह खरीदी जा सकती है?

मुमुक्षु वर्षा–यह खरीदने की वस्तु नहीं है। यह अनमोल है, सुगुरु के सान्निध्य में रहकर हमने ज्ञान-ध्यान सीखा, जिससे हमारे जीवन का अज्ञान रूपी अन्धकार दूर हुआ। संयम का महत्त्व जाना। किस प्रकार श्रमण, त्रस एवं स्थावर अर्थात् प्राणिमात्र पर करुणा रखने वाले होते हैं। आकुलता-व्याकुलता रहित समभाव की साधना वाले होते हैं। हमें भी इसमें आनन्द और शान्ति अनुभूत हुई। आरम्भ-परिग्रह को छोड़, संयम का पथ अपनाना ही दीक्षा है।

(आश्चर्य से) तुम्हें इतना ज्ञान कैसे हुआ?

मुमुक्षु समता बहन–बहन! मुझे इन किटी पार्टियों में, पार्लर में, इन भोज आयोजनों में कभी भी विशेष रुचि नहीं रही। मुझे इनमें कभी भी शान्ति अनुभव नहीं हुई। मुझे बाहरी सौन्दर्य नहीं, बल्कि आत्मा का सौन्दर्य जो चिरस्थायी हो, उसकी खोज थी। मैं कौन हूँ, कहाँ से आयी हूँ, मैं कहाँ जाऊँगी? इन प्रश्नों के समाधान के लिए मैं स्थानक में पञ्च महाव्रतधारी साधु-साध्वियों के पास गई। उनके श्रीमुख से मैंने सुना- एकेन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय तक की जीवयोनि में यह जीव अनन्त बार वेदना भोग कर आया है। कैसे तिर्यञ्च गति, निगोद के कष्टों का वर्णन सुनकर मुझे इन काम-भोगों से विरक्ति हो गयी और मैंने माता-पिता से दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति माँगी। (माता-पिता के पास जाकर बड़े विनम्र भाव से) मम्मी-पापा! जन्म में दु:ख है, मरण में दु:ख है, बुढ़ापे एवं बीमारी में भी दु:ख है। सम्पूर्ण संसार में परिवार-भाई-बन्धुजन में कहीं भी मुझे सुख नज़र नहीं आ रहा है। अत: आप मुझे दीक्षा की अनुमति प्रदान करें।

माता-पिता-(भाव विह्वल होकर तथा पुत्री के मोह से व्यथित होकर) बेटी! तुम्हें यहाँ क्या दु:ख है? तुम ऐसा क्यों कह रही हो? श्रमण-धर्म का पालन तलवार की धार पर चलने के समान कष्टदायी है, पञ्च महाव्रतों का पालन अत्यन्त कठिन है।

मुमुक्षु बहन कोमल–माँ! मैंने यह शारीरिक वेदनाएँ तो अनेक बार भोगी हैं। अनेक भवों से बुढ़ापा, मृत्यु, बीमारी, वेदना एवं अनन्त कष्टों को सहन किया है।

माता-पिता–श्रमण जीवन में भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, आक्रोश वचन, आदि 22 परीषह एवं भिक्षाचरी, ताड़ना, तर्जना आदि को समभाव से सहन करना बहुत दुष्कर है।

मुमुक्षु बहन दीपिका–यहाँ जितनी गर्मी-सर्दी है, उससे अनन्त गुणा शीत एवं उष्ण वेदना नरक में और ताड़ना तर्जना तिर्यञ्च गति में मैंने सहन की है।

माता-पिता–बेटी! अभी भरपूर यौवन अवस्था है, भोगों की सामग्री तुम्हारे सामने है, पहले पाँचों इन्द्रियों के विषयों को भोगों, फिर तुम दीक्षा ले लेना।

मुमुक्षु बहन प्रीति-(बड़े आदर भाव से माताजी एवं पिताजी से) ये काम-भोग किंपाक फल के समान विषमय हैं और यह जीवन कुश (घास) की नोंक पर टिकी ओस बिन्दु के समान क्षण-भंगुर है। यह कामभोग देवयोनि एवं मनुष्य भव में अनेक बार प्राप्त किये, किन्तु फिर भी यह तृष्णा शान्त नहीं हो पायी। आज ज्ञानी भगवन्तों के अनन्त उपकार स्वरूप जिनवाणी का श्रवण कर, मेरा मन संयम लेने के लिए आकुल हो रहा है। अत: आप आज्ञा प्रदान करें।

माता-पिता-बेटी! श्रमणधर्म में नंगे पैर चलना, जमीन पर सोना, ब्रह्मचर्य का पालन करना अति दुष्कर है। तुम कोमल गद्दों पर सोने वाली कैसे श्रमण-धर्म का पालन करोगी?

मुमुक्षु बहन विजयश्री–महाभयंकर दावाग्नि के समान प्रदेश में कंकरीली रेत एवं नदी तट पर तपती हुई बालुका में अनन्त बार मैं जलायी गयी हूँ, अनेक बार मुझे छेदा-भेदा गया है, कोल्हू में पीला गया है, उस वेदना के सामने श्रमण-धर्म के कष्ट आत्म-सागर में आनन्द की शीतल लहरों के समान लगते हैं।

चारों बहनें (मञ्जू बहन से)–आपकी अपनी सुपुत्री जिसने जिनशासन की प्रभावना कर इस युवावस्था में धर्मशासन को देदीप्यमान किया है, उनकी संयम-यात्रा के कष्टों का तो आपने साक्षात् अनुभव किया है। आजीवन प्राणातिपात विरमण अर्थात् सूक्ष्महिंसा से भी विरत होना, अप्रमत्त रहकर मृषावाद का त्याग करना, अचौर्य का पालन करना, कामभोगों के रसों और स्वादों को जानने वाले व्यक्ति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना, परिवार के ममत्व का त्याग करना, बहुत ही कठिन है। यह जानकर, देखकर भी आपने दुष्कर पथ को अपनाया, घोर आश्चर्य है।

मुमुक्षु मञ्जू बहन–जाल बनाने वाली मकड़ी में जाल बनाने की ताकत है, लेकिन जाल को तोड़ने की

नहीं, क्योंकि वह अज्ञानी है। मनुष्य ज्ञानी भी हो सकता है और अज्ञानी भी। वह धन-कुटुम्ब परिवार के रूप में यह जाल बनाता है, अज्ञान के कारण मोह जाल में फँसता जाता है। आज तक हम भी उसी मोह जाल में फँसे हुए थे। अनन्त पुण्यवानी से, ज्ञानी पुरुषों के उपकार स्वरूप इस मोह जाल को काटने का ज्ञान प्राप्त हुआ, उन्होंने मनुष्य भव का सही मूल्य समझाया। अज्ञानता से अमूल्य मानव भव को वणिक् पुत्र की तरह हम भी न खो दें।

एक वणिक् के तीन पुत्र थे, वे धन कमाने के लिए विदेश गये। वणिक् ने एक-एक पुत्र को एक-एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ दी और कहा कि एक वर्ष बाद आकर मुझे बताना किसने कितना धन कमाया?

(तीनों भाई धन लेकर विदेश चले गये।)

प्रथम पुत्र ने सोचा-पास में धन है, जिन्दगी का कुछ मजा ले लूँ, बाद में धन कमा लूँगा। यह सोचकर उसने जुआ, शराब आदि मौज-मस्ती में सारी मूल पूँजी समाप्त कर दी।

दूसरे पुत्र ने सोचा-मुझसे बहुत पुरुषार्थ नहीं होता, इसलिए इस पूँजी को ब्याज पर चला देना चाहिए। यह सोचकर उसने मूल पूँजी को ब्याज पर लगा दिया एवं अपना खर्च चलाता रहा, मूल पूँजी सुरक्षित रही।

तीसरे पुत्र ने उस पूँजी से व्यापार किया और खूब लाभ कमाया, अपनी पूँजी कई गुणा बढ़ा दी। एक वर्ष बाद तीनों पुत्र पिता के पास पहुँचे।

पहला पुत्र फटे हाल भिखारी की भाँति दुःखी एवं उदास था, क्योंकि उसने मूल पूँजी भी गँवा दी थी।

दूसरे ने मूल पूँजी सुरक्षित रखी।

तीसरे ने कई गुणा पूँजी पिता के समक्ष रखी।

ज्ञानीजन हमें यही सन्देश देते हैं कि यह मानव भव मूल पूँजी है, यदि इसे हम काम-भोग, विषय-वासना में व्यतीत करते हैं तो मूल पूँजी रूपी मानव जीवन खोकर तिर्यञ्च गति एवं नरक गति प्राप्त करते हैं और मृत्यु के समय भयभीत होकर प्रथम पुत्र एवं 'हारे हुए जुआरी' की भाँति पश्चात्ताप करते हैं। मूल पूँजी के रूप में मानव भव में देश संयम अर्थात् श्रावकपने का पालन करने तथा सुदेव-सुगुरु-सुधर्म पर श्रद्धा रखने से मूल पूँजी यानी मानव भव सुरक्षित रह सकता है तथा उसका शुद्धता से पालन करने से देव गति की प्राप्ति भी हो सकती है।

मूल पूँजी मानव भव में पुरुषार्थ कर, संयम-साधना का शुद्ध पालन कर हम मोक्ष रूपी अक्षय निधि, शाश्वत सुख एवं कभी न खोने वाली पूँजी को प्राप्त कर सकते हैं।

मञ्जू बहन-इस प्रकार ज्ञानी भगवन्तों से मनुष्य-भव का महत्त्व जानकर और संसार के भयंकर दृश्य जो रात-दिन हमें नश्वरता का बोध देते हैं। कहीं बाढ़, तो कहीं भूकम्प, कहीं बर्ड फ्लू, बॉम्ब विस्फोट, एक्सीडेंट, कैंसर जैसी महामारी के रूप में देखकर मेरी आत्मा काँप उठी और तब मैंने जाना **संयम ही वह संजीवनी बूटी है** जो जन्म-मरण के दुःखों को मिटाने वाली है। तभी मैंने निर्णय लिया कि हमें भी यह पथ अपनाना है, हमारा मोह-जाल टूट गया है।

आज अनन्त-अनन्त पुण्यवाणी से आचार्य भगवन्त, उपाध्याय प्रवर एवं सभी ज्ञानी-महाज्ञानी सन्त-सतियों के चरण-शरण से यह शुभ दिन हमारे जीवन में आया है। आज हम सब विरक्ता बहनों के रोम-रोम आनन्द से पुलकित हो रहे हैं, वैराग्य से आह्लादित हृदय हिलोरें मार रहा है।

सभी बहनें-धन्य हो! धन्य हो! आप सबकी वीरता को, यही एक श्रेष्ठ राजमार्ग है जिसे अपनाने आप जा रहे हैं। आज यह जयपुर नगरी ही नहीं, सम्पूर्ण प्राणिजगत् एवं छह काया के जीव आपके इस शुभ निर्णय को धन्यवाद दे रहे हैं। आप लोग सच्चे अर्थों में भगवान महावीर के संदेश-'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पालन करने जा रहे हैं। हम सभी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हमारे जीवन में भी यह शुभ दिन आये। आप सबका मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो।

-115, कानोता बाग, चाट हाउस की गली, नारायणसिंह रोड, जयपुर-302004 (राजस्थान)

10 मई 2022
जिनवाणी 68
ISSN 2249-2011

चालीसा

नवकार चालीसा

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

महामन्त्र नवकार है प्यारा, मुक्ति का आधार है सारा।
जन्म-मरण का बन्धन क्षय हो, नमो नमो नवकार की जय हो।।

शाश्वत श्रद्धा साहस इसमें, महावीर का मानस इसमें।
जैनधर्म की शान यही है, जैनी की पहचान यही है।।

अहो भाव से वन्दन करके, भक्ति से अभिनन्दन करके।
परमेष्ठी प्रभु को नमन करें हम, प्राणों से परिणमन करें हम ।।

विनय धर्म का मूल है इसमें, परमानन्द के फूल हैं इसमें।
पाँच पदों से अनुरक्ति हो, रोम-रोम से अभिव्यक्ति हो।।

पहला पद है अरिहंताणं, सब शरणों में पहली शरणं।
वीतरागता में रहते हैं, सिद्ध गति की ओर हैं बढ़ते।।

नमो सिद्धाणं पद है दूजा, सिद्ध अनन्ता गुण की पूजा।
परम समाधि निज का शासन, शाश्वत सुख का है सिंहासन ।।

तीसरा पद है आयरियाणं, परम हितैषी मार्गदयाणं।
संघ के नायक महा उपकारी, आचार्यप्रवर की महिमा भारी।।

उवज्झायाणं पद है चौथा, जीवन जैसे आगम गाथा।
श्रुत की गंगा निर्मल बहती, चंदन से भी शीतल रहती।।

पाँचवें पद में सन्त-सती हैं, संयम धारक महाव्रती हैं।
वीरप्रभु के वीर अनोखे, दोषों को प्रतिपल हैं रोके।।

नमस्कार यह पाँच पदों को, नष्ट करेगा पाप दलों को।
तीन लोक में श्रेष्ठ यही है, सब मंगल में ज्येष्ठ यही है।।

पाँच पदों में पेंतीस अक्षर, और नवपद में अड़सठ अक्षर।
अक्षर अक्षर ज्ञान की धारा, सम्यग्दर्शन का उजियारा।।

अमरकुँवर नवकार में रम गए, जल्लादों के खञ्जर थम गए।
प्रियधर्मी की जान यही है, समकित की पहचान यही है।।

कर्मों की ये कैसी गति है, महाकष्ट में महासती है।
सीताजी की अग्नि परीक्षा, नमोकार से शील सुरक्षा।।

अन्धसभा में चीरहरण से, चक्षु रोएँ अन्त:करण से।
द्रुपद कन्या शीलवती की, लाज रखे नवकार सती की।।

श्रमणोपासक सेठ सुदर्शन, नमोकार में स्व का दर्शन।
शील की शक्ति है जयवन्ता, शूली का सिंहासन बनता।।

नवपदजी के साधक हैं ये, ओलीतप आराधक हैं ये।
श्रीपाल और मैनासुन्दर, नवकार बसे जीवन के अन्दर।।

दुनिया में जब जन्म हुआ था, माता से नवकार सुना था।
कानों में अमृत-सी बोली, सुनकर के ही आँखें खोली।।

स्वर्ग से सुन्दर वह ही घर है, जहाँ नमो नवकार का स्वर है।
घर परिवार में आनन्द रहता, आपस में भी प्रेम है बढ़ता।।

चौदह पूर्व का सार समाये, हाथ जोड़कर शीष नमायें।
श्रद्धा से नवकार जपें हम, भवसागर को पार करें हम।।

देव गुरु और धर्म है पावन, कृपा बरसती जैसे सावन।
'तीरथ' में नवकार है बसता, साँस-साँस में मोक्ष सरसता।।

-'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्ताद्रीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

सद्गुरोः प्रसादात्

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

- सही-गलत किसी को नहीं कहना।
  अपने तो समभाव में रहना।।
- भूत और भविष्य को भूल।
  खिलेंगे वर्तमान में शान्ति के फूल।।
- मत कर किसी पर राग-रोष।
  सुरक्षित रहेगा आत्म-गुणों का कोष।।

-संकलित

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य *(Book Review)*

Prof. Dharm Chand Jain

Jaina Ethical Tradition (A psycho-social process behind spiritual pursuit). Dr. Kamla Jain, **Publisher :** Parshwanath Vidyapeeth, ITI Road, Karaundi, Varanasi-221005 (UP). Email-pvpvaranasi@gmail.com, **Pages :** 18+132, **Price :** Rs. 300/-, **First edition :** 2021.

Dr. Kamla Jain has served as an Associate Professor of Philosophy in Jesus and Mary College, University of Delhi. She bears credit to write the following books- (i) Concept of Śīla in Indian Thought (ii) Aparigraha : The Humane Solution (iii) Jaina Religion : Its Historical Journey of Evolution (an English translation of Jaina Dharma Ki Aitihāsika Vikāsa-yātrā by Dr. Sagarmal Jain).

This book is a collection of 11 research papers presented in various Conferences and Seminars in India and abroad, which include the topics (i) Samyagdarsana from a psycho-social prism (2) Sāmāyika (3) Atithi-Saṃvibhaga vrata : A Social Perspective (4) Pratikramaṇa : an Unparalleled Contribution of Śramana Tradition to Indian Culture (5) Jaina Aṇuvratas : A Social Paradigm (6) Eight-fold Path of Jaina Yoga : vis-a-vis Pātañjala Yoga (7) Significance of Anekanta, Naya and Syat in present day Social life (8) The place of Atonement, Punishment in a Monk's life : A Jaina and Buddhist Perspective (9) Aparigraha : Jaina Economic Philosophy for Modern World (10) Saṃthāra, Suicide and Right to Die (11) Kṣamā (Forgiveness) in Jaina Tradition : Theory and Practice.

These articles present the Jaina views with analytic and critical approach having ethical and spiritual perspectives.

The book is an example of intensive knowledge and explanation power of the author. Every chapter is well written. A foreword by Christopher Key Chapple, Loyola Mary Mount University has enhanced the value of this book. The vision of Dr. Kamla Jain is to establish both spiritual and social values through these research papers. She has rightly interpreted the various technical terms. For example, about the meaning of parapāsanḍa-pasaṃsā and parapāṣanḍa-sanstava, she says "both these terms mean developing fondness for a person who has gone arstsay or has gone on a wrong path and praising him and then trying to get closer to him." She says-"these aticaras are sometimes given a sectarian colour and are misinterpreted and shown as if the views held by other people are the views of the opponents, they should only be taken to mean that wrong influencer should never be more powerful than the aspirant of right attitude."

The book is short, but it gives vast knowledge, which is necessary for the development of a person spiritually and socially.

Compendium of Samaysāra- Dr. Dileep Dhing, **Translator :** Dr. Sangeetha Khariwal, **Publishers :** (1) Research Foundation for Jainology, Sugan House, 18, Ramanuja Iyer Street, Sowcarpet, Chennai-600001 (Tamilnadu), Phone-044-25298082, email-jainology1982@ gmail.com (2) A. B. Shri Bhagwan Jain Diwakar Ahinsa Seva Sangh, 501, Princess Empire, Race Course Road, Indore-452003 (M.P.), Phone-9425106054, email-dhakadvsd@gmail.com, **Year :** 2020, **Pages :** 16+400, **Price :** Rs.500/-.

This book is an English translation of the original book **'Samaya and Samayasara'** on which the author Dr. Dhing was awarded with the Kundakunda Gyanpitha Puraskar in 2017. The book consists of 5 chapters each having 4 sub-chapters. The first chapter deals with the personality and works of Acarya Kundakunda. The second chapter evaluates the contents of

Samayasāra. The nature of pure soul, bheda-vijñāna and Samyagdarśana are well described in it. Chapter third describes the nine elements or tattvas and chapter fourth deals with the concept of kartā and karma. The fifth chapter focuses on spiritual aspect of Samayasāra.

There are English books on Samayasāra as (1) Essence of Samayasāra by Dr. Jayanti Lal Jain, Chennai (2) Soul Science (Part 1 & 2) by Dr. Parasmal Agarwal.

This book has its own quality. It gives a thorough light on Samayasāra, step by step and useful for all learners in some respect. Samayasāra is a famous treatise for spiritual understanding of soul through niścaya naya. It is a work of dravyanuyoga. Niścaya naya clarifies the ultimate truth of the soul and vyavahāra naya helps in understanding and transforming the conduct towards the pure nature of soul.

English translation by Dr. Sangeetha Khariwal is quite comprehensive and conveying the original message of the book. Book is readable by every curious person.

Essence of Sallekhanā : Living While Dying (Bhagawatī Ārādhanā and other Sources), Dr. Jayanti Lal Jain & Dr. Priyadarshana Jain, **Publishers :** (1) Department of Jainology, University of Madras, Phone-9840368851, Email-jainunom@gmail.com, (2) Research Foundation for Janology, Chennai, Phone-044-25298082, jainology1982@gmail.com (3) Prakrit Bharati Academy, Jaipur, Phone-0141-2524827/ 2520230 Email-prabharati@gmail.com, **Year :** 2019, **Pages :** 232, **Price :** Rs. 300/-.

Bhagavatī Ārādhanā of Achārya Shivārya is one of the great texts on sallekhanā. Most of the Prakiṇaka literature in Shvetambara tradition is concentrated on saṃlekhanā & samthārā. Acārāngasūtra, Uttaradhya Sutra etc. also mention Paṇḍita Maraṇa, Sakāma Maraṇa or Saṃlekhanā. In Digambara tradition Bhagavatī Ārādhanā is focussed on Sallekhanā. Department of Jainology in University of Madras took up a project on this text under the guidance of Dr. Jayanti Lal Jain and active participation of Dr. Priyadarshana Jain.

This book presents the process of Sallekhanā and Paṇḍita Maraṇa on the basis of Bhagvatī Ārādhanā. Through understanding the whole concept of Sallekhanā one can decide to make death as cautious dying with equanimity and piousness of his soul.

When in the modern context, some persons raise question on sallekhanā saṃthārā, this book should be read by them. This will give answers to their questions. The book consists three parts. Part I is the essence of Bhagavatī Ārādhanā, Part II contains select references from the Shvetambara tradition and Part III is a set of FAQS on the subject. In the case of impending and inevitable death, one should make a plan to adopt enlightened death. This book mentions forty aspects for Sallekhanā Samādhi Maraṇa. The book give extra information about the Sallekhanā Maraṇa accepted by old monks and a list of Sallekhanā Videos on YouTube. Thus this book is a valuable text on Sallekhanā for the readers and for the courts.

-S-1, 28 Ayuvan Singh Nagar, Behind Digamber Jain Temple, Maharani Farm, Durgapura, JAIPUR-302018 (Rajasthan)

❁ जो साधक प्रार्थना के रहस्य को समझकर आत्मिक-शान्ति के लिए प्रार्थना करता है, उसकी समस्त आधि-व्याधियाँ दूर हो जाती हैं, चित्त की आकुलता और व्याकुलता नष्ट हो जाती है और वह परमपद का अधिकारी बन जाता है।

-आचार्यश्री हस्ती

10 मई 2022
जिनवाणी 71
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

आत्मसाधना में निरत पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में साधुमार्गी शान्त-क्रान्ति संघ के आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. का पावन पदार्पण

गतमाह के गौरवपूर्ण आयाम

स्थानकवासी परम्परा में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, सामायिक-शीलव्रत के सम्प्रेरक, जिनशासन गौरव **आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-9 सुखे-समाधौ पीपाड़ शहर में विराजित हैं।

पूज्य आचार्य भगवन्त सतत मौन एवं साधना-स्वाध्याय में लीन रहते हैं। भावी आचार्यप्रवर समस्त कार्यों का सम्पादन पूज्य आचार्य भगवन्त से विमर्शकर, प्राप्त निर्देशानुसार करते हैं एवं चहुँओर से आने वाले श्रद्धालुओं की श्रद्धा, भक्ति, भावना का सिञ्चन करते हैं।

मुमुक्षु की शोभायात्रा एवं अभिनन्दन-7 अप्रेल, 2022 को पीपाड़ श्रीसंघ के द्वारा दीक्षार्थी बहिन सुश्री रेणुजी गुन्देचा की दीक्षा के अनुमोदनार्थ शोभा यात्रा एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। प्रवचन सभा में भावी आचार्यश्री, श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा संयम की महिमा का वागरण किया गया तथा बहिन सुश्री रेणुजी गुन्देचा ने अपने वक्तव्य में आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यश्री आदि के उपकारों का वर्णन करते हुए संयम पथ पर आरूढ़ करने हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की।

तपस्या-श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. गुरुचरणों में प्रतिमाह अठाई की तपस्या कर रहे हैं, इस माह भी 8 से 15 अप्रेल तक अठाई की तपस्या एवं पारणा सुखे-समाधौ सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास स्वीकृति-परमाराध्य आचार्य भगवन्त ने रामनवमी 10 अप्रेल, 2022 को साधु मर्यादा के समस्त आगारों के साथ अग्राङ्कित चातुर्मास स्वीकृत फरमाये हैं-

1. तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	-	मेड़ताशहर (राज.)
2. व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा	-	सरवाड़ (राज.)
3. व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा	-	हिण्डौनसिटी (राज.)
4. व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा	-	खोह (राज.)
5. व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा	-	सवाईमाधोपुर नगरपालिका क्षेत्र
6. व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा	-	शेंदूर्णी (महाराष्ट्र)
7. व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	-	चौथ का बरवाड़ा (राज.)
8. व्याख्यात्री महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा	-	मेड़ताशहर (राज.)

आयम्बिल ओली-आयम्बिल ओली चैत्र शुक्ला सप्तमी शुक्रवार से प्रारम्भ होकर चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को सम्पन्न हुई, जिसमें पीपाड़ सकल संघ के 40 श्रावक-श्राविकाओं ने नवपद ओली की तपाराधना की।

आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. का पदार्पण एवं मधुर सम्मिलन-11 अप्रेल, 2022 को साधुमार्गी

शान्त-क्रान्ति संघ के आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. आदि ठाणा-5 का मंगल पर्दापण पीपाड़शहर में हुआ। आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दर्शन-वन्दन एवं चर्चा-वार्त्ता के लिए आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. स्वाध्यायभवन में पधारे। आचार्य भगवन्त ने फरमाया-''मैं तो अधिक विचरण करने में असमर्थ हूँ, इसलिये आप स्वयं मुझसे मिलने पीपाड़ पधार गये।'' आचार्यश्री विजयराजजी म.सा. ने फरमाया-''आपश्री की कृपा और आशीर्वाद लेने के लिए ही पीपाड़ आया हूँ, पिछले लम्बे समय से आपके दर्शन की अभिलाषा थी, जो आज पूर्ण हो गई।'' आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव ने फरमाया-''आपकी परम्परा से मेरा सम्पर्क और सम्बन्ध पूज्य गुरुदेव (आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा.) की सन्निधि में विरक्तावस्था में रहते हुए विक्रम सम्वत् 2013 से जब पूज्य श्री गणेशीलालजी म.सा. श्रमणसंघ के उपाचार्य थे तब से है, मैं तभी से रत्नसंघ का इस परम्परा के साथ सहृदय सम्बन्ध देखता आ रहा हूँ और यथाकाल से सम्बन्धों का निर्वहन कर रहा हूँ। मेरे गुरुदेव (आचार्यश्री हस्ती) ने एक सूत्र दिया था-**खुद से नहीं खुदा से जोड़ो, व्यक्ति से नहीं धर्म से जोड़ो, व्यक्ति से जुड़ने वाला व्यक्ति की सेवा करेगा और धर्म से जुड़ने वाला सभी चारित्रात्माओं की सेवा करेगा। मैं गुरु हस्ती के बताये पथ पर चलने का प्रयास कर रहा हूँ।** आज मेरा आपश्री से प्रत्यक्ष मिलना हो गया है। इसलिये मेरे द्वारा पूरे जीवनकाल में आपके प्रति कोई भूल-त्रुटि हुई हो, उसके लिए अन्तर्हृदय से क्षमायाचना करता हूँ।'' भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया-''गुरु हीरा, गुरु हस्ती के आदर्शों पर चलने वाले महापुरुष हैं। गुरु हस्ती ने अपने जीवन के सन्ध्याकाल में सभी परम्पराओं के आचार्यों से लिखित में क्षमायाचना की थी, इसी प्रकार गुरु हीरा इस समागम की बेला में आपश्री के पधारने से, प्रत्यक्ष में क्षमायाचना कर रहे हैं। जिस प्रकार आपके हृदय में गुरुदेव (गुरु हीरा) के लिए स्थान है, उसी प्रकार गुरुदेव के हृदय में आपश्री के लिए स्थान है।'' तदनन्तर आचार्यश्री विजयराजजी म.सा. ने फरमाया-''मेरे द्वारा, मेरे किसी भी संघ सदस्य के द्वारा आपश्री की किसी भी प्रकार की हुई अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना करता हूँ।''

पूज्य आचार्यप्रवरश्री विजयराजजी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव (गुरु हीरा) को फरमाया-''आपश्री ने जो भावी आचार्य का निर्णय लिया है, उस निर्णय का मैं अभिनन्दन करता हूँ, अभिवन्दन करता हूँ। आपने अपने मुख से यह घोषणा करके नये इतिहास का सृजन किया है। यह निर्णय आपको जीवन भर समाधि देने वाला होगा।''

इस प्रकार दोनों पुरुषों का परस्पर आत्मीय व्यवहार 11 से 14 अप्रेल, 2022 के मध्य प्रतिदिन की सौहार्दपूर्ण चर्चा, वार्त्ता के रूप में रहा तथा इस मधुर मिलन को देखकर जनसुमदाय अपने आपमें धन्यता की अनुभूति करने लगा।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक-भगवान महावीर जन्मकल्याणक चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 14 अप्रेल को तप-त्याग, धर्म-ध्यान के विविध आयामों के साथ धर्मोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। 17 अप्रेल को आचार्य भगवन्त ने अक्षय तृतीया पर्व पीपाड़सिटी में होगा, ऐसी स्वीकृति फरमायी। प्रत्येक अष्टमी, चतुर्दशी को श्राविका मण्डल श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. से पच्चीसबोल एवं विविध क्रियागत विवेक पर जिज्ञासा एवं समाधान करता तथा बालिका मण्डल भी ज्ञानार्जन कर रहा है।

प्रात:कालीन प्रार्थना श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. एवं प्रवचन श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. फरमाते हैं तथा दोपहर में महान् अध्यवसायी भावी आचार्यश्री उत्तराध्ययनसूत्र की वाचना 2 से 3 बजे तक फरमाते हैं।

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 बारणी, भोपालगढ़, रतकूडिया, साथिन होते हुए 22 अप्रेल को पीपाड़ शहर पधारे तथा 26 अप्रेल को गुरुदेव की आज्ञा अनुसार जोधपुर की ओर विहार कर गये।

राजनेताओं द्वारा दर्शन-वन्दन-4 अप्रेल को पूर्व गृहमन्त्री एवं वर्तमान में नेता प्रतिपक्ष माननीय **सुश्रावक**

श्री गुलाबचन्दजी कटारिया ने श्रावकोचित, विनय-विवेक, श्रद्धाभक्ति, भावना पूर्वक दर्शन, वन्दन, मांगलिक श्रवण कर धर्मलाभ लिया तथा 14 अप्रेल को राज्यसभा **सांसद श्री राजेन्द्रजी गहलोत** ने पूज्य आचार्यप्रवर सहित सभी चारित्रात्माओं को श्रद्धा-भक्ति भावना पूर्वक दर्शन-वन्दन किया। राजस्थान सरकार के **मुख्यमन्त्री माननीय श्री अशोकजी गहलोत** ने भी दर्शन, वन्दन, मांगलिक श्रवण कर धर्म लाभ लिया एवं उनसे श्रावकों ने जनहित के कार्यों के साथ-साथ धर्मसाधक-आत्मसाधक महापुरुषों के आचार एवं चर्या में सहकार की भावना से, ध्यान दिये जाने हेतु सकारात्मक सक्रियता की अपेक्षा की।

आचार्यभगवन्त के 84वें जन्मदिवस से पीपाड़ में पाँच साधक एकान्तर तपाराधनारत हैं एवं प्रतिदिन एकाशन, उपवास आदि विविध तपाराधना के साथ सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, स्वाध्याय इत्यादि विविध धर्मचर्याएँ यथारुचि, सश्रद्धा भक्तिभावपूर्वक कर रहे हैं।

पीपाड़ श्रीसंघ के आबालवृद्ध श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा-भक्ति भावना, आतिथ्यसत्कार, साधना-आराधना, सन्त-सती सेवा के आयाम उत्तरोत्तर प्रवर्धमान होकर गतिशील हैं। *-गिरीश जैन*

जयपुर में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. का पावन विचरण

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती **मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा के जयपुर प्रवास को लगभग 1 वर्ष होने का आया। मगर जयपुरवासियों को यही आभास होता है कि सन्त अभी आए ही हैं। यही कारण है कि जयपुर के उपनगरों से समय-समय पर श्रद्धालु उपस्थित होकर दर्शन, वन्दन, प्रवचन-श्रवण आदि में भाग ले रहे हैं। रविवारीय विशेष कक्षा हो अथवा अष्टमी, चतुदर्शी का संवर-पौषध का आह्वान हो। श्रद्धेय मुनि पुंगव राधानिकुञ्ज से पत्रकार कॉलोनी होकर मुहानामण्डी रोड़ जयनगर पधारे जहाँ प्रवचन के समय मुमुक्षु बहन सुश्री रेणुजी गुन्देचा का संघ द्वारा अभिनन्दन कार्यक्रम रखा गया। प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने मुमुक्षु बहन को इंगित करते हुए फरमाया-''बाहर में देह से और भीतर में मोह से युद्ध करना ही संयम है। आप जिनवाणी को जयवन्त करना, गुरु के गौरव को वर्धापित करना तथा कुल एवं संघशासन को महिमान्वित करना। जिस लक्ष्य के साथ संयम मार्ग का चयन किया है, उस लक्ष्य की सिद्धि में हमेशा अप्रमत्त रहना।'' तत्रस्थ प्रवचन सभा में मौजूद संघ पदाधिकारियों ने तथा संघाध्यक्ष श्री प्रमोदजी मोहनोत ने मुमुक्षु बहन का अभिनन्दन करते हुए इष्ट सिद्धि की मंगल कामना की। अगले दिन सन्तत्रय विहार करके प्रतापनगर पधारे, जहाँ चार दिन का प्रवास रहा। इस बीच शनिवार को प्रात: 7 से 8 बजे **'सामायिक से मानसिक स्वास्थ्य'** विषय पर एक संगोष्ठी रखी गई। स्थानीय युवाओं ने उस संगोष्ठी में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उस संगोष्ठी को डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने सामायिक की महिमा को रेखाङ्कित करते हुए कहा कि सामायिक को जीने वाला निश्चित ही शुद्ध मनोभाव को प्राप्त करता है।

श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने उपस्थित विशाल युवा समुदाय को सम्बोधित करते हुए फरमाया-''आप युवा हो, ऊर्जावान हो, पढ़े-लिखे हो। आप सामायिक से जुड़ें। सामायिक से तन-मन दोनों स्वस्थ होते हैं। हमारी सामायिक केवल औपचारिक बनकर नहीं रहे, सामायिक के हार्द को समझें, सकारात्मक सोच को विकसित करें, परिस्थिति को नहीं, मन:स्थिति को बदलें।'' मुनिराज ने उपस्थित युवावर्ग से साप्ताहिक सामायिक करने का आह्वान किया।

यहाँ से विहार कर एन.आर.आई कॉलोनी तथा सेक्टर 19 प्रतापनगर तथा श्यामकॉलोनी, सिद्धार्थनगर, गोकुलवाटिका सभी स्थानों पर एक-एक दिन विराजकर प्रवचन करते हुए धर्मप्रभावना की। दो दिन के लिए मालवीयनगर धर्मस्थानक विराजे। यहाँ पर भी रविवारीय प्रात: 7 से 8 बजे तक विशेष कक्षा रखी गई जिसका विषय था-**'सामायिक के आठ पाठों का मर्म।'** इस कक्षा को निवर्तमान अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफणा, जोधपुर ने साहित्यिक शब्दों में एक-एक पाठ का मर्म बताया। तदनन्तर श्रद्धेय मुनिश्री ने पाठों के अर्थ गवेषणा के साथ ही तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दन विधि की तथा उसमें विवेक आदि की सामान्य जानकारी कराई। दोनों दिन प्रवचन एवं विशेष कक्षा में उपस्थित जनसमुदाय से स्थान छोटा महसूस हुआ। आसपास के लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया। यहीं पर श्री महेन्द्रकुमारजी संचेती ने सपत्नीक एवं श्री नरेन्द्र कुमारजी संचेती ने सपत्नीक शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। यहाँ से विहार कर मुनित्रय मॉडल टाऊन होते हुए श्री पारसमलजी गोखरू के आग्रह पर कैलाशपुरी पधारे। यहाँ एक प्रवचन किया तथा एक दिन विराजते हुए पूरे गोखरू परिवार को गुरुभक्ति, संघभक्ति का मार्गदर्शन किया। यहाँ से आप सीधे राधानिकुञ्ज पधारे जहाँ पहले से सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा तथा साध्वी प्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा विराजित थे। जहाँ संघस्तर पर महावीर जयन्ती कार्यक्रम रखा तथा सम्पूर्ण जयपुरवासियों को सामूहिक सामायिक के साथ मनाने का आह्वान किया गया। यह कार्यक्रम वहाँ स्थित गुलाबगढ़ के खुले प्राङ्गण में हुआ। पूरा परिसर सामायिक करने वालों से खचाखच भर गया।

यहाँ से विहार कर सन्तप्रवर महारानी फार्म पधारे जहाँ चार दिन विराजे। यहाँ भी रविवारीय कक्षा प्रात: 7 से 8 बजे रखी, जिसका विषय था-**'सामायिक की विधि का औचित्य।'** प्राचार्य श्री प्रकाशचन्दजी जैन तथा श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने उपस्थित समुदाय को सार पूर्ण भाषा में औचित्य समझाया।

यहाँ से विहार कर मुनिवृन्द महावीरनगर सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे। यहाँ एक सप्ताह विराजे तथा रविवारीय धार्मिक कक्षा में 'नवकार मन्त्र का पाठ' पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा तथा श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने सुन्दर विश्लेषण किया और बताया कि हमें चमत्कार को नमस्कार में विश्वास नहीं रखना, बल्कि नमस्कार रूप नम्रता होगी तो स्वत: चमत्कार घटित हो जायेंगे। विहार के क्रम में एक-एक दिन बरकत नगर और सी-स्कीम पधारे। सर्वत्र सन्तों के विराजने से धर्मप्रभावना का वातावरण बना हुआ है।

-संजीव कोठारी, मन्त्री

राधानिकुञ्ज, जयपुर-परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-3 राधानिकुञ्ज, कृष्णा सागर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में एवं साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-11 निकटवर्ती भवन में सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं।

श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का किशनगढ़, दूदू होते हुए जयपुर के उपनगरों में विचरण कर 9 मार्च को यहाँ पदार्पण हुआ। तब से यहाँ प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण, रात्रिकालीन संवर, ज्ञानचर्चा आदि का क्रम निरन्तर गतिमान हैं। प्रतिदिन प्रवचन में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा अब तक 24 तीर्थङ्करों की जीवनी से सम्बन्धित तथा प्रत्येक रविवार को अलग-अलग विषय जैसे-लोगस्स, पेंसठिया यन्त्र, इच्छाकारेणं, तिक्खुत्तो, कायोत्सर्ग पाठ आदि पर तथा श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. द्वारा नवपद ओली, आठ प्रभावना आदि विषयों पर रोचक प्रसङ्ग फरमाए गए। श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. एवं **साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य में होली चातुर्मासिक पर्व एकाशन तप एवं तीन-तीन सामायिक

साधना के साथ तथा आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 84वाँ जन्मदिवस 84 संवर की आराधना के साथ मनाया गया जिसमें **मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा का भी सान्निध्य मिला। 30 मार्च को प्रवचन के पश्चात् मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा का संघ द्वारा अभिनन्दन किया गया। रविवार 24 अप्रेल को राधानिकुञ्ज में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम प्रवचन के दौरान रखा गया, जिसमें श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने **'पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं का संघ के प्रति कर्त्तव्य बोध'** विषय पर विशेष एवं प्रभावी उद्बोधन दिया। दोपहर में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. की सन्निधि में प्रतिदिन श्राविकाओं की पच्चीसबोल एवं सड़सठ बोल की कक्षा तथा श्रावकों की सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् जिज्ञासा-समाधान के रूप में धर्मचर्चा अबाध रूप से प्रवाहमान है। सन्त-सतियों के विराजने से सम्पूर्ण क्षेत्र एवं आसपास के उपनगरों में भी धर्म के प्रति उत्साह दिखाई दे रहा है। श्रावक-श्राविकाएँ यहाँ हो रही प्रत्येक गतिविधि में बड़ी संख्या में उपस्थित होकर धर्म के क्षेत्र में अग्रणी बने हुए हैं।

-मनोज कुमार जैन 'पाटोली वाले', जयपुर

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. का नाड़सर में प्रवास

नाड़सर ग्राम की धर्मधरा पर परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-10 के सान्निध्य में तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान का निरन्तर ठाठ लगा रहा।

श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-7 भोपालगढ़ से 5 मार्च को विहार करके 6 मार्च को नाड़सर ग्राम पधारे। अटूट आस्था, उत्साह एवं जय-जयकारों के साथ स्वाध्याय भवन में प्रवेश हुआ। साथ ही श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 गोटन से विहार कर 7 मार्च को प्रात: नाड़सर पधारे। इस प्रकार ठाणा-10 का ग्रामवासियों को दर्शन, प्रवचन, मांगलिक श्रवण का लाभ मिला। प्रात:कालीन प्रार्थना, दोपहर 1.15 बजे प्रवचन, सायंकालीन प्रतिक्रमण तथा धर्मचर्चा सुचारू रूप से चलती रही। गुरु भगवन्तों के विराजने से 03 अप्रेल तक प्रतिदिन एक उपवास, एक एकाशन की लड़ी निरन्तर रूप से चलती रही।

25 मार्च चैत्र कृष्णा 8 को भगवान ऋषभदेव का जन्मकल्याणक एवं आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 84वाँ जन्मदिवस पर एकाशन तप एवं तीन-तीन सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया और खूब तप-त्याग और दान-पुण्य का कार्य हुए। गाँव के इतिहास में चार चाँद लगे जब श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-10 प्रवचन सभा में पधारें एवं सभी गुरु भगवन्तों ने प्रवचन में गुरु गुणगान किया तथा क्रमानुसार सभी सन्तों द्वारा मांगलिक फरमाई गई। वास्तव में गाँव के लिए एक अद्भुत नज़ारा था। श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. की सद्प्रेरणा से गाँव के सैकड़ों लोगों ने मांस सेवन, मदिरा, गुटखा आदि का त्याग किया तथा अनेक नियम ग्रहण किये।

बाहर से दर्शनार्थी बन्धुओं का निरन्तर आवागमन बना रहा। नाड़सर के प्रवासी समस्त लोढ़ा परिवार ने भी दर्शन, प्रवचन एवं धर्म-साधना का लाभ लिया। 29 दिनों में तपस्या निम्न प्रकार से हुई-एकाशन 135, उपवास 85, आयम्बिल 10, बेला 2, तेला 13, चोला 1, सात की तपस्या 1, अठाई 3 जो वास्तव में गाँव में एक रिकार्ड है। 29 दिनों तक गोटन निवासी सुश्री पायल चौपड़ा लगातार मौन-साधना एवं गुरु-सेवा में रही। शीलव्रत के भी 5 प्रत्याख्यान हुए। 84वें जन्म दिवस पर 108 पेटी गुड़ गौशाला में एकत्रित हुआ। श्रद्धालु सभी जैनेतर परिवारों ने उत्कृष्ट भावना से प्रवचन एवं गोचरी का लाभ लिया। श्री महेन्द्रसिंहजी राठौड़, श्री रामपालजी ग्वाला, श्री रामनिवासजी ताडा, श्री सुनीलजी माली ने विहार-सेवा एवं गोचरी-सेवा का लाभ लिया। भोपालगढ़ प्रधान श्रीमती शान्तिदेवीजी जाखड़, मूण्डवा प्रधान श्री रेवन्तमलजी डाग, नाड़सर सरपंच श्रीमती रामभरोसीजी जलवाणिया,

बारणी सरपंच, रजलाणी सरपंच, प्रशासनिक अधिकारियों ने भी प्रवचन का लाभ लिया। भोलारामजी देवरी के उत्तराधिकारी रामदासजी शास्त्री एवं कबीर आश्रम सोयला ग्राम के माधवदासजी महाराज गुरु दर्शनार्थ पधारे एवं प्रवचन का लाभ लिया। आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यप्रवर ने महती कृपा करके छोटे से गाँव को स्वर्णिम अवसर प्रदान किया जो सदैव स्मरणीय रहेगा। *-प्रकाशचन्द लोढ़ा, मन्त्री*

महासती मण्डल द्वारा जोधपुर में आगम अध्ययन की प्रेरणा

जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी भावी आचार्य परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की असीम अनुकम्पा से सूर्यनगरी जोधपुर के भाई-बहिनों को निरन्तर धर्माराधना एवं साधना करने का पावन अवसर प्राप्त हो रहा है। **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा.** आदि ठाणा-7, **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.** आदि ठाणा-7 एवं **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** आदि ठाणा-13 जोधपुर की पावन धरा के उपनगरों में विचरण करते हुए जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं। सूर्यनगरी जोधपुर के श्रावक-श्राविकाओं को महासती जी द्वारा निरन्तर **हर पन्द्रह दिन में एक आगम के स्वाध्याय की प्रेरणा की जा रही है** तथा 15 दिन पश्चात् उस आगम से सम्बन्धित कक्षा लेकर जिज्ञासा-समाधान बहुत ही प्रभावशाली ढ़ंग से किया जा रहा है। इसके माध्यम से लगभग 75 से 80 श्रावक-श्राविकाएँ एवं युवा आगम स्वाध्याय कर रहे हैं। महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. जोधपुर के उपनगरों में विचरण करते हुए श्रावक-श्राविकाओं को ज्ञान-ध्यान में आगे बढ़ने की पावन प्रेरणा कर रहे हैं तो साथ ही महासती चन्द्रकलाजी म.सा. की शारीरिक अस्वस्थता होने के बावजूद भी जोधपुर के उपनगरों में विचरण करते हुए जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं।

प्रत्येक रविवार को **'एक क़दम धर्म की ओर'** कक्षा के माध्यम से **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** आगम से सम्बन्धित उदाहरणों के माध्यम से नये-नये विषय को श्रावक-श्राविकाओं के सामने अनूठे अन्दाज में इस तरह से समझाते हैं कि सैकड़ों युवक उनकी प्रवचन शैली से प्रभावित होकर अपने आपको भाग्यशाली समझ रहे हैं। 15 से 30 वर्ष के युवक-युवतियों के लिए प्रत्येक रविवार को **'फ्रेंड्स टू जिनशासन'** कक्षा आयोजित की जा रही है जिसके माध्यम से तरुण अवस्था वाले संघ के सदस्य भी जिनशासन से जुड़ रहे हैं।

रत्नसंघ जोधपुर का परम सौभाग्य है कि 7 मई को बेंगलुरु में दीक्षित होने जा रही **दीक्षार्थी बहन सुश्री रेणुजी गुंदेचा का स्वागत अभिनन्दन करने का सुनहरा अवसर सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा** में 10 अप्रैल को मिला। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान प्रकाशजी टाटिया ने इस अवसर पर दीक्षार्थी के त्याग पथ की अनुमोदना करते हुए प्रशस्ति-पत्र भेंट करते हुए उनका अभिनन्दन किया। साथ में संघ संरक्षक श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती श्वेताजी कर्नावट, रत्नसंघ जोधपुर के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा, मन्त्री श्री नवरतनजी गिड़िया, कोषाध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी ओस्तवाल, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी, मन्त्री श्रीमती पूजाजी गिड़िया, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा, सचिव श्री लोकेश जी कुम्भट एवं संघ के सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा दीक्षार्थी बहिन का अभिनन्दन किया गया।

चैत्र सुदी त्रयोदशी 14 अप्रैल को **भगवान महावीर जन्मकल्याणक** के पावन अवसर पर जोधपुर संघ द्वारा हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी **सामूहिक सामायिक का आयोजन ओसवाल कम्युनिटी सेण्टर** तारघर के सामने भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिति के तत्त्वावधान में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रात: 7 से 8 बजे तक किया गया। जिसमें **महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** की सुशिष्या **महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.** ने भगवान महावीर के जीवन-चरित्र को सारगर्भित, प्रेरणादायी एवं प्रभावशाली तरीकों से सभी श्रावक-

श्राविकाओं के समक्ष प्रस्तुत किया। जिसे सुनकर उपस्थित श्रोताओं ने भगवान महावीर की धीरता, वीरता, गम्भीरता आदि गुणों का अनुभव किया। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म. सा. की सत्प्रेरणा से महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर जोधपुर स्थित रेनबो हाउस से सामूहिक सामायिक का आयोजन प्रारम्भ हुआ था, जो कई वर्षों से जोधपुर में लगातार चल रहा है। इस वर्ष के कार्यक्रम में सकल जैन समाज के जन-समूह का अपार उत्साह देखने को मिला, उसने अतीत की स्मृतियों को तरोताजा कर दिया। युवक परिषद्-जोधपुर के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने कार्यक्रम के सञ्चालन के साथ प्रभु महावीर जन्मकल्याणक पर स्वरचित गीतिका प्रस्तुत कर धर्म सभा को भक्तिमय बना दिया।

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के **501 आयम्बिल की साधना के क्रम में निरन्तर 36 दिवसीय आयम्बिल तप की पूर्णाहुति** के पावन अवसर पर 24 अप्रेल को पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में सैकड़ों श्रावक- श्राविकाओं ने आयम्बिल, एकाशन एवं नीवीं के साथ स्वाध्याय करके तपस्या की अनुमोदना की। महासती जी द्वारा सुदीर्घ आयम्बिल तप की साधना के साथ स्वाध्याय, प्रवचन, प्रभावशाली कक्षाएँ, आगम वाचनी आदि सभी कार्यक्रम सम्पादित किए जा रहे हैं। महासतियाँजी की प्रभावी प्रेरणा से तप की अनुमोदना में अनेक भाई-बहिनों ने प्रतिमाह कम से कम एक आयम्बिल करने का नियम ग्रहण किया।

जोधपुर संघ के श्रद्धाशील एवं रुचिशील भाई-बहिन नियमित ज्ञान, ध्यान एवं स्वाध्याय का लाभ प्राप्त करते रहे हैं। सन्त-सतियों की विहार-सेवा तथा श्रमणोचित औषधोपचार-सेवा का जोधपुर संघ को निरन्तर लाभ प्राप्त हो रहा है। बाहर से पधारने वाले दर्शनार्थी बन्धुओं के आतिथ्य सत्कार में संघ के सभी कार्यकर्त्ता तन-मन-धन से समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं। *-नवरतन गिड़िया, मन्त्री*

जयपुर में भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महोत्सव सामूहिक सामायिक साधना के साथ मनाया गया

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 14 अप्रेल, 2022 को जयपुर की राधानिकुञ्ज कॉलोनी में मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6 एवं साध्वी प्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-11 के पावन सान्निध्य में भगवान महावीर का 2622वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव चतुर्विध संघ की उपस्थिति में गुलाबगढ़ परिसर में लगभग 1500 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में मनाया गया। जयपुर के इतिहास में स्थानकवासी समाज में इतना भव्य कार्यक्रम लगभग 20-25 वर्षों पश्चात् देखा गया। प्रातः 8.30 बजे से प्रवचन रखा गया।

महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा. ने बताया कि भगवान महावीर ने नयसार के भव में नया सार पाया। **महासती श्री निरञ्जनाजी म.सा.** ने भगवान महावीर के सिद्धान्त अहिंसा, अनेकान्तवाद और अपरिग्रह पर विशेष प्रकाश डाला।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने खड़े होकर ओजस्वी प्रवचन फरमाते हुए कहा कि भगवान महावीर ने महान् जीवन जीया एवं सबके लिए महान् विचार दिए। मुनिवर्य का प्रवचन सभी एकाग्रचित्त होकर सुन रहे थे। (प्रवचन का अंश इसी अंक में पृथक् से प्रकाशित है)।

तदनन्तर **श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.** ने तथा **श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.** ने भगवान महावीर की विशेषताओं से अवगत कराते हुए उनके जैसे ही जीवन जीने की मंगल प्रेरणा दी। अन्त में **श्रद्धेय श्री**

गौतममुनिजी म.सा. ने अपनी सार गर्भित प्रभावी वाणी के माध्यम से फरमाया कि आज का दिन भीतर में सुप्त महावीरत्व को जगाने का है, जैनत्व को जीने के संकल्प का है। मुनिराज ने फरमाया कि उनके सन्देशों को जीवन में सजाना था, किन्तु हमने उन्हें शास्त्र में सजा दिया। उनकी पावन मूरत मन मन्दिर में बसानी थी, हमनें उन्हें पाषाण मन्दिरों में बसा दिया, उनका जीवन अनुकरणीय था, हमने केवल वन्दनीय बना दिया। यद्यपि आज भी ऐसे संकल्प के धनी हैं जो महावीर के सिद्धान्तों को जीते हैं। इस सभा में मौजूद एक ऐसे व्यक्ति हैं जो विदेश रहते हैं, एक बार मित्र के यहाँ पार्टी में भोजन के लिए आमन्त्रित किया तब उन धर्मनिष्ठ व्यक्ति ने कहा–''मैं उस आयोजन में नहीं जाता जहाँ जमींकन्द का प्रयोग होता है–आमन्त्रण देने वाला असमञ्जस में पड़ गया।'' अगले दिन आया और कहने लगा–आपको चलना होगा। हमने खाने का मीनू ही परिवर्तित कर दिया है। ऐसी दृढ़ता से जीने वाले ही 'जमाना हमारे से है' कहावत को चरितार्थ करते हैं। अन्त में मुनिराज ने मांसाहारी होटल में किसी तरह का कोई आयोजन नहीं करने, शादी में सड़कों पर डांस न करने, आतिशबाजी, सामूहिक रात्रि भोजन आदि नहीं करने का संकल्प कराया। जयपुर में सम्भवतया महावीर जयन्ती का यह प्रथम अवसर था जब सम्पूर्ण जयपुर सामूहिक सामायिक के साथ उपस्थित था। मुनिराज ने प्रेरणा दी कि हर वर्ष यह आयोजन इसी प्रकार गतिमान रहे।

श्राविकामण्डल, युवती मण्डल, श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत बालिकाओं ने भजन गाकर भगवान महावीर के गुणगान किए। इस दिन **2621 सामायिक का लक्ष्य रखा, जिसमें लक्ष्य से अधिक लगभग 3,000 सामायिक की साधना हुई।** श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर की ओर से सभी के लिए भोजन की व्यवस्था रखी गई। इस कार्यक्रम में संघ के पदाधिकारी, राधानिकुञ्ज स्थित स्थानीय श्रावक–श्राविकाएँ एवं स्थानीय युवक परिषद् के सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा। *–संजीव कोठारी, मन्त्री*

चेन्नई–श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में श्रमण भगवान महावीर स्वामी का 2622वाँ जन्म कल्याणक चैत्र शुक्ला त्रयोदशी गुरुवार 14 अप्रेल को प्रातःकाल सात बजे से स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट चेन्नई में तीन–तीन सामायिक की साधना के साथ जप–तप पूर्वक मनाया गया। वीर गुण गौरव गाथा के अन्तर्गत स्वाध्यायी श्री महावीरजी बागमार, श्री मोहितजी छाजेड़, श्री नवरतनजी बागमार, श्री गौतमचंदजी मुणोत, श्री ज्ञानचंदजी बागमार, श्री मनीषजी उज्ज्वल, श्री वी.निखिलजी कांकरिया ने संक्षिप्त में संस्मरणों पर प्रकाश डाला। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के प्रचार–प्रसार सचिव श्री आर. नरेन्द्रजी कांकरिया ने इस अवसर पर श्रमण भगवान महावीर स्वामी के प्रमुख 27 भवों, साधनामय जीवन एवं केवलीचर्या पर रोचक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का सञ्चालन किया। श्री अशोकजी रांका ने प्रभु महावीर के गुणगान में स्तुति रखी। धर्म सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं ने तप–त्याग, साधना–आराधना करते हुए जिनशासन की शोभा बढ़ाते हुए कर्मों की निर्जरा की। श्री विनोदजी जैन ने सामूहिक नियम, श्रीमती पुष्पलताजी गादिया को सात नींवी के और पौरसी उपवास आदि प्रत्याख्यान करवाए।

–आर. नरेन्द्र कांकारिया, प्रचार–प्रसार सचिव

जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्र-छात्राओं को सुनहरा अवसर

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त–शाला) में वर्ष 2022–23 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

नैतिक–आध्यात्मिक संस्कारों के साथ जयपुर में रहकर उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों हेतु संस्थान में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ है। कक्षा 8वीं से ऊपर के छात्र संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास–भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटर शिक्षण, इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित एवं अनुशासित रहकर

अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें।

नोट–रजिस्ट्रेशन फार्म रत्नसंघ की वेबसाइट ratansangh.com पर जाकर About us option पर click कर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पेज से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा हमारे फेसबुक पेज https://www.facebook.com/profile.php?id=100011420126008 से भी जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें–दिलीप जैन 'प्राचार्य', ए–9, महावीर उद्यानपथ, बजाजनगर, जयपुर–302015 (राज.) फोन न. 0141–2710946, 94614–56489, 79762–46596 Email: ahassansthan@gmail.com

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) में वर्ष 2022–23 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) में प्रवेश हेतु सत्र 2022–23 के लिए आवेदन–पत्र आमन्त्रित हैं। कक्षा 7वीं से 12वीं एवं स्नातक प्रथम वर्ष में अध्ययन की इच्छुक छात्राएँ आवेदन कर सकती हैं। छात्रावास में बालिकाओं के लिए नि:शुल्क आवास, भोजन एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था है। शैक्षणिक अध्ययन हेतु प्रवेश लेने वाली छात्राओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देना अनिवार्य है। छात्रावास में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का ध्यान रखते हुए समय–समय पर मोटिवेशनल क्लासेज, सेमिनार, वेबिनार, गृह कौशल, पर्सनलिटी डवलपमेंट् जैसी विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं। प्राप्त आवेदनों में वरीयता क्रम के अनुसार चयनित छात्राओं का साक्षात्कार लिया जायेगा। प्रवेश पाने वाली छात्राओं को संस्थान द्वारा निर्धारित नियमों का पूर्ण पालन करना अनिवार्य है। इच्छुक छात्राएँ अपना आवेदन पत्र भर कर संस्थान में जमा करा सकती हैं।

आवेदन–पत्र प्राप्त करने एवं जमा कराने हेतु सम्पर्क सूत्र–श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, 12/251 के सामने, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर–302020 (राज.), मो. 9314506509 E-mail-sjratangirlssansthan@gmail.com

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय–समय पर ये संघ–समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक–नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास–भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप–सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन–निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण–संवर्द्धन–पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेंजे।

खाते का विवरण:-Name : ***GAJENDRA CHARITABLE TRUST***, Account Type : *Saving,* Account Number : ***10332191006750***, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Custumer ID : 35288297 **निवेदक :** डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्राँजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेंजे।

खाते का विवरण:-Name : ***SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL***, Account Type : *Saving,* Account Number : ***51026632997***, Bank Name : *SBI*, Branch : Bapu Bazar, Jaipur, Ifsc Code : SBIN0031843 **निवेदक :** अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका) में अधिष्ठाता की आवश्यकता

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर में बालिकाओं के अध्ययन हेतु सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (छात्रावास) हेतु एक अनुभवी एवं जैनधर्म की तत्त्वज्ञा श्राविका की अधिष्ठाता हेतु आवश्यकता है। अधिष्ठाता पद हेतु इच्छुक अनुभवी महिला अभ्यर्थी अपने बॉयोडाटा के साथ आवेदन-पत्र मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। **सम्पर्क सूत्र**-विनयचन्द डागा-कार्याध्यक्ष 9314506509, अशोक कुमार सेठ-मन्त्री 9314625596 *-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

युवक परिषद् द्वारा ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आगामी ग्रीष्मकालीन अवकाश में धार्मिक शिक्षण एवं **नैतिक संस्कार शिविरों का 22 मई से 05 जून, 2022** तक आयोजन किया जा रहा है। आप सभी से निवेदन है कि अपने यहाँ आयोजित होने वाले शिविर में अधिक से अधिक शिविरार्थियों को भेजने का श्रम करावें। शिविरों के

बारे में अधिक जानकारी हेतु श्री निपुणजी डागा-उपाध्यक्ष (धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविर) 9821044803 तथा संघ कार्यालय 7014631496 पर सम्पर्क करें। *-विकासराज जैन, महासचिव*

श्री जैन रत्न युवती मण्डल जयपुर द्वारा आयोजित प्रतियोगिता का परिणाम

प्रभु महावीर के जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में पुच्छिंसु णं स्तोत्र का अर्थ समझने के लिए एक ऑनलाइन कक्षा श्री प्रकाशचन्द जी जैन (प्राचार्य) द्वारा ली गयी। इस कक्षा को 108 लोगों ने सुना और ज्ञान अर्जित किया। तत्पश्चात् महावीर जयन्ती के दिवस पर प्रभु महावीर पर आधारित एक क्विज़ प्रतियोगिता रखी गयी, जिसमें लगभग 75 लोगों ने भाग लिया। युवती मण्डल ने प्रभु महावीर की वाणी को बच्चों को प्रैक्टिकल रूप में समझाने के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया, 'मैं महावीर क्यूँ बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।' जिसमें बच्चों ने प्रभु वीर के गुणों को आत्मसात् करने के संकल्प किये। इसमें 42 प्रतिभागी रहे, जिनकी उम्र 8-14 वर्ष थी। विजेता रहे बच्चों के नाम निम्नानुसार हैं-

8 से 10 वर्ष आयु वर्ग में-1. अंशजी जैन, 2. युक्तिजी जैन और करणजी जैन, 3. स्वर्णिमाजी जैन और पारखीजी कोठारी

11 से 14 वर्ष आयु वर्ग में-1. ऋषिजी सांखला और पार्श्वजी लोढ़ा, 2. योग्य बाफना, 3. काश्वीजी जैन। छह वर्षीय रौनकजी जैन को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया।

उपर्युक्त विजेताओं को युवती मण्डल की ओर से **परिवार सहित होली डे गिफ्ट वाउचर** प्रदान किया। ऑनलाइन प्रतियोगिता की मुख्य विजेता अनैशाजी जैन रही। *-संगीता लोढ़ा, मन्त्री*

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 17 जुलाई, 2022 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा दिनांक 17 जुलाई 2022, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा, ज्ञान वृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अत: ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म दलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन-पत्र, पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अंतिम दिनांक 17 जून-2022 है। नियत समय में आवेदन-पत्र जमा कराना अनिवार्य है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरुपार्क, जोधपुर-342003 (राज.) 291-2630490, व्हाट्सएप्प नं. 7610953735 Website : jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

सेवाभावी डॉ. गोरधन लाल पाराशर की नि:स्थार्थ सराहनीय सेवाएँ

जोधपुर के राष्ट्रीय एवं विश्वविख्यात ऑस्टियोपैथी चिकित्सक (मतलब अंगूठे से दर्द को छूमन्तर करना) डॉ. गोरधनलालजी पाराशर गुरु भक्ति के कारण स्वयं उपस्थित होकर समय-समय पर आचार्यश्री हीराचन्द्रजी

म.सा. की सेवाभाव से निरन्तर सम्भाल कर रहे हैं। आचार्यश्री को चलने में परेशानी रहती है। डॉ. पाराशर अपने ज्ञान, अनुभव और प्रसिद्धि से बड़े-बड़े राजनेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों एवं धनाढ्य लोगों को समय दे या न दे, किन्तु गुरु भगवन्तों की सेवाभक्ति में नि:स्वार्थ भाव से श्रमणोचित औषधोपचार के लिए आप सदा सक्रियता बनाए रखते हैं। अत: आपका कृतित्व अनुकरणीय-अनुमोदनीय है।

-मनमोहन कर्नावट, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष स्वास्थ्य समिति अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

चेन्नई में 25वाँ भगवान महावीर अवार्ड वितरण समारोह सम्पन्न

भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई के तत्त्वावधान में 25वें महावीर पुरस्कार के विजेताओं की घोषणा भारत के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एम. एन. वैंकटचलैया की अध्यक्षता वाली चयन समिति ने 20 अप्रेल, 2022 को की, जिसमें निम्नलिखित पुरस्कार विजेताओं का चयन किया गया-

1. पीपल फॉर एनिमल्स, सिरोही-राजस्थान (अहिंसा और शाकाहार के क्षेत्र में)-यह सबसे बड़ा ऊँट बचाव केंद्र है। यह वर्तमान में ऊँटों और अन्य जानवरों जैसे-मवेशी, गधों, कुत्तों, पक्षियों और अन्य जंगली जानवरों के लिए बचाव आश्रयों का संचालन करता है। यहाँ पूरे भारत से रेस्क्यू किए गए ऊँटों को भेजा जाता है।

2. श्री सत्यनारायणन मुंडयूर (शिक्षा के क्षेत्र में)-अंकल मूसा के नाम से पहचाने जाने वाले श्री सत्यनारायणन जी मुंडयूर ने 43 वर्ष उत्तर-पूर्व भारत के युवाओं के मन में शिक्षा का बीज बोने और विभिन्न स्तरों पर पढने के आंदोलनों का संचालन करने में बिताये हैं। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के लोगों की सेवा करने के लिए आयकर विभाग की अपनी सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दिया। अंकल मूसा ने अकेले अपनी मेहनत व जुनून से आबादी से दूर (off-the-beaten-path) के स्थान तेजू, वाकरो, चोंगखम, अंजॉ और लाथाओ में 13 पुस्तकालय स्थापित करके वहां के रहवासियों में पढने की आदत को बढ़ावा दिया है।

3. विवेकानन्द मिशन आश्रम नेत्र निरामे निकेतन (चिकित्सा के क्षेत्र में)-यह एक बहुत बड़ा नेत्र देखभाल केंद्र है जिसमें चैतन्यपुर (पूर्व मेदिनीपुर) और चंडी (दक्षिण 24 परगना) के नेत्र अस्पताल आते हैं। यह गाँवों में रहने वाले गरीब, खेतिहर मजदूर और अनुसूचित जाति के मछुआरे आदि लोगों को नेत्र देखभाल सेवाएँ प्रदान कर रहा है। जिनके पास ना तो सामर्थ्य है और ना ही स्वास्थ्य देखभाल की उचित पहुँच। यहाँ हर वर्ष 2.3 लाख से अधिक रोगियों का इलाज किया जाता है और 26,000 से अधिक सर्जरी की जाती हैं। जिसमें कुल सर्जरी का लगभग 60 प्रतिशत इलाज मुफ्त में किया जाता है।

4. नागालैंड गाँधी आश्रम (सामुदायिक और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में)-इसकी स्थापना सन् 1955 में श्री नटवर ठक्कर (1932-2018) के द्वारा नागालैंड के चुचुयिमलांग गाँव में की गई थी। आश्रम विगत 65 वर्षों से विभिन्न गतिविधियों का सञ्चालन कर रहा है जैसे-खादी और ग्रामोद्योग गतिविधियाँ शुरू करना, गाँवों में बालवाड़ी चलाना, गैर-पारम्परिक कृषि फसलों और खाद्य प्रसंस्करण, रेशम उत्पादन गतिविधियों को शुरू करना, नागाओं और बाकी के बीच सद्भावना और समझ को बढ़ावा देना, व्यक्तिगत संपर्कों के माध्यम से देश में राष्ट्रीय दिवस मनाना आदि।

-एन. सुगालचन्द जैन

जैन एकेडेमी ऑफ स्कालर्स, अहमदाबाद की भावी गतिविधियों पर विचार हेतु कॉन्क्लेव

विज्ञानवेत्ताओं एवं जैन विद्वानों की नवगठित संस्था जैन एकेडेमी ऑफ स्कॉलर्स की अहमदाबाद में 26-27 मार्च, 2022 को एक विचार-गोष्ठी (Conclave) आयोजित की गई, जिसमें देश के विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया

तथा कुछ विद्वान् ऑनलाइन भी जुड़े। विचारगोष्ठी का शुभारम्भ आचार्य नन्दीघोषसूरिजी के मंगलाचरण से हुआ। द्विदिवसीय गोष्ठी में 8 सत्रों को सन्तों एवं विद्वानों ने सम्बोधित किया तथा अनेक सारगर्भित विचार प्रस्तुत हुए, जिनको क्रियान्वित कर यह संस्था अपने कार्यों को अधिक सशक्त रूप में आगे बढ़ा सकती है। विचारगोष्ठी में संस्था के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. नरेन्द्रजी भण्डारी ने कहा कि जैनधर्म-दर्शन आज अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उपेक्षित है। बौद्धधर्म-दर्शन में जितना कार्य हो रहा है, उतना एवं उस स्तर का जैनधर्म-दर्शन में दिखाई नहीं देता है। अभी सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएँ हैं, किन्तु शोधपरक स्तरीय आलेखों की आवश्यकता है, ताकि जैन विद्या की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान हो सके। मुनि महेन्द्रकुमारजी ने कहा कि जैन आगमों एवं साहित्य का समग्र अध्ययन करने की आवश्यकता है। डॉ. शुगनजी जैन ने कहा कि विद्वानों को मिलकर कार्य करना चाहिए तथा युवा विद्वानों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। अल्पावधि एवं दीर्घावधि के प्रशिक्षण शिविर लगाने पर भी विचार हुआ।

संस्था के शोधार्थियों द्वारा एक 'दैनिक हिंसा गणक' (Daily Voilence Counter) तैयार किया गया है, जिससे प्रतिदिन हमारे द्वारा होने वाली हिंसा क्रिया की गणना कर उसमें कमी लायी जा सकती है। इस बिन्दु पर भी विचार हुआ कि जैनविद्या पर शोधकार्य हेतु शोधवृत्ति (Scholership) दी जानी चाहिए। समाज इसकी व्यवस्था करे। डॉ. सुलेखजी जैन ने अमेरिका के विश्वविद्यालयों में स्थापित जैन चेयरों के सम्बन्ध में चर्चा की। डॉ. बिपिनजी डोशी-मुम्बई, डॉ. धर्मचन्दजी जैन-जयपुर, डॉ. सुषमाजी सिंघवी-जयपुर, डॉ. अनिल कुमारजी जैन-जयपुर, डॉ. एल. सी. जैन-जयपुर, जसवन्तजी शाह-वापी, डॉ. एन. एल. कच्छारा-उदयपुर, डॉ. सी. देवकुमारजी-दिल्ली, डॉ. समणी चैतन्यप्रज्ञाजी-लाडनूँ, डॉ. सुरेन्द्रसिंहजी पोखरना-अहमदाबाद, डॉ. एम. बी. मोदी, डॉ. श्रीनेत्र पाण्डे-पुणे, डॉ. जीवराजजी जैन-जमशेदपुर, डॉ. वर्षाजी शाह-मुम्बई, डॉ. प्रतापजी संचेती-जोधपुर, श्री निखिलजी शाह, अशेषाजी पारिख आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. धर्मचन्दजी जैन-जयपुर एवं डॉ. अनिल कुमारजी जैन-जयपुर ने की। डॉ. डी. आर. मेहता ने मुख्य अतिथि के रूप में महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए। आचार्य श्री कनकनन्दीजी ने आशीर्वाद के रूप में उद्‌बोधन दिया। *-एस. एस. पोखरना-सचिव, अहमदाबाद*

संक्षिप्त समाचार

बेंगलूरु-श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट (रजि.) के ट्रस्टीजनों ने 20 अप्रेल, 2022 को ट्रस्ट मीटिंग में सर्वसम्मति से 'ट्रस्ट पदाधिकारियों' का चयन सानन्द सम्पन्न किया तथा दो ट्रस्टियों को ट्रस्टी के रूप में सम्मिलित किया। जिसमें श्री चेतनप्रकाशजी डूँगरवाल-अध्यक्ष, श्री मोहनराजजी अखावत-उपाध्यक्ष, श्री शान्तिलालजी गोटावत-मन्त्री एवं श्री जवरीलालजी गादिया-कोषाध्यक्ष चुने गये। श्री प्रकाशचन्दजी डूँगरवाल एवं दिलीप कुमारजी खारिवाल नये ट्रस्टी बने। *-चेतनप्रकाश डूँगरवाल, अध्यक्ष*

नागौर-श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ नागौर के चुनाव श्री कन्या पाठशाला में सम्पन्न हुए, जिसमें श्री कमलकिशोरजी कोठारी-अध्यक्ष, श्री सुरेशजी ललवानी-उपाध्यक्ष, श्री अर्जुनमलजी चोरड़िया-उपाध्यक्ष, श्री फतेहचन्दजी ललवानी-उपाध्यक्ष, श्री अजीतजी भण्डारी-मन्त्री, श्री चम्पालालजी सुराणा-सहमन्त्री, श्री सुभाषजी ललवानी-सहमन्त्री, श्री अशोकजी कोठारी-कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गये। *-सुरेश ललवानी, उपाध्यक्ष*

इन्दौर-देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर द्वारा मान्य शोध केन्द्र कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ एवं ज्ञानोदय पुरस्कार 2021 का समर्पण समारोह 27 मार्च, 2022 को कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के परिसर में पूज्य क्षुल्लक श्री विनयनन्दिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.

रेणुजी जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ में प्राकृत विभाग की अध्यक्ष **प्रो. कल्पनाजी जैन को कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार 2021 से सम्मानित किया गया।**

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. रेणु जैन इन्दौर ने कहा कि प्राचीन साहित्य का संरक्षण वर्तमान की आवश्यकता है और इसका प्रचार-प्रसार नई पीढ़ी को आगे आकर करना होगा। ज्ञान के इस नवाचार को आगे बढ़ाने में नये शोधार्थियों को आगे आना होगा। विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय गणित विषय पर एक शोध केन्द्र डॉ. अनुपमजी जैन के निर्देशन में खोला गया है। विश्वविद्यालय के अनुरोध पर प्रो. अनुपमजी जैन ने इस पीठ को अपना मार्गदर्शन देना स्वीकार किया है। *-प्रो. रेणु जैन, कुलपति*

बधाई

चेन्नई-डॉ. दीपिकाजी सुपुत्री श्रीमती संगीताजी (कार्याध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल) श्री महेन्द्रजी एवं सुपौत्री श्रीमती कमलादेवीजी-स्व. श्री हस्तीमलजी बोहरा ने जे.एस.एस. मेडिकल कॉलेज, मैसूर से एम.बी.बी.एस., एम.एस. (गाइनेकोलॉजिस्ट) अन्तिम वर्ष की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है। अभी जोधपुर एम्स में सीनियर रेजीडेन्ट डॉक्टर पद पर नियुक्त है।

जोधपुर-श्री देवेशनाथजी सुपौत्र श्रीमती चन्द्रकँवर-स्मृतिशेष श्री तपस्वीनाथजी, सुपुत्र श्रीमती सन्तोषजी-श्री मुनेश्वरनाथजी मोदी के बी.टेक कर मल्टीनेशनल कम्पनी में पदोन्नति होने पर एवं श्री जिनेशनाथजी सुपौत्र श्रीमती चन्द्रकँवर-स्मृतिशेष श्री तपस्वीनाथजी, सुपुत्र श्रीमती सन्तोषजी-श्री मुनेश्वरनाथजी मोदी के सी.ए. बनने पर बधाई।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर-अनन्य गुरुभक्त, संघ सेवी एवं सन्तसेवी श्रीमती अकलकँवरजी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री हंसराजजी मोहनोत

का 89 वर्ष की वय में 4 अप्रैल, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरलता से परिपूर्ण और प्रभुभक्ति में लीन रहा। आप रत्नसंघीय वरिष्ठ सन्त श्री मगनमुनिजी म. सा. की सांसारिक पुत्रवधू थी एवं श्री सम्पतराजजी कुम्भट (महामन्दिर-जोधपुर) की सुपुत्री थी। बचपन से ही धर्म के प्रति निष्ठा एवं रुचि होने से सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण संवर, पौषध आदि आप समय-समय पर करती रहती थी। आपने उपवास, बेला, अठाई, 10 उपवास एवं 17 उपवास की तपस्या भी की थी। आपका जीवन प्रारम्भ से ही संघसेवा और सन्त-सती मण्डल की सेवा में समर्पित रहा है। आचार्य हस्ती द्वारा उद्घोषित सामायिक-स्वाध्याय महान् को आपने अपने जीवन के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक आत्मसात् किया। आपकी एवं परिवार की इच्छा अनुसार देह दान कर समाज में उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। परिवार एवं ससुराल में भी वरिष्ठ होने के कारण सासू माँ का अल्प आयु में स्वर्गवास हो जाने की वजह से पूरे परिवार को एक सूत्र में बाँधकर रखा था। सरलता, सहजता, कर्तव्य परायणता, धर्म निष्ठा, विनम्रता एवं कर्मठ सेवा भावना में हर समय समर्पित रहती थी। आप अपने पीछे पुत्र श्री आनन्दराजजी-श्रीमती विजयाजी, पुत्र श्री अंकित-श्रीमती शालिनी, प्रपौत्र श्री अक्षांशजी, पौत्री श्रीमती आशाजी-दीपेशजी गुप्ता, पुत्रियाँ श्रीमती किरण-श्री लक्ष्मीमलजी सुराणा, श्रीमती मधु-श्री प्रेमकुमारजी बाफना, श्रीमती शशि-श्री प्रेमचन्दजी भंडारी, श्रीमती मनीताजी-श्री कमलजी भंसाली, श्रीमती संगीताजी-श्री वीरेंद्रजी बाफना एवं दोहिता दोहिती, पुत्र- पुत्री आदि से भरा पूरा परिवार छोड़ कर गई हैं। *-वीरेन्द्र सिंघवी*

ब्यावर-अनन्य गुरुभक्त, संघ सेवी एवं सन्तसेवी श्री प्रसन्न कुमारजी सुपुत्र सुश्रावक स्व. श्री मानमलजी सिंघवी का 24 मार्च, 2022 को देहावसान हो गया। सिंघवी परिवार संघनिष्ठ परिवार है। विक्रम सम्वत् 2032 के पूज्य श्री गजेन्द्राचार्य के वर्षावास में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की स्थापना आपके निवास स्थान पर हुई थी। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती मनोरमाजी, सुपुत्र श्री शरदजी सुपुत्री पूजा और पूनमजी परिवार के संस्कारों को संजोकर रखे हुए हैं। आपके अनुज श्री सुशीलजी सिंघवी जयपुर में संघसेवा में तत्पर रहते हैं। सम्पूर्ण सिंघवी परिवार के सदस्य ब्यावर, जयपुर, भीलवाड़ा, मुम्बई में संघ द्वारा प्रदत्त दायित्वों को निर्वहन करने में अग्रणी रहते हैं। श्रीमान् मानमलजी जीवनपर्यन्त श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, ब्यावर के अध्यक्ष पद पर रहे। बरेली का नोहरा (स्वाध्याय भवन) के जीर्णोद्धार में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा। आपके चाचा श्री माणकमलजी सिंघवी, भीलवाड़ा में रत्नसंघ के अग्रणी श्रावक थे। *-हस्तीमल गोलेच्छा*

मदनगंज-किशनगढ़-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती धनकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री पारसमलजी

मेहता का 29 मार्च, 2022 को देहावसान हो गया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविकारत्न थी। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के शिवाजी नगर-किशनगढ़ चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने धर्मध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। मदनगंज-किशनगढ़ क्षेत्र में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की गोचरी-पानी की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थी। आपके सुपुत्र श्री मनोजजी मेहता संघसेवा, सन्त-सतीवृन्द विहार-सेवा में महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी मेहता परिवार सदैव समर्पित रहा है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

बिलाड़ा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रतनराजजी बोथरा का 27 मार्च, 2022 को 95 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया।

आप स्पष्टवक्ता, तेजस्वी, ओजस्वी, नीतिवान, सत्य धर्म पालक, निडर एवं अनुभवी सज्जन थे। आप अपने सिद्धान्त के पक्के एवं न्याय संगत बात कहने के पुरोधा एक परिपक्व इंसान थे। जीवदया, मानवसेवा आदि के गुण आपमें कूट-कूट कर भरे थे। आपकी सभी सन्त-सतियों के प्रति अगाध आस्था एवं अपूर्व श्रद्धाभक्ति रही। आपके सुपुत्र श्री गणपतलालजी, तरुणकुमारजी बोथरा मेहता भी आपश्री के पदचिह्नों पर चलते हुए बड़े धर्मवान, श्रद्धावान श्रावक हैं। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कार सम्पन्न बोथरा मेहता परिवार छोड़कर गये हैं। *-मोक्षद्वार*

भड़गाँव-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुरेखाजी धर्मसहायिका श्री अजीतराजजी रांका का 13 अप्रेल, 2022 को 63 वर्ष की वय में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपकी धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा एवं आस्था तथा गुरुभगवन्तों के प्रति अच्छी निष्ठा थी। आपका परिवार हमेशा धर्म में समर्पित परिवार रहा है। *-मनोज संचेती, जलगाँव*

इन्दौर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती ममताजी धर्मसहायिका श्री विजयजी (बंटी) जैन का 23 मार्च, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आप मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थी। आप साधु-सन्तों की सेवा में हमेशा अग्रणी रहती थीं। सभी सन्त-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। *-महावीर प्रसाद जैन*

सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती रामनिवासीजी धर्मसहायिका स्व. श्री दीपचन्दजी जैन (कुण्डेरा वाले) का 24 दिसम्बर, 2021 को 91 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की भद्र

महिला थी। आपके सुपुत्र श्री कमलेशजी, राजेन्द्रजी समाज सेवा में अग्रणी रहते हैं। *-कमलेश जैन*

कोटा-धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती सन्तोषजी धर्मसहायिका स्व. श्री राजेन्द्रसिंहजी मेहता (पूर्व अध्यक्ष) का

अत्यन्त प्रशस्त भावों में संलेखना संथारे से 13 अप्रेल, 2022 को देवलोकगमन हो गया। आप करुणा, दया, शीतल और सौम्य स्वभावी तथा सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सद्धर्म की सतत प्रेरणा देने वाली श्राविका थी। आप अत्यन्त सरल, सहज, विनम्र, भद्रिक परिणामी, हलुकर्मी साधिका थी। आपने 37 वर्ष की वय में चतुर्थव्रत का संकल्प ले लिया था। आजीवन रात्रि भोजन और जमींकन्द का त्याग। अपने जीवन काल में एक मासखमण, 16 उपवास एक बार, अनेकों अठाइयाँ, अनेक तेले और फुटकर तपस्याएँ करके कर्मों की निर्जरा की। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति अत्यन्त निष्ठावान थी। आप सदैव अप्रमत्त रहकर त्याग-तपस्या-ज्ञान-ध्यान-व्रत-पच्चक्खान, सामायिक में तल्लीन रहती थी। साधु-सन्तों के आहार-विहार, वैयावच्च का सम्पूर्ण परिवार अधिकतम लाभ लेता है। *-अशोक बोहरा, मन्त्री*

चेन्नई-धर्मनिष्ठ, संघसेवी, सुश्रावक श्री किशनजी भण्डारी का 19 अप्रेल, 2022 को देहावसान हो गया। आप

सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति रखते थे एवं नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। चेन्नई में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई पधारने पर आप सहित समस्त भण्डारी परिवार ने सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना के साथ आतिथ्य-सेवा का लाभ प्राप्त किया था। पारिवारिक संस्कारों से संस्कारित भण्डारी परिवार संघसेवा, समाजसेवा में सदैव अग्रणी रहा है। चेन्नई तथा जोधपुर दोनों स्थानों पर रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी प्रवृत्तियों में भण्डारी परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरलादेवीजी धर्मपत्नी श्री मख्तूरमलजी पुत्रवधू स्व. श्रीमती मानकँवरजी-

स्व. श्री पारसमलजी भण्डारी का 25 अप्रेल, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आपने अपने जीवन में कई व्रत नियम ग्रहण कर रखे थे। सिंहपोल स्थानक पधारने वाले सन्त-सतियों की सेवा में आप हमेशा तैयार रहती और नियमित प्रवचन का लाभ लेती। आप श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. की सांसारिक भाभीजी थी। *-धीरज डोसी*

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

गुरु

जिसने अपने ज्ञान गुण से
मनुष्य के अन्त:करण में व्याप्त
सघन अन्धकार को नष्ट कर दिया,
और विवेक का आलोक फैलाया
वही साधक का सच्चा गुरु कहलाया
सच्चा गुरु जीवन रथ को
कुमार्ग से बचाकर सन्मार्ग पर चलाकर
अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाता है
शिष्य को उस जैसा ही योग्य-समर्थ बनाता है।

अनुभव

जिस जीव ने अज्ञान मोह को
दूर करके कर लिया किनारा
उसने अनुभव किया अनन्त सुख सारा।

-डॉ. रमेश 'मयंक', बी 8, मीरा मार्ग, चित्तौड़गढ़ (राज.)

दीक्षा

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव-2022

विक्रम सम्वत् 2079 वैशाख शुक्ला षष्ठी, शनिवार 7 मई, 2022 को

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परम श्रद्धेय **पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.,** महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय **भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** की आज्ञा से **साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.** की नेश्रायवर्तिनी **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.** के मुखारविन्द से **मुमुक्षु बहिन सुश्री रेणुजी गुन्देचा** (सोजतरोड़-बेंगलूरू) सुपुत्री श्रीमती निर्मलादेवीजी-श्री गौतमचन्दजी गुन्देचा की जैन भागवती दीक्षा **7 मई, 2022 शनिवार को राजाजीनगर बेंगलूरू** में होने जा रही है। **दीक्षा महोत्सव** के पावन पुनीत प्रसङ्ग पर **व्रत-नियम-प्रत्याख्यान** युक्त श्रद्धा समर्पण के साथ आप सपरिवार पधारकर संयम अनुमोदना का लाभ प्राप्त करावें।

शोभायात्रा एवं अभिनन्दन समारोह-दिनांक 6 मई, 2022 शुक्रवार-शोभायात्रा :: प्रात: 8 बजे। **अभिनन्दन समारोह ::** प्रात: 10.30 बजे से। **मुख्य अतिथि-**श्री पी. सी. मोहन, लोकसभा सांसद, बेंगलूरू सेण्ट्रल, बेंगलूरू। **विशिष्ट अतिथि-**श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, पूर्व गृहमन्त्री एवं नेता प्रतिपक्ष राजस्थान सरकार। श्री एस. सुरेशकुमारजी, पूर्व मन्त्री एवं वर्तमान विधायक, राजाजीनगर विधान सभा क्षेत्र। **समारोह अध्यक्ष-**श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ।

दीक्षा महोत्सव दिनांक 7 मई, 2022 शनिवार-अभिनिष्क्रमण यात्रा :: प्रात: 7.30 बजे। दीक्षा विधि प्रारम्भ :: प्रात: 9.30 बजे लगभग। भोजन :: दीक्षा एवं प्रवचन आदि के पश्चात्।

अभिनन्दन समारोह एवं दीक्षा महोत्सव स्थल-Venus International School, No. 19 A, 19/2-1, Kodi Basavana Temple Street, 6th Block, Rajajinagar, Bengaluru-560010 (Karnataka)

वीर परिवार एवं दीक्षा के लाभार्थी-श्रीमती चम्पाबाई नथमलजी गुन्देचा के दिव्य आशीष से कुशालचन्दजी, दलपतराजजी, रमेशकुमारजी, विनोदचन्दजी, राजेशचन्दजी, गौतमचन्दजी, पदमकुमारजी, दीपककुमारजी गुन्देचा परिवार, सोजतरोड़-बेंगलूरू।

- विनीत -

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

मोफतराज मुणोत	गौतमचन्द हुण्डीवाल	प्रकाश टाटिया	मनीष मेहता	धनपत सेठिया
संयोजक-संरक्षक मण्डल	संयोजक-शासन सेवा समिति	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री

- आयोजक -

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बेंगलूरू

पदमराज मेहता	धनरूपचन्द मेहता	गौतमचन्द ओस्तवाल
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मन्त्री

दीक्षा समिति

कान्तिलाल चौधरी-संयोजक **महावीर मकाना**-मन्त्री

मुमुक्षु बहिन सुश्री रेणुजी गुन्देचा

जन्म तिथि :: 16 मई, 2000
जन्म स्थान :: श्रीरामपुरम्-बेंगलूरू
निवासी :: सोजत रोड़, जिला-पाली (राजस्थान)
व्यावहारिक शिक्षण :: फैशन डिजाइनिंग डिप्लोमा

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी :: स्व. श्री नथमलजी-चम्पाबाईजी गुन्देचा
बड़े पिता-माता :: स्व. श्री भँवरलालजी-नारंगीदेवीजी, श्री कुशलचन्दजी-विमलादेवीजी, श्री दलपतराजजी-किरणदेवीजी, श्री रमेशचन्दजी-सुनीतादेवीजी, श्री विनोदचन्दजी-गीतादेवीजी, श्री राजेशचन्दजी-स्व. बसन्तादेवीजी
पिता-माता :: श्री गौतमचन्दजी-निर्मलादेवीजी गुन्देचा
भाई-भाभी :: श्री दीपक कुमारजी-करिश्माजी, श्री पदम कुमारजी-भारतीजी, श्री कमल कुमारजी-कुसुमदेवीजी, श्री महावीरजी-दीप्तिजी, श्री रणजीतजी-कविताजी, श्री यशवन्त कुमारजी-पूजाजी, श्री किशोरजी-प्रियंकाजी, श्री गिरीशजी-दीपिकाजी, श्री निखिलजी-सिम्पलजी, श्री रोशनजी-ट्विंकलजी, श्री वर्षितजी गुन्देचा, श्री महेन्द्रकुमारजी-संगीतादेवीजी मुथा, श्री कमल कुमारजी-ममताजी मुथा
भुआ-भुड़ौसा :: श्रीमती लीलाबाईजी-मेघराजजी मुथा, श्रीमती सुमित्राबाईजी-प्रकाशचन्दजी चुतर, श्रीमती बगदाबाईजी-मेघराजजी भलगट
बहन-बहनोई :: श्रीमती मैना-राकेशजी कटारिया, श्रीमती नम्रता-प्रवीणजी कोठारी, श्रीमती संगीता-संदीपजी बोहरा, सुश्री वर्षाजी, सुश्री निकिताजी, श्रीमती रक्षा-विवेकजी बोहरा, श्रीमती दीक्षा-विनीतजी सावज, सुश्री अक्षाजी गुन्देचा
नानाजी-नानीजी :: श्री ताराचन्दजी-श्रीमती डगरीबाईजी गुगलिया
मामाजी-मामीजी :: श्री कांतीलालजी-सुरजदेवीजी, श्री मनोज कुमारजी-संगीताजी गुगलिया
मासी-मासो सा :: श्रीमती संगीतादेवीजी-सज्जनराजजी पितलिया

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ :: दशवैकालिकसूत्र 1-5 अध्ययन, सुखविपाकसूत्र, पुच्छिंसु णं, उत्तराध्ययनसूत्र 1, 3, 9 अध्ययन।
सूत्र वाचनी :: दशवैकालिकसूत्र
स्तोक कण्ठस्थ :: 25 बोल, 67 बोल, 33 बोल, 102 बोल, 98 बोल, 32 बोल बासठिया, 14 बोल बासठिया, समिति-गुप्ति, कर्म-प्रकृति, जीवधड़ा, द्रव्येन्द्रिय, गति-आगति, पाँच देव, योनि, श्वासोच्छ्वास, विरह, रूपी-अरूपी, संयम-सुख, लघुदण्डक, गमा, दूसरा कर्मग्रन्थ, तत्त्वार्थसूत्र 1-4 अध्ययन आदि।
स्तोक कण्ठस्थ :: भक्तामर, रत्नाकर पच्चीसी, महावीराष्टक, हीराष्टक, महेन्द्राष्टक, हस्ती-हीरा चालीसा
वैराग्यावधि :: लगभग 6 महीने (ज्ञानार्जन अवधि लगभग डेढ़ वर्ष)

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 76 वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मास से वञ्चित गाँव-शहरों में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण महापर्व 24 अगस्त से 31 अगस्त, 2022 तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष-मन्त्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन-पत्र 15 जुलाई, 2022 तक कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी।

1. गाँव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
   .....
4. संघ मन्त्री का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
   .....
5. सम्बन्धित जगह पहुँचने के विभिन्न साधन.....
   .....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा सम्बन्धी आवश्यक सुझाव.....
   .....
   .....
10. अन्य विशेष विवरण.....
    .....

आवेदन करने का पता- संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्लॉट नं. 2, सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, 9414126279, 9444852330, 9462543360 (कार्यालय) मो.-9460551096 (संयोजक), ईमेल- swadhyaysangh jodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी माँग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600001 (Tamilnadu) के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र-9150640000, 9444051065

10 मई 2022
जिनवाणी 90
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16307 से 16311 तक कुल 5 सदस्य बने।

जिनवाणी पत्रिका प्रकाशन योजना हेतु साभार

100000/- श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।

100000/- न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, जोधपुर।

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

25000/-श्री आनन्दराजजी जैन, जयपुर, पूज्या मातुश्री श्रीमती अकलकवंरजी जैन (महनोत) का 4 अप्रेल, 2022 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।

11000/-श्री आनन्दराजजी जैन, जयपुर, पौत्र अक्षांश के प्रथम जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

11000/-श्रीमती मनोरमाजी, शरदकुमारजी, दर्शजी सिंघवी परिवार, ब्यावर, श्री प्रसन्नकुमारजी सिंघवी पुत्र स्व. श्री मानमलजी सिंघवी का 24 मार्च, 2022 को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्य-स्मृति में।

5100/- श्री पारसचन्दजी, अभयसिंहजी छाजेड़ परिवार, पूज्य पिताश्री रायजादा बालचन्दजी छाजेड़ (किशनगढ़-इन्दौर) के द्वितीय पुण्यदिवस के उपलक्ष्य में।

5001/- श्री नौरतनमलजी, कुशलचन्दजी मेहता परिवार, जोधपुर, चि. योगेशजी सुपुत्र श्री राजेन्द्रकुमारजी बागरेचा मेहता, पल्लीपट का शुभविवाह सौ. कां. दिव्याजी सुपुत्री श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा, जोधपुर के सङ्ग 24 अप्रेल, 2022 को जोधपुर में सम्पन्न होने की खुशी में।

3100/- श्री बाबूलालजी, नरेन्द्रकुमारजी जिन्दल, देई, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

3100/- श्री राजेशजी, दिनेशजी नवलखा, जयपुर, श्री भागचन्दजी नवलखा का 23 मार्च, 2022 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।

2100/- श्री हीरालालजी, नीरजजी, धीरजजी, कार्तिकजी जैन, ढेहरा-भरतपुर, श्रद्धानिष्ठ स्व. श्रीमती मायाजी जैन की दूसरी पुण्य तिथि 9 मई, 2022 की पुण्य-स्मृति में।

2100/- श्रीमती लीलाबाईजी पुखराजजी पारख, जलगाँव, गुरुचरण सन्निधि में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2100/- श्री ललितकुमारजी, मनीषकुमारजी गोलेच्छा (गिरि वाले) ब्यावर, सुपुत्री विहाना के प्रथम गुरु दर्शन एवं गुरु चरण सन्निधि में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2100/- श्री अशोक कुमारजी जैन (एण्डवा वाले), आदर्श नगर-सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. लवीश कुमारजी संग सौ. कां. रजनीजी सुपुत्री श्री चाँदमलजी जैन बून्दी वाले अलीगढ़ के शुभविवाह 20 अप्रेल, 2022 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- श्री अजीतकुमार जी जैन, फगवाड़ा, पूज्य पिताजी श्री त्रिलोकचन्दजी जैन का 30 दिसम्बर, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।

1100/- श्रीमती अञ्जुजी मनोजजी कोठारी, जयपुर, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दिनेशचन्दजी जैन, अलवर, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजुलालजी, बाबूलालजी, पारसचन्दजी जैन (चौरू वाले) कोटा, पूज्या माताजी श्रीमती गल्लीबाईजी के देवलोकगमन हो जाने पर पुण्य-स्मृति में।

1100/- श्री महेन्द्रजी ललिताजी गांग, सूरत, पौत्ररत्न आरव एवं विवान के जन्म दिवस पर भेंट।

1100/- श्री महावीरप्रसादजी, विजयकुमारजी जैन, इन्दौर, श्रीमती ममताजी जैन की पुण्य-स्मृति में।

1100/- श्री रामविलासजी, श्री रूपेशजी, डॉ. राजेशजी जैन (बाबई वाले), कोटा, श्रीमती बिमलादेवीजी जैन का स्वर्गवास 03 अप्रेल, 2022 को होने पर पुण्य-स्मृति में।

1100/- श्री सुनीलकुमारजी, अनिलकुमारजी, अशोक कुमारजी जैन, भगवतगढ़-सवाईमाधोपुर, चि. अनूप संग सौ.का. अंचिता सुपुत्री स्व. श्रीमती मंजूजी एवं श्री प्रदीपकुमारजी जैन सवाईमाधोपुर के साथ 20 अप्रेल, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।

गजेन्द्र निधि / गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु साभार

श्री रमेश कुमारजी, नथमलजी जैन (गुन्देचा) और श्री निखिलजी रमेश कुमारजी जैन, बेंगलूरू-सोजत रोड़।

10 मई 2022
जिनवाणी 91
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

उमा

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

एक सुन्दर-सी हँसमुख लड़की थी, जिसका जीवन किसी राजकुमारी से कम न था, लेकिन एक दिन उसके गाल पर सफेद दाग जैसा हो गया। बाद में जगह-जगह सफेद दाग होने लगे।

डॉक्टर को दिखाया तो ज्ञात हुआ कि यह विटिलिगो नाम का त्वचा का रोग है जिसमें त्वचा का रंग बनना बन्द हो जाता है और चमड़ी सफेद होने लग जाती है।

उसे अब बाहर आना-जाना, खेलना-कूदना अच्छा नहीं लगता। प्राय: सभी उसे चिढ़ाते। कोई उसे चितकबरी कहता तो कोई कुछ और। वह घर आकर बहुत रोती थी।

ऐलोपेथी, होम्योपैथी आदि सभी इलाज करवाये, पर फर्क नहीं पड़ रहा था। किसी ने कहा-दवा लगाकर धूप में खड़े रहो तो किसी ने कहा-सफेद दाग पर गर्म पानी की थैली लगाओ। परन्तु हुआ कुछ नहीं और लोग उसे बेचारी समझकर तरस खाते रहे।

उमा की माँ बहुत समझदार थी। उसने कहा-''बेटी! जो भगवान ने दिया है उसको स्वीकार करो। चमड़ी का रंग कैसा भी हो, उससे फर्क नहीं पड़ेगा। बस अपना व्यक्तित्व ऐसा बनाओ कि बाकी के सारे रंग तुम्हारे सामने फीके लगें।''

उमा पढ़ाई में जी तोड़ मेहनत करने लगी। कक्षा में प्रथम आना उसकी आदत ही बन गई। अब वह सभी अध्यापिकाओं की प्रिय बन गई। सभी बच्चों की वह मदद करती। अब सब उससे दोस्ती करने को लालायित रहते। रोग धीरे-धीरे उसके पूरे शरीर में फैल गया और वह पूरी सफेद हो गई।

इस बात पर उसने अब गौर करना ही छोड़ दिया और पूरी शक्ति अपने आपको गुणवान बनाने में लगा दी। उमा आज एक ऊँचे पद पर मल्टी नेशनल कम्पनी में काम करती है। सारांश यही है कि अपनी कमियों की जगह अपनी शक्तियों पर अपनी ऊर्जा लगाओ।

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड़, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

नई सोच

श्रीमती मीनाक्षी दिनेश जैन

एक बार लोमड़ी ने कौए को रोटी का टुकड़ा लिए हुए पेड़ की डाल पर देखा और उसे बेवकूफ बनाकर उससे रोटी लेने का सोचते हुए बोली-''कौए भैया! सुना है कि आप बहुत ही मीठा गाना गाते हो, तो मुझे भी एक गाना सुनाओ ना।''

कौए ने अपने पूर्वजों की गलती न दोहरा कर रोटी को अपने पञ्जों में दबाई और गाने लगा। यह देख लोमड़ी समझ गई कि अब मेरी चालाकी काम नहीं आएगी और यह बेवकूफ नहीं बनेगा, और वहाँ से जाने लगी।

यह देख कौए ने उसे आवाज लगाई-''बहन! कहाँ जा रही हो? मेरा गाना नहीं सुनोगी क्या? इधर आओ मेरे पास रोटी के दो टुकड़े हैं।'' वह रोटी नीचे गिराते हुए बोला-''अब हम दोनों यह रोटी मिलकर खा लेते हैं।''

लोमड़ी खुश होकर बोली-''मैं कल भी आऊँगी और तुम्हारा गाना भी सुनूँगी और मैं भी तुम्हारे लिए कुछ खाने के लिए लाऊँगी।'' इस तरह कौए ने नई सोच दिखाई तो लोमड़ी ने भी अपनी सोच बदल ली।

हम भी अपनी सोच बदल कर सामने वाले को बदल सकते हैं।

-17/729, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

पुस्तकें रत्न हैं

डॉ. दिलीप धींग

जैनागम 'राजप्रश्नीयसूत्र' में पुस्तक को रत्न कहा गया है। इस आगम में आए सूर्याभदेव के प्रसङ्ग में पुस्तक को सिर्फ पुस्तक नहीं लिखकर 'पुस्तक-रत्न' (पोत्थ-रयणं) लिखा गया है। सूत्र में उल्लेख है कि सूर्याभदेव की परिषद् का एक देवता उसे पुस्तक-रत्न देता है। सूर्याभदेव पुस्तक-रत्न को ग्रहण करता है। पुस्तक-रत्न को खोलता है। पुस्तक-रत्न का वाचन करता है और उससे धार्मिक जानकारी प्राप्त करता है। 'पुस्तक-रत्न' शब्द-प्रयोग में यह सन्देश है कि हमें पुस्तक का मूल्य और महत्त्व समझना चाहिये। इस प्रसङ्ग से यह भी स्पष्ट होता है कि देवलोक और देवताओं की परिषद् में भी पुस्तक का सम्मान किया जाता है। आचार्यश्री हस्ती ने 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' में अनेक स्थानों पर 'ग्रन्थ-रत्न' शब्द का प्रयोग किया है।

पुस्तक और मुद्रित साहित्य की महिमा कल थी, आज है और कल भी रहेगी। इसी महिमा को उजागर करने वाला समाचार 45वें चेन्नई पुस्तक मेले से आया। समाचार-पत्रों के अनुसार 16 फरवरी, 2022 से शुरू होकर 19 दिन चले इस पुस्तक मेले में लगभग 15 करोड़ रुपये की पुस्तकें बिकीं। इसमें हिन्दी भाषा की पुस्तकें नगण्य ही बिकीं। इसके दो कारण हो सकते हैं। पहला यह कि यह मेला हिन्दीतर भाषी क्षेत्र में था। दूसरा यह कि हिन्दी जगत् में पुस्तक खरीदने की आदत कम है। जैन साहित्य के क्षेत्र में भी यही बात है। लोग 1,000 रुपये के जूते तुरन्त खरीद लेते हैं, लेकिन 100 रुपये की किताब खरीदने में काफी सोचते हैं।

हिन्दी भाषियों और हिन्दी प्रेमियों को भी अच्छी पुस्तक खरीदने की आदत विकसित करनी चाहिये। यदि आपका कोई मित्र, परिजन या परिचित लेखक है तो यह आपका सौभाग्य है। यदि उसकी कोई पुस्तक प्रकाशित हो तो आपको मूल्य देकर पुस्तक खरीदनी चाहिये। इससे उसे खुशी मिलेगी। यदि कोई लेखक आपको उसकी नई पुस्तक भेंट करे तो आप स्वीकार करें, पढ़ें और पढ़कर अपनी राय भी दें। सत्कार-उपहार में पुष्पगुच्छ (बुके) की बजाय पुस्तक (बुक) देकर भी साहित्य का सम्मान किया जा सकता है। इस प्रकार के छोटे-छोटे प्रयास हिन्दी भाषा, साहित्य और साहित्यकारों का बड़ा हित कर सकते हैं। अन्य भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य को भी इसी प्रकार प्रोत्साहित किया जा सकता है।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 7, अव्वा मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

Question Answer

Sh. Dulichand Jain

Q 1. What are the three guards against misconduct?

Ans. The three forms of restraint, or guards, that every Jaina ascetic must exercise at all times are :

1. *Mano gupti* (regulation of mind) : To guard one's mind from impure and negative thoughts.
2. *Vāk gupti* (regulation of speech) : To guard one's speech from hurting or causing pain to another.
3. *Kāya gupti* (regulation of bodily activity) : To guard one's bodily movements from harming or causing pain to another.

Guarding against misconduct via body, mind and speech is necessary for the spiritual upliftment of the soul.

-70, T.T.K. Road, Alwarpet, Chennai- 600 018 (Tamilnadu)

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1–तस्सउत्तरी के पाठ में अभग्गो-अविराहिओ का क्या अर्थ है?

उत्तर– तस्स उत्तरी के पाठ में 'अभग्गो' का अर्थ है-काउस्सग्ग खण्डित नहीं होना और अविराहिओ का अर्थ है-काउस्सग्ग भङ्ग नहीं होना। काउस्सग्ग में सर्व विराधना न होना 'अभग्गो' तथा आंशिक विराधना न होना 'अविराहिओ' कहलाता है।

प्र. 2–लोगस्स के पाठ का क्या प्रयोजन है?

उत्तर– लोगस्स के पाठ में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति की गई है। ये हमारे इष्टदेव हैं। इन्होंने अहिंसा और सत्य का मार्ग बताया है। इनकी भावपूर्वक स्तुति करने से जीवन पवित्र और दिव्य बनता है।

प्र. 3–लोगस्स के पाठ का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर– लोगस्स के पाठ का दूसरा नाम उत्कीर्तनसूत्र और चतुर्विंशतिस्तव है।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

स्थानक में जाने के लाभ

संकलित

सन्तों की अपेक्षा से–1. पूज्य साधु-सन्तों के दर्शन होते हैं। 2. मांगलिक, प्रवचन, स्वाध्याय आदि सुनने को मिलता है। 3. मन में शंका यदि होती है तो उसका समाधान मिलता है। 4. नया ज्ञान-ध्यान सीखने की प्रेरणा मिलती है।

संघ की अपेक्षा से–1. साधर्मिक भाई-बहनों का परिचय होता है। 2. साधर्मिक भाई-बहनों के लिए उपयोगी बनते हैं। 3. सामूहिक प्रतिक्रमण, स्वाध्याय का लाभ मिलता है। 4. प्रतिक्रमण सुनने का लाभ मिलता है।

स्थान की अपेक्षा से–1. घर और ऑफिस के विचार नहीं आते हैं। 2. धर्म और शान्ति का वातावरण मिलता है। 3. दूसरे जो आराधना करते हैं, उसका बल मिलता है। 4. जरूरी पुस्तक आगम आदि पढ़ने को मिलते हैं।

प्रेरणा की अपेक्षा से–1. किसी ज्ञानी अथवा तपस्वी को देखकर उसके जैसा बनने का मन होता है। 2. अपने धन के सदुपयोग करने की अभिलाषा होती है। 3. दीक्षा, शिविर, महापुरुषों की विशेष तिथियाँ आदि की जानकारी मिलती है।

-'आओ जैनिज्म सीखें-2' से साभार

स्वस्थ जीवन व्यतीत करने हेतु ध्यातव्य बिन्दु

श्री अभय कुमार जैन

- तनाव रहित रहें, अपने तनाव को पहचानें।
- महत्त्वाकांक्षी योजनाएँ न बनायें। अनावश्यक संकल्पों को छोड़ दें।
- नियमित एवं व्यवस्थित दिनचर्या अपनाएँ। आवश्यक कार्यों की सूची बनाएँ।
- जल्दी सोयें और जल्दी उठें।
- एक साथ सभी कार्य हाथ में न लें। एक-एक कार्य को प्राथमिकता के आधार पर करते जायें।
- काम टालू प्रवृत्ति से बचें। आज का काम आज करें।
- अनावश्यक ऊर्जा का क्षय नहीं करें। फिजूल की बातें, अनावश्यक विवाद तथा बहस से दूर रहने का प्रयास करें। दूसरों की आलोचना नहीं करें।

- अच्छे मित्र बनायें। फिजूलखर्ची और दिखावे में विश्वास नहीं करें। गलत खान-पान से दूर रहें।
- धैर्य एवं सन्तोष रखें। दूसरों की सहायता करें। पीड़ित और परेशान व्यक्ति को सहानुभूति की आवश्यकता रहती है। अत: इसमें कंजूसी नहीं करें।
- काम के बीच में थकान अनुभव होने पर काम बन्द कर दें। कुछ देर टहलें या लेट जायें। कुछ समय आँखें बन्द कर लें और आराम करें।
- पारिवारिक वातावरण बहुत ही शान्त रहे। सभी एक साथ प्रार्थना करें, चर्चा करें तथा सम्भव हो तो भोजन भी एक साथ करें।
- साधु-सन्तों का समागम करें। अच्छा साहित्य पढ़ें। अच्छे गीत, स्तवन पढ़ें और संकलन करें। इससे बहुत मानसिक शान्ति मिलती है।

-'तृप्ति' बन्दा रोड़, भवानीमण्डी (राजस्थान)

ऐसी मेरी दादी थी

श्री प्रणत धींग

जिनकी पापा जैसी सूरत
पापा की श्रद्धा की मूरत
पापा के जीवन की संपत
जीवन था जीवन्त अणुव्रत
जिनको पापा लिखते थे खत
कहते चिन्ता करना मत
आँखों में जल भरना मत
तुम हो आङ्गन, तुम ही छत
तुम वात्सल्य भाव की पनघट
वह गम से हो जाती विरत
प्रसन्नता में होती रत
कहती कभी झूठ बोलो मत
कोई काम न करो गलत
छोड़ो कुसङ्ग और बुरी लत
मिट जाए जीवन की गफ़लत
इक दिन गिरा दु:खों का पर्वत
कहा अलविदा, चुना महापथ
पाने अनन्त जीवन का सत
अन्त में बोलीं नमो अर्हत
वह मेरी प्यारी दादी थीं
उनको नमन करूँ शत-शत।

-उमराव सदन, 53, डोरेनगर, उदयपुर-313002 (राज.)

हे भगवन्! हे भगवन्!

श्री लक्ष्य जैन

हे भगवन्! हे भगवन्!
करूँ आपको शत-शत नमन।
छोड़ दे यह मोह-माया,
शुद्ध बना अपनी काया,
मरते वक्त साथ तेरे,
नहीं जाएगा तेरा धन।
हे भगवन्! हे भगवन्!....
मतकर तू धन का अभिमान,
लगा नवकार मन्त्र का ध्यान,
शान्त हो जाएगा तेरा मन।
हे भगवन्! हे भगवन्!....
नहीं करेंगे मांसाहार,
अपनाएँगे शाकाहार,
जीवों को न सताएँगे,
लेंगे हम यह दृढ़ प्रण।
हे भगवन्! हे भगवन्!....
'लक्ष्य' से कहते भगवान,
पञ्च महाव्रत है महान्।
श्रद्धा से हम करें नमन,
हे भगवन्! हे भगवन्!.....

-अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

10 मई 2022
जिनवाणी 95
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

महासती अञ्जना

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जून, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

महासती अञ्जना महेन्द्रपुरी के राजा महेन्द्र की पुत्री थी। उसकी माता का नाम मनोवेगा था। अञ्जना जैसी रूपवती थी वैसी ही गुणवती भी थी। बचपन से ही उसे जैनधर्म पर अनुराग था।

जब वह बड़ी हुई तो एक दिन साज-शृङ्गार से भूषित होकर अपने पिता के पास पहुँची। राजा महेन्द्र ने जब अञ्जना के रूप-लावण्य एवं तरुणाई को देखा तो उसे उसका विवाह कर देने की चिन्ता हो गयी। अञ्जना के अनुरूप वर की चर्चा में कोई रावण की बात चलाता और कोई मेघकुमार की। जिसमें मेघकुमार उपयुक्त होते हुए भी इसलिए योग्य नहीं लगा कि दैवज्ञों ने उसके लिए 18 वर्ष की अवस्था में संयम और 26 वर्ष की आयु में मृत्यु की बात कही थी। अन्त में रतनपुरी के राजा प्रह्लादजी के पुत्र पवनजी का नाम अञ्जना के वर-रूप में आया। किन्तु पवनजी कन्या को देखे बिना विवाह करना नहीं चाहते थे।

जब यह खबर राजा महेन्द्र को लगी तो उन्होंने कन्या देखने की व्यवस्था करवा दी। पवनजी अञ्जना को देखने के लिए वहाँ पहुँचे, जहाँ अञ्जना अपनी प्रिय सखियों से घिरी हुई वार्तालाप कर रही थीं। पवन को देख किसी सखी ने कहा-''जोड़ी अच्छी रहेगी।'' इस पर दूसरी बोली-''पहली जोड़ी भी कोई खराब नहीं थी, किन्तु उसके भाग्य में अल्प वय में ही संयम और मृत्यु लिखी थी।'' यह सुनकर अञ्जना बोली-''भाग्य-योग से ही ऐसे सुन्दर संयोग मिलते हैं।''

पवनकुमार जो एकटक अञ्जना का रूप देखकर रहा था, अञ्जना की इस बात से बड़ा क्रुद्ध हुआ। वह मन ही मन सोचने लगा कि, यह तो पर-पुरुष की अभिलाषिणी है, इससे विवाह करना व्यर्थ है। किन्तु दोस्तों के समझाने से उसने विवाह तो कर लिया, मगर अञ्जना से बिल्कुल विमुख और उदास रहने की मन ही मन प्रतिज्ञा कर ली।

माता-पिता से भरपूर उपहार प्राप्त कर अञ्जना जब ससुराल आयी तो वहाँ के वैभवादि देखकर प्रसन्न हो गयी, मगर तब उसे अपार दुःख हुआ जब पता चला कि पवनकुमार मुझसे नाराज हैं। अञ्जना पवनकुमार को मनाने की अनेक चेष्टाएँ करती रहीं, किन्तु सफलता नहीं मिली। अञ्जना घर में उदासी की दशा में ही अपने धर्म-ध्यान में संलग्न रहती और अपने इष्टदेव की साधना करती रहती। उसके साथ केवल प्रिय दासी वसन्तमाला थी।

एक बार पवनकुमार महाराज दशकन्धर की आज्ञा से युद्ध में जाने को उद्यत हुए। मन्त्री ने उन्हें समझाया-''महाराज ! युद्ध में जाने के पहले महारानी

अञ्जना से मिल लें तो अच्छा रहेगा।'' इस पर पवन ने कहा कि-''अञ्जना शीलवती नारी नहीं है, उसके मन में पर-पुरुष का मोह है।'' इस पर मन्त्री बोला-''राजन्! वह दिन-रात भगवान जिनेन्द्र की आराधना करती है फिर भला ऐसी सती भी कहीं कुलटा होगी? यह आपका भ्रम है, आप चलते-चलते एक बार अवश्य उस देवी को दर्शन देते जावें।''

कुछ तो मन्त्री के समझाने और कुछ चकवापक्षी के शगुन से वे अञ्जना के पास गये। अकस्मात् प्राणवल्लभ को अपने पास आया देखकर अञ्जना को अपार प्रसन्नता हुई। अञ्जना के हर्ष का पार नहीं रहा। पवनजी भी परम प्रसन्न थे, अत: दोनों का प्रेमपूर्ण संयोग हुआ। लौटते समय वे चिन्तामणि अञ्जना को देते गये और बोले-''जब कोई आपदा आये या मेरी चिन्ता बढ़े तो इस मणि पर ध्यान देते रहना।'' तथास्तु, कहकर अञ्जना ने पवन को भाव-भीनी विदाई दी और उत्साह के साथ पुन: धर्माराधन करने लगी।

अञ्जना को पवन के समागम से गर्भ रह चला और वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। जब यह समाचार पवन की माँ केतुमती ने सुना, तो वह अञ्जना पर बहुत बिगड़ी और उसे कुलटा कहने लग गयी। इतना ही नहीं एक दिन उसने अञ्जना का मुख काला कर उसे अपने राज्य से बाहर निकाल देने का आदेश दे डाला। अञ्जना ने बहुत कुछ समझाने तथा सच्चाई बताने का प्रयास किया, किन्तु इस कठोर आदेश में रत्ती भर भी परिवर्तन नहीं हुआ। हार कर अन्तर्गर्भा अञ्जना दारुण दु:ख में पड़ी अपने मायके की ओर चली।

कहावत है कि दुर्दिन कभी अकेला नहीं आता, अतएव जो पितृगृह कन्या के लिए सबसे बड़ा आश्रय का स्थान होता है और जहाँ बचपन से लेकर जवानी के दिन बड़े लाड़-प्यार में कटते हैं, वे भी खराब ग्रह के उपस्थित होने पर विपरीत बन जाते हैं। अञ्जना जहाँ बचपन में सबकी आँखों में प्रिय लगती थी, आज इस रूप में वहाँ भी कोई उसे आश्रय देने को तैयार नहीं था। माता का मन पसीजा भी तो पिता महेन्द्र यह कहकर उसे रखने को तैयार नहीं हुए कि, ऐसी कुलटा को रखने से प्रतिष्ठा में हानि होती है। यहाँ तक कि अड़ौसी-पड़ौसी भी कोई अञ्जना को शरण देने के लिए तैयार नहीं हुए। होते भी कैसे? क्योंकि जो माता, पिता एवं भाई कभी उसे प्राणों से बढ़कर प्रिय मानते थे, जब वे ही इस घड़ी में उलट गये तो फिर औरों की तो बात ही क्या? आखिर अञ्जना इस दु:खद स्थिति में एक निर्जन वन में छोड़ दी गयी।

अशरण का शरण केवल भगवान ही होता है, यह समझकर अञ्जना ने भी जैसे-तैसे जंगल की भयावह भूमि में अपना गर्भकाल पूर्ण कर परम पराक्रमी हनुमत्कुमार को जन्म दिया। वह धैर्यपूर्वक सारे कष्टों को भविष्य की आशा में सहन कर रही थी, क्योंकि उसने यहाँ एक अदृश्य ऋषिवाणी सुनी थी-''जल्दी तुम्हारा दु:ख दूर होगा और पवनदेव तुमको मानपूर्वक ले जाएगा।''

भाग्यवश एक दिन गगन-मार्ग से जाते हुए विद्याधर शूरसेन ने, जो अञ्जना के मामा लगते थे, निर्जन वन में एकाकिनी नवप्रसूता स्त्री को एक नवजात शिशु के संग देखा। दयाभाव से प्रेरित हो वह उन्हें अपने यहाँ ले गया और बड़े प्यार से हनुमत्कुमार का लालन-पालन किया।

उधर पवनजी जब युद्ध से लौटे और महल में सती अञ्जना को नहीं देखा तो बहुत दु:खी हुए। सही स्थिति समझकर उनके माता-पिता को भी अपने दारुण आदेश पर बड़ा दु:ख हुआ। चारों ओर अञ्जना की खोज हुई और आखिर पता चला कि वह हनुमत्कुमार के साथ मामा शूरसेन के घर में है।

पवनजी सम्मानपूर्वक अञ्जना सती को अपने घर ले आये और इस घटित-घटना के लिए बहुत दु:खी एवं लज्जित हुए। माता-पिता एवं सास-ससुर सब को दु:ख हुआ और सभी अञ्जना के सामने शर्मिन्दा हुए। चिरकाल तक वीर बालक हनुमत्कुमार का लालन-पालन कर उसको शिक्षा-दीक्षा से सम्पन्न किया।

अन्त में अञ्जना आत्मसाधना के मार्ग को अपना

उभयलोक सुधार कर कल्याण की भागिनी बनी।

माता अञ्जना के सदाचारपूर्ण जीवन का ही प्रभाव है कि हनुमत्कुमार जैसे परम पराक्रमी पुत्र रावण के अतुल शौर्य को भी लज्जित कर संसार में विजयशाली बन सके। शीलवती नारी के आगे दुनिया में किसी प्रकार का भय नहीं होता। वह भयानक से भयानक जंगलों में या विकट स्थानों में भी निर्भय विचर सकता है। भूत-प्रेत या सिंह-व्याघ्रादि क्रूर जीव भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। उसके मार्ग में रूकावट डालने वाला कोई भी नहीं है। शील का प्रभाव ही था कि हनुमत्कुमार जैसा बलशाली पुत्र हुआ, जिसने रामभक्त के रूप में प्रसिद्धि पायी।

धन्य है सती अञ्जना और धन्य है उनका तप, त्याग और धैर्य।

-'कुलक कथाएँ' से साभार

प्र. 1 महासती अञ्जना के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

प्र. 2 पवनकुमार महासती अञ्जना से विमुख क्यों हुए?

प्र. 3 महासती अञ्जना धैर्यपूर्वक सभी कष्टों को क्यों सहन कर रही थी?

प्र. 4 महासती अञ्जना सबके द्वारा क्यों ठुकराई गई।

प्र. 5 यह कहानी हमें क्या प्रेरणा देती है?

प्र. 6 तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-दारुण, संयोग, शगुन, प्रतिष्ठा।

बाल–स्तम्भ [मार्च–2022] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'अतिमुक्त कुमार' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	चेतन कुमार जैन, अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	आर्यन जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	रितिक जैन, छावनी कोटा (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	वृद्धि जैन, देई-बून्दी (राजस्थान)	22
	ध्रुति सिंघवी, नारायणगुड्डा-हैदराबाद (तेलंगाना)	22
	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	22
	आर्जव चौधरी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	अग्रेषा प्रजापति, जोधपुर (राजस्थान)	22

बाल–जिनवाणी अप्रेल, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 जून, 2022)

प्र. 1. इंग्लिश मीडियम स्कूल में अध्ययनरत छात्रों की क्या स्थिति थी? 'जेल की हवा' कहानी के आधार पर उत्तर दीजिए।
प्र. 2. पुलिस द्वारा सभी विद्यार्थियों को जेल में बन्द करने का वास्तविक कारण क्या था?
प्र. 3. कायोत्सर्ग क्यों और कैसे किया जाता है?
प्र. 4. 'ऊँचे काम करो जीवन में' कविता में 'ऊँचे काम' से क्या तात्पर्य है?
प्र. 5. जैनधर्म में अभिवादन करते समय 'जय जिनेन्द्र' क्यों बोला जाता है?
प्र. 6. इस संसार में सुखी रहने का सूत्र क्या है?
प्र. 7. जैनधर्म का सार क्या है?
प्र. 8. 'जय जिनेन्द्र' शब्द हमें क्या प्रेरणा देता है?
प्र. 9. Why called life as a game?
प्र. 10. Write three synonyms of the given words-Afraid, Bitter, Selfcentered and Harbour.

बाल–जिनवाणी [फरवरी–2022] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	अरिन चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	नमन जैन, जरखोदा-बून्दी (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	प्रखर जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	ध्रुव बाँठिया, कोटा (राजस्थान)	36
	काव्य जैन, जोधपुर (राजस्थान)	36
	समकित जैन, कोटा (राजस्थान)	36

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल–जिनवाणी एवं बाल–स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण–(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं। *–सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

7506357533 ✆ : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्जवल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. **We Have Launched Membership Plans For Donors.**

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	**GOLD MEMBER RS.75000**	**PLATINUM MEMBER RS.100000**
DIAMOND MEMBER RS.200000		**KOHINOOR MEMBER RS.500000**

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund **IFSC Code** - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 **PAN No.** - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यो एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची –

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।
श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डरी, चैन्नई (निमाज-राज.)।

DIAMOND MEMBER (RS.200000)

श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बैंगलोर
M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai
श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बैंगलोर

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर
श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगढ़ वाले)।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर
श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.)
श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, राजस्थान
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडू)

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू।
श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर।
श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
श्रीमान सुगनचन्द जी छाजेड़, चौपासनी रोड, जोधपुर।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरूवल्लुवर (तमिलनाडू)।
श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले)
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडू)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-56**

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रेल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अत: इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नांकित सर्वविध उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

(1) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
(2) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
(3) इन्द्र कुमार मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर
(4) श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर
(5) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur
(6) श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी, प्रदीपजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.)
(7) श्री सुरेशचन्दजी इन्द्रचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
(8) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
(9) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
(10) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
(11) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
(12) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
(13) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
(14) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
(15) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
(16) सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

(1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
(2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
(3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, जोधपुर।

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं वित्तीय वर्ष 2022-2023 के लिए स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का हार्दिक स्वागत।

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children

Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | Website: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन